



हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला



अवध किशोर शर्मा

श्री गुरुदेव श्री वासी स्वामी अनन्तानन्द
सरस्वती, श्रीगणेश्वर
राजागुरुमठ वाराणसी
को
सप्रेम भेंट

श्रीगोपी प्रसाद सिंह
आचार्य
हाजीपुर (बेगाली)

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

अवध किशोर शर्मा



अभिधा प्रकाशन

ISBN : 998-93-92342-39-4

प्रथम संस्करण
2022

© सर्वाधिकार
अवध किशोर शर्मा

प्रकाशक
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002
दिल्ली कार्यालय
जी72, गंगा विहार, गोकुलपुरी, दिल्ली- 110094

अक्षर-संयोजन
सतीश कुमार
मो. 9801803366

मुद्रक,
बी० के० ऑफसेट, दिल्ली - 32

मूल्य
250.00 (दो सौ पचास रुपये मात्र)

Harihar Chetra Tirth Abam Mela
By Awadh Kishore Sharma

Rs. 250.00

प्रस्तावना

‘हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला’ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित खबरों का एक ऐसा प्रयोगधर्मा संग्रह है जो इस तथ्य का खुला एलान करता है कि ‘कतरनें’ कभी बासी नहीं होतीं बल्कि इतिहास का एक अध्याय बनकर हमेशा प्रासंगिक बनी रहती हैं।

अबतक यही माना जाता रहा है कि अखबार सुबह में हाथ में आता है और शाम तक बासी पड़ जाता है। फिर उसकी जगह घर का ड्राइंग रूम या रीडिंग टेबल न होकर कोई उपेक्षित कोना या फिर महीने बाद कबाड़ी की दुकान हो जाती है। अलबत्ता, कुछ सक्रिय पुस्तकालयों में उसे सहेज कर रखने की परम्परा भी है। किन्तु, आम पाठकों के घरों में वह दूसरे दिन ही बेकार की वस्तुओं की श्रेणी में आकर महत्वहीन बन जाता है।

यह संग्रह उन सभी पुरानी मान्यताओं के खिलाफ एक ऐसा स्तंभ बनकर खड़ा दिखता है जो यह कहता है कि खबरों के कथ्य-तथ्य बर्फ की तरह पिघलकर बह नहीं जाते बल्कि पत्थर पर उत्कीर्ण शब्दों की तरह अविचल, अडिग होने के साथ-साथ जब देखिए, तब नूतन ही दिखाई पड़ते हैं। पुस्तक के लेखक अवध किशोर शर्मा जी वर्तमान में शिक्षक हैं, लेकिन इसके पूर्व वह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासतों को खबरों का विषय बनानेवाले प्रखर पत्रकार भी रह चुके हैं। उनका वह स्वरूप अब भी उसी प्रखरता और ताजगी के साथ कायम है। कहा भी गया है कि कैरियर की शुरुआत में जो रंग चढ़ जाता है, वह प्रोफेशन बदल जाने के बाद भी हृदय में उसी गहराई के साथ बना रहता है। इस पुस्तक का प्रकाशन कर अवध किशोर शर्मा ने इस सत्य-तथ्य को उद्घाटित किया है।

इस पुस्तक को जब मैं प्रयोगधर्मा कह रहा हूँ तो ऐसा कहने का मेरे पास वाजिब आधार भी है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, बिहार के किसी पत्रकार ने इसके पूर्व अखबारों में छपीं अपनी खबरों को पुस्तक की शक्ल देने की कोशिश नहीं की और अगर की भी तो उसे

अंजाम तक पहुंचाने में वह कामयाब नहीं हुए। पुस्तक में अवध किशोर जी ने अपने जिन खबरों और आलेखों को संकलित किया है, वे काफी अध्ययन और परिश्रम से तैयार किए गए होंगे। कई आलेख तो काफी शोधपूर्ण हैं और उनपर, आगे भी, शोध की पूरी गुंजाईश है। यहां यह कहना मैं जरूरी समझ रहा हूं कि ऐसे शोधपरक आलेखों को तैयार करने में, तथ्यों को साक्ष्य के साथ जुटाने में काफी खर्च भी हुए होंगे जिसे लेखक ने अपनी आवश्यकताओं में कटौती कर पूरा किया होगा और इसमें मीडिया हाउस के किसी भी प्रकार के आर्थिक योगदान की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह एक कड़वी सच्चाई है और कोई भी ईमानदार पत्रकार इसे स्वीकारने में संकोच नहीं करेगा कि अखबारों के प्रबंधन की निगाह में मुफस्सिल के पत्रकार, चाहे वे कितने ही काबिल क्यों न हों, कोई अहमियत नहीं होती। लेकिन, ठीक इसके समानान्तर यह भी बड़ा सच है कि उन्हीं मुफस्सिल पत्रकारों की मेहनत और क्षमता पर मीडिया घरानों की इमारतें लगातार ऊंची होती जा रही हैं। पाठकों तक जो अखबार पहुंचता है और जिन खबरों के साथ पहुंचता है, उसमें लगभग पचास प्रतिशत मुफस्सिल पत्रकारों की खबरें होती हैं।

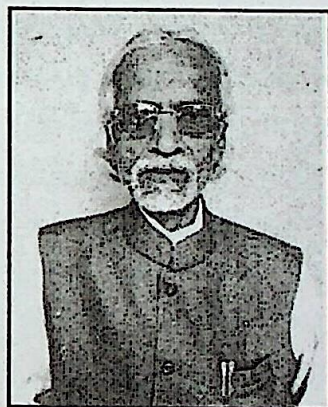
इस पुस्तक में भारत के चार धर्म महाक्षेत्रों में एक, किन्तु सबसे विशिष्ट 'हरिहर क्षेत्र' के तात्त्विक विवेचन के साथ इसकी धार्मिक-आध्यात्मिक पृष्ठभूमि की स्मृति में हर साल लगने वाले विश्व प्रसिद्ध हरिहरक्षेत्र मेले के विभिन्न पक्षों के सारगर्भित एवं रोचक वर्णन धन्य भाव से ध्वनित हैं। पुस्तक के तीसरे खंड 'विविधा' में कई अन्य विषयों को समाहित किया गया है जो उपयोगी तो है ही, ज्ञानवर्धनक भी हैं। पुस्तक में संकलित सभी खबरें 15 से 35 वर्ष पहले की छपी हुई खबरें हैं जो पुस्तक में ढलकर न केवल नवीन हुई हैं बल्कि आगे सैकड़ों वर्षों तक प्रासंगिक भी बनी रहेंगी। हरिहर-क्षेत्र का उल्लेख कई पुराणों और धर्मशास्त्रों में है। कई मिथकों भी इससे जुड़ी हैं। प्राचीन काल में हुए गज-ग्राह युद्ध का यह समापन स्थल भी माना जाता है। आस्था है कि इसी क्षेत्र में नारायणी नदी में यह युद्ध हुआ था। युद्ध में जब गजेन्द्र को लगा कि उसके प्राण नहीं बचेंगे तो उसने कातर स्वर में भगवान को पुकारा और भगवान विष्णु ने प्रकट होकर गजेन्द्र का उद्धार किया था। हालांकि गज-ग्राह का युद्ध हरिहर क्षेत्र में ही हुआ था, इसका कोई ग्रंथीय प्रमाण नहीं, पर भारतीय धर्मपरायण जनमानस आस्था को

4:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

भी किसी तथ्य का बड़ा प्रमाण मानता है। अवध किशोर शर्मा जी ने हरिहरक्षेत्र से जुड़े तथ्यों को अपने कई आलेखों में उपस्थित करने का जो सचेत प्रयास किया है, उसमें आस्था को प्रमाण से सिंचित करने का उद्यम दिखता है और यही लेखक की सबसे बड़ी विशेषता है।

भाषा-शिल्प की दृष्टि से भी यह पुस्तक विशिष्ट मानी जानी चाहिए। अवध जी ने जो कुछ भी लिखना चाहा है और जिस किसी भी तथ्य को जिस रूप में प्रस्तुत करना चाहा है, उसमें उनकी भाषा सहचरी बनकर साथ-साथ रही है। अधिकतर आलेखों की भाषा खनकती-फुदकती हुई है। छोटे-छोटे वाक्यों में सरल-सुबोध शब्दों के पुष्प गूँथे हुए हैं। भाषा और भाव किसी सुलझे हुए दोस्त की तरह एक-दूसरे का साथ निभाते हुए चलते दिखते हैं। यह लेखकीय शिल्प किसी को भी आसानी से प्राप्त नहीं होता। इसके लिए कड़ी मेहनत और निरंतर अभ्यास की जरूरत होती है। अवध किशोर जी इस अर्थ में एक सफल पत्रकार एवं लेखक सिद्ध होते हैं।

और अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि यह पुस्तक पठनीय, संग्रहणीय और हरिहर क्षेत्र के संबंध में सारी जिज्ञासाओं को तृप्त करनेवाली पुस्तक है। हरिहर क्षेत्र का भूगोल, इतिहास, अतीत और वर्तमान तो इसमें व्यक्त हुआ ही है, भविष्य में विकास की सारी संभावनाओं के द्वार तक पहुंचने की राह भी यह पुस्तक तैयार करती है। इसके लिए लेखक साधुवाद के पात्र हैं।



—सुरेन्द्र मानपुरी
जर्नलिस्ट, 'हिन्दुस्तान'
मो. : 9835635480



आत्मकथ्य

समर्पण

‘आत्मकथ्य’ स्वयं एक रहस्यमय शब्द है, आत्मा की तरह। जब कभी आत्मकथ्य लिखने की बात मेरी मति में आती है तो स्वाभाविक रूप से असहमत हो जाता हूँ। आत्मकथ्य सागर सदृश है और मेरी शब्द सागर सीमा सीमित। क्या लिखूँ, क्या न लिखूँ। कहाँ से शुरू और कहाँ समाप्त। आत्मकथ्य की सीमाएं अनन्त हैं। पर, पुस्तक की लेखकीय परम्परा का निर्वहन भी आवश्यक है। मेरी यह प्रथम पुस्तक है जिसमें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपे मेरे चुनिंदा आलेखों, समाचार कतरनों का संग्रह शामिल है। पुस्तक के शीर्षक ‘हरिहरक्षेत्र तीर्थ व मेला’ के अनुरूप ही विषय भी है। ‘विविधा’ नामक तीसरे भाग की विषयवस्तु थोड़ी अलग हटकर है जिसमें आसपास की विविधता की झलक मिलती है। कुछ मुझसे जुड़े प्रसंग भी हैं जिसे पुस्तक में शामिल करने का लोभ संवरण नहीं कर सका। क्योंकि मेरे जीवन संघर्ष की राह में जिन अपनों का साथ मिला—उन्हें विस्मृत कर आगे नहीं बढ़ सकता था। बचपन से अबतक जिनका मुझपर ऋण भार है उसमें सर्वप्रथम मेरी माताजी स्व. तिलेश्वरी देवी और स्व. दादी अनूप देवी हैं। बचपन में इन दोनों देवी विभूतियों से मुझे धार्मिक-आध्यात्मिक दृष्टि मिली। पिताजी स्व. ब्रह्मदव सिंह, स्वतंत्रता सेनानी एवं किसान सत्याग्रही ने ही अंधविश्वासों से मुक्ति का मंत्र एवं अनुशासन का पाठ पढ़ाया। कर्मयोग का पथ भी दिखाया, वहीं नम्र, उदार, परोपकारी रहने, कठिन से कठिन परिस्थितियों में धैर्य और संयम नहीं खोने, गलत को गलत और सही को सही कहने की सीख। पितृतुल्य बड़े भाई ब्रज किशोर शर्मा स्वतंत्रजीवी पुरुष रहे हैं। सच कहूँ तो बचपन में सबसे ज्यादा मैं

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 7

किसी के साथ घुलमिल कर रहा तो वे मेरे बड़े भैया ही थे। मेरी सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा की जड़ में अगर कोई है और रहा है तो बड़े भाई ब्रजकिशोर शर्मा ही। स्वभावतः उनके कुछ विशिष्ट गुण स्वतंत्रजीवी, सहनशीलता, समरस समाज का भाव, छुआछूत, जाति-पाति जैसी कुरीतियों से मुक्ति बोध स्वतः मेरे भीतर आ गया। मैंझले भाई स्व. नवल किशोर सिंह मूलतः एक किसान थे और खेतों में उनके साथ रहकर कृषि क्षेत्र का ज्ञान अर्जित किया। वे बड़े भावुक किस्म के व्यक्ति थे और जल्दी किसी पर भी विश्वास कर लेते थे। भावुक प्रवृत्ति का यह गुण मुझमें भी व्याप्त है। घर के नन्हें सदस्यों का ख्याल रखने में वे माहिर थे। मेरी मौसी सीता देवी स्व. चाचा इन्द्रदेव सिंह की विधवा हैं। माता की तरह बचपन से आज तक मेरा ख्याल रखती आ रही हैं। बड़ी बहनों सूर्यमणिका देवी, पटना, सावित्री देवी सुल्तानपुर (सारण), प्रभावती देवी उर्फ जागेश्वरी देवी एवं उमरावती देवी शीतलपुर (सारण) चन्द्रावती देवी उर्फ चंदा पताढ़ (वैशाली) एवं मनोरमा, दिल्ली का मार्गदर्शन व आशीर्वाद सदा संग रहा।

सब कुछ हुआ पर उन्हें कैसे विस्मृत कर दूँ जिन्होंने वर्तमान दौर में हर कदम पर साथ दिया। अखबारी कतरनों को सुरक्षित रखने, खोजने एवं उसे सुसज्जित करने में मेरी मदद की। इसके लिए मैं अपनी सहधर्मिणी मालती शर्मा, पुत्र पांडेय सनातन शर्मा, पुत्रवधू प्रीतिका (प्रीति) शर्मा एवं पुत्रियों इला सोनी, मीनाक्षी एवं कात्यायनी का बहुत-बहुत आभार। पाठकों से भी निवेदन है कि प्रकाशित पुस्तक में जो कुछ भी सामग्री है वह अतीत का दर्पण है। उसमें नवीन रंग भर कर आगे बढ़ने की जरूरत है। और अंत में उन्हें जिन्होंने सदैव मुझे छोटे भाई की तरह समाज में स्थान दिया वरिष्ठ पत्रकार सुरेन्द्र मानपुरी जी का विशेष आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनके प्रयास से यह पुस्तक बहुत ही अल्प अवधि में प्रकाशित हो सकी।



8:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

मेरा विद्यालय, मेरी भूमिका

अल्पज्ञ होते हुए मुझे अकिंचन पर देवी सरस्वती की बड़ी कृपा रही है। पिछले तीन दशकों से भी अधिक समय से विभिन्न विद्या मंदिरों में आश्रय मिला। वर्तमान में एक दशक से गोपालगंज जिले में हूँ। इस जिले का एक प्रखंड और अनुमंडल है—हथुआ। इसी प्रखंड के पंचायत फतेहपुर का एक गाँव है सतई। इसी गाँव के पूर्वी छोर पर राजकीय उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, सतई अवस्थित है। यह कुचायकोट-मैरवा रोड में बड़का गाँव एवं पेउली बाजारों के बीच में पड़ता है। वर्ष 2012 के 11 फरवरी को इस विद्यालय में सहायक शिक्षक के रूप में मेरा योगदान हुआ। विद्यालय के प्रधानाध्यापक के कक्ष में पहुँचने पर प्रथम साक्षात्कार प्रधानाध्यापक गिरीश सिंह से हुआ। विद्यालय में उन्होंने योगदान करवाया। मेरे साथ पड़ोस के रिश्ते के भाई नागेन्द्र शर्मा भी थे।

प्रधानाध्यापक गिरीश सिंह कुसौंधी बाजार के निकट सिहोरवा ग्राम के निवासी थे। आरंभ में कुछ दिनों तक उनके यहाँ रहना पड़ा था। उन्होंने सोनपुर में ही टीचर्स ट्रेनिंग की थी। जब मुझे विद्यालय के शिक्षक रुपेश कुमार राय की कोशिश से बड़कागाँव बाजार में परमानन्द वर्मा के मकान में भाड़ा पर एक कमरा मिल गया तो यहीं पर आकर रहने लगा।

वर्ष, 2012 में प्रधानाध्यापक गिरीश सिंह के आकस्मिक निधन के उपरांत 3 जुलाई, 2012 को मुझे विद्यालय का प्रभार मिला। प्रभार दिलाने के लिए स्वयं तत्कालीन प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी जितेन्द्र कुमार

सिंह, कन्या मध्य विद्यालय, हथुआ के वरीय शिक्षक जय प्रकाश राय वगैरह साथ आए थे। उन्हीं के समक्ष आलमारी का ताला खोला गया और मुझे प्रभार सौंपा गया। मुझसे वरीय शिक्षक कैलास पाठक एवं राकेश तिवारी ने लिखित रूप से प्रभार लेने से मना कर दिया था। अंततः मुझे प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी के आग्रह पर प्रभार लेना पड़ा। करीब एक वर्ष प्रभार में रहा। इस दौरान स्व. गिरीश सिंह के अधूरे छोड़े गए कई कार्यों को पूर्ण किया। प्रवेश द्वार सड़क को जल जमाव से मुक्त किया। विद्यालय परिसर में उच्च विद्यालय के भवन निर्माण के लिए सरकारी टीम ने भू-शोधन किया।

वर्ष 2013-14 सत्र से कक्षा 9वीं की पढ़ाई का शुभारंभ करने के लिए मुझे अथक प्रयास करना पड़ा। बहुत कठिन दौर था। विद्यालय के आठवीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र-छात्राएं एवं उनके अभिभावक नहीं चाह रहे थे कि उनके बच्चे इसी विद्यालय में नामांकन कराएं। वजह थी उच्च कक्षा में पढ़ाने वाले शिक्षकों की कमी। अभी तक सरकार की ओर से एक भी माध्यमिक शिक्षक की बहाली नहीं हुई थी। अभिभावकों की ओर से विद्यालय स्थानांतरण प्रमाण पत्र देने का मुझ पर दबाव बनाया गया। कई अभिभावकों का गुस्सा भी झेला पर मैं उनके समक्ष झुका नहीं। सतई विद्यालय के बच्चों का कुसौन्धी सहित आसपास के विभिन्न उच्च विद्यालयों में नामांकन नहीं हो उसके लिए प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी से मिलकर व्यवस्था करवाई। बीआरसी हथुआ से आदेश निकलवाकर नामांकन पर प्रतिबंध लगवाया।

अभिभावकों को भरोसा दिया कि उनके बच्चों की पढ़ाई बाधित नहीं होगी। इस तरह कक्षा-9 में अपने ही विद्यालय के 78 छात्र-छात्राओं का नामांकन कर पाने की उपलब्धि हासिल की जो उस समय की परिस्थिति के अनुसार पर्याप्त थी। इस तरह उच्च विद्यालय की विधिवत पढ़ाई का शुभारंभ मेरे अथक परिश्रम से हुआ और यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि मुझे उत्कर्मित माध्यमिक विद्यालय, सतई का प्रथम प्रभारी प्रधानाध्यापक होने का गौरव प्राप्त हुआ। अब कक्षा 9 में पढ़ाई के लिए शिक्षकों की जरूरत थी। उसकी पूर्ति कहाँ से और कैसे हो—यह यक्ष प्रश्न मेरे सामने खड़ा था। सर्वप्रथम अपने ही

10:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

विद्यालय के शिक्षकों पर दृष्टि डाली। मध्य विद्यालय की ऊपरी कक्षाओं में गणित और विज्ञान पढ़ाने वाले अपने सहयोगी शिक्षक बुद्धराम प्रसाद जी का चयन किया। वे पढ़ाने में सक्षम थे। मैं हिंदी, इतिहास, समाजिक विज्ञान पढ़ा सकता था। रही संस्कृत और अंग्रेजी विषय की बात तो बड़कागांव के निवासी दीनानाथ पाठक जी ने पढ़ाना स्वीकार किया। कई बार उन्होंने मुझसे कहा भी था—पढ़ाई शुरू होगी तो सहयोग करेंगे। इस तरह शुरू हुई कक्षा 9 की सुचारु पढ़ाई। सरिता राय, शिक्षिका का भी सभी सहयोग मिला। 6 अक्टूबर, 2012 को मेरे नेतृत्व में कक्षा 8 की छात्र-छात्राओं का दल बस से मुख्यमंत्री शैक्षणिक परिभ्रमण (बिहार दर्शन) के लिए संजय गांधी जैविक उद्यान, पटना भी गया था जिसमें वरीय शिक्षक कैलास पाठक, रूपेश कुमार राय, नीलम कुमारी, संगीता सिंह, संकुल समन्वयक रामबाबू साह, सुनील सिंह इत्यादि शामिल थे। स्नातक प्रशिक्षित वरीय शिक्षक जितेन्द्र महतो जी ने विद्यालय में योगदान किया। कुछ दिनों के उपरांत 18 जून, 2013 को विद्यालय का सम्पूर्ण प्रभार उन्हें सौंप दिया। इस तरह प्रधानाध्यापक के दायित्व से मुझे मुक्ति मिली।

प्रधानाध्यापक के कार्यक्रम के उपरांत भी मुझे अपने विद्यालय के वरीय शिक्षक राकेश तिवारी, बुद्धराम प्रसाद, रूपेश कुमार राय, सत्यपाल कुमार कुशवाहा, अशोक कुमार, प्रदीप कुमार, शुभावती देवी, सरिता राय, नीलम कुमारी, नुरैशा खातून, संगीता सिंह के साथ-साथ माध्यमिक शिक्षक भूपेन्द्र राय, अमित कुमार पाठक, महावीर राय, चंडीचरण प्रसाद, शशिभूषण भारती और जयकांत गुप्ता, अरविंद राय (रात्रि प्रहरी) आदि का मानसिक एवं नैतिक सहयोग मुझे मिला रहा जिसके लिए मैं उनका आभारी रहूंगा।





श्रमजीवी पत्रकार यूनियन : एक अविस्मरणीय संस्मरण

बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन की वैशाली जिला शखा की 23 अगस्त, 2004 को वैशाली होटल सभागार में आयोजित वार्षिक आमसभा में सत्र 2004-05 के लिए मुझे महासचिव पद के चुनाव के लिए मतदान प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ा था। कारण यह था कि मेरे प्रतिद्वंद्वी के रूप में कौमी तंजीम के पत्रकार मो. एस.एच. इमरान थे। पूरे चुनाव प्रक्रिया के दौरान यूनियन के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष ब्रज किशोर सिंह, कोषाध्यक्ष श्याम किशोर मिश्र एवं गंगा सागर राय पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित रहे। अध्यक्ष पद के एक मात्र उम्मीदवार शुकदेव आजाद निर्विरोध चुने जा चुके थे। मत विभाजन में अवध किशोर शर्मा को 17 तथा एच.एच. इमरान को 9 मत प्राप्त हुए। मो. एच.एच. इमरान 8 मतों के अंतर से पराजित हुए और मुझे महासचिव पद पर निर्वाचित घोषित किया गया।

आमसभा की अध्यक्षता तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. पारसनाथ सिंह ने की जबकि संचालन तत्कालीन महासचिव मोहन कुमार सुधांशु ने किया था। इसी मौके पर जिला कार्यसमिति का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष शुकदेव आजाद, उपाध्यक्ष चंद्रभूषण सिंह शशि, 'आज', रविशंकर शुक्ल, अवध किशोर शर्मा, सचिव मो. एस.एच. इमरान, अमिताभ कुमार सिंह, हाजीपुर, राजेश कुमार ठाकुर 'टाईम्स ऑफ इंडिया' एवं कार्य समिति सदस्यों के रूप में तीर्थनाथ सिंह, रविशंकर, आलोक प्रताप सभी हाजीपुर, मोहन कुमार सुधांशु, केदार नाथ सिंह, गोरौल, डॉ. निर्मल कुमार चक्रवर्ती, रमण कुमार शुक्ला, लालगंज, दिनेश्वर साह, महनार, सुधाकर प्रसाद सिंह, भगवानपुर, अशरफ अली, महुआ, अरविन्द विप्लवी, देसरी शामिल किए गए। सभी अखबारों ने अपने पन्नों पर समाचार को स्थान दिया। मुझे याद है जब मैं महासचिव पद के लिए चुनाव लड़ने का मन बनाया तो व्यापक समर्थन मिला। दैनिक जागरण के ब्यूरो चीफ रविशंकर शुक्ला, इसी अखबार के डॉ. निर्मल कुमार

चक्रवर्ती, अरविन्द विप्लवी, 'हिन्दुस्तान' के वरिष्ठ पत्रकार सुरेन्द्र मानपुरी, इसी अखबार के रमण शुक्ला, मोहन कुमार सुधांशु, सुधाकर प्रसाद सिंह, यूएनआई, आज के वरिष्ठ पत्रकार रवि शंकर जी जिन्हें राजा भैयाभी कहते हैं, ने अपने-अपने ढंग से मुझे बड़ो मदद की। तब जाकर मुझे जीत नसीब हुई। अब संगठन को क्रियाशील करने की बारी थी। इसमें जिले के सभी पत्रकारों का मुझे व्यापक सहयोग मिलता रहा। सबसे खासियत बात यह कही जा सकती है कि दूरदराज के पत्रकारों को यूनियन से जोड़ने और उनकी सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए मुख्यालय के अलावा लालगंज, महुआ सहित विभिन्न प्रखण्ड मुख्यालयों में भी मासिक बैठकों का आयोजन किया गया। मुख्यालय हाजीपुर में विभिन्न मांगों को लेकर धरना, प्रदर्शन का दौर भी चला। पत्रकारों के उत्पीड़न, उनके साथ दुर्व्यवहार इत्यादि के लिए भी आवाज बुलंद की गई। इसकी बड़ी लंबी फेहरिस्त है। अंततः 5 नवम्बर, 2007 को यूनियन का समाहरणालय पर धरना के अवसर पर अपने महासचिव पद से त्यागपत्र दे दिया। यूनियन के अगला चुनाव होने तक इसी धरना स्थल पर वरिष्ठ पत्रकार रविशंकर को महासचिव पद का प्रभार सौंपा गया। इस तरह चुनाव नहीं होने के कारण लंबी अवधि तक महासचिव पद का अपनी बेहतर क्षमता से दायित्व निभाया।

अंत में हरिहरक्षेत्र सोनपुर एवं राज्य के पत्रकारों के नैतिक सहयोग और समर्थन को मैं कभी भुला नहीं पाऊंगा। उनमें 'जी-न्यूज' बिहार-झारखंड के हेड स्वयं प्रकाश, 'आज' हिन्दी दैनिक के स्थानीय संपादक दीपक पाण्डेय एवं उनके तकनीकी सहयोगी सुनील कुमार यादव, 'दैनिक जागरण' के पत्रकार शंकर सिंह, 'आज' के विश्वनाथ सिंह, अधिवक्ता, 'प्रभात खबर' के छपरा संस्करण के ब्यूरो चीफ ठाकुर संग्राम सिंह, इसी अखबार के हाजीपुर संस्करण के ब्यूरो चीफ गंगेश गुंजन, पत्रकार एवं अधिवक्ता अभय कुमार सिंह और 'दैनिक भास्कर' के पटना कार्यालय के वरीय पत्रकार मधुरेश, सोनपुर के संवाददाता विपिन कुमार सिंह, छायाकार मनीष कुमार का नाम उल्लेखनीय है। 'जनशक्ति' के पत्रकार तीर्थनाथ सिंह और 'आज' के संवाददाता अशोक कुमार सिंह अब हमारे बीच नहीं रहे लेकिन जबतक जीवित थे, उनका सहयोग मुझे मिलता रहा। इन दोनों के प्रति मैं हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।



14:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

विषय-सूची

हरिहरक्षेत्र का तात्विक विवेचन	19-104
1. उत्तर भारत का तिरूपति सोनपुर का 'देव स्थानम्'	21
2. शक्ति आराधकों का पावन तीर्थ 'आमी स्थान'	24
3. विभिन्न सम्प्रदायों की साधना स्थली	28
4. श्रीहरि के चक्र के निपतित स्थल हरिहर क्षेत्र	30
5. हरिहर क्षेत्र में हरिहरनाथ हैं	34
6. हरि और हर के मिलन की आध्यात्मिक भूमि	37
7. सोनपुर के समीप था जड़भरत मुनि का आश्रम	40
8. मनाईन माई की होती है यहां जय-जयकार	42
9. उमा-महेश्वर मंदिर शैवों, वैष्णवों एवं शाक्तों की संयुक्त साधना-स्थली	44
10. हरिहर क्षेत्र की महिमा अपरम्पार	48
11. हरिहर क्षेत्र की महिमा प्रयागराज से कम नहीं	52
12. यहीं रावण ने पर्वत को छेदा	55
13. कांवरियों ने लगायी दक्षिणी वाहिनी गंगा में डुबकी	57
14. स्वर लहरियों के बीच गुजर गई रात	58
15. हरिहर क्षेत्र में पुरातात्विक खजाना, खुदाई के प्रति सरकार उदासीन	60
16. बाबा राम लखन दास	64
17. संत रामलखन दास की पुण्यतिथि पर आयी कलाकारों की याद	67
18. पुरातत्ववेत्ताओं की नजरों से ओझल कालरात्रि स्थान	69
19. कैतुकालच्छी ज्योतिखा क्या बौद्धकाल की	

ज्योति-शिखा है	72
20. श्री राम के जनकपुरी राह में संझा गांव में संध्योपासना की थी	74
21. ढांचा गिरने के बाद मंदिर निर्माण का सपना पूरा होते न देख सके	76
22. साधना स्थली के रूप में भी विख्यात है हरिहर क्षेत्र	79
23. नाथ सम्प्रदाय की सिद्ध भूमि है हरिहर क्षेत्र	86
24. मठ-मन्दिरों में झलकता इतिहास	88
25. हरिहरनाथ मंदिर के अस्तित्व पर संकट	91
26. कृष्ण के विराट व्यक्तित्व में छिपा था राष्ट्र की सुरक्षा की चिंता	94
27. श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान का प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव	100
हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला	105-156
1. सोनपुर मेले में हुई थी किसान सभा की स्थापना	107
2. '१८७ वर्ष पूर्व राजा व नवाबों ने डाला था थेरा'	109
3. सनातन धर्मसभा सम्मेलन का गवाह है मेला	111
4. हिंदी के प्रचार-प्रसार का केन्द्र रहा है मेला	113
5. मेला में पड़ी थी बिहार को बंगाल से अलग करने की नींव	115
6. विभिन्न संस्कृतियों का संगम बना हरिहर क्षेत्र मेला	117
7. कवियों व शायरों की रचनाओं में भी जीवंत है मेला	120
8. सोनपुर मेले में 'जट-जटिन' की प्रस्तुति	122
9. पूरबी व छऊ नृत्य ने मचाया मेले में धमाल	124
10. मेले में बंट रहा रामनाम का प्रसाद	126
11. सोनपुर मेला में बिक रहे अठारहों पुराण व वेद	128
12. सिन्दुर की दमक से चमक रहा मेला	130
16:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला	

13. पुरातात्विक दृष्टि से समृद्ध हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला	132
14. पैरों में घुंघरू बंधते ही फिल्मी गीतों के धुन पर थिरक उठती है 'बिजली रानी'	135
15. विदेशी मुल्कों के 64 सैलानियों ने लुत्फ उठाया सोनपुर मेला का	137
16. निराली है मेले की आध्यात्मिक दुनिया	139
17. आध्यात्मिक सांस्कृतिक ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व है सोनपुर मेला का	141
18. यज्ञ से ही मानव जीवन का प्रारंभ : लक्ष्मणाचार्य	143
19. वर्षों पुरानी धर्मशाला जर्जर ऋषि च्यवन कुंड भी उपेक्षित	144
20. पशु-पक्षियों का अद्वितीय मेला	146
21. दोहरे भिड़ंत के बाद भगत सिंह ने हरिहर क्षेत्र केसरी का खिताब जीता	150
22. हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला एक धार्मिक विरासत	152

विविधा 157-199

1. शर्म नहीं सरकार को	159
2. वाल्मीकि रामायण में भी है वैशाली का वर्णन	162
3. कलात्मक दृष्टि से विलक्षण है नेपाली छावनी शिव मंदिर	164
4. वैशाली के अभिषेक पुष्करिणी का रहा है विस्मयकारी इतिहास	166
5. अमन का संदेश देता वैशाली का स्तूप	168
6. महात्मा गांधी ने रेलवे ओवरब्रिज पर ही की थी सभा	171
7. एक जिद व जुनून खींच लाया बापू को	173
8. बिहार का अद्वितीय पर्व सूर्य षष्ठी व्रत	175
9. लोकमाता सप्तमातृ के सात स्वरूप	178
10. गंगा-गंडक संगम तीर्थ की महिमा अपरम्पार	183

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 17

11. आगम ग्रंथों में मिलता है दिव्यदेशों के निर्माण का वर्णन	185
12. सप्त धर्म क्षेत्रों में एक है हरिहरक्षेत्र	188
13. साक्षात्कार : रामजन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष रामचन्द्र दास से	192
14. थावे में विराज रहीं कामख्या का सिंहासिनी स्वरूप	197



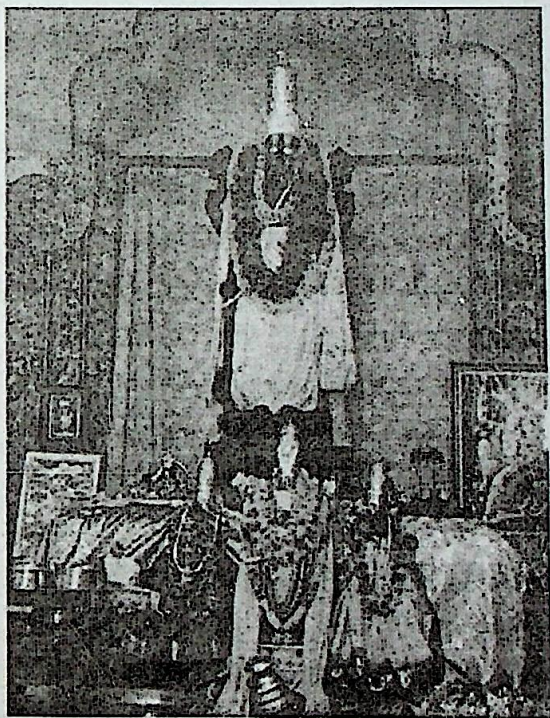
18:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

हरिहरक्षेत्र का तात्त्विक विवेचन



उत्तर भारत का तिरूपति सोनपुर का 'देवस्थानम्'

भगवान के अवतार स्थलों तथा संनिधान स्थलों को दिव्यदेश के नाम से संबोधित किया जाता है। दिव्य देशों की गणना नित्यविभूति से आरम्भ होती है और उन स्थानों तक पहुँचती है जहाँ भगवान के दिव्य अर्चा विग्रह विराजमान हों। आलवार के संतों की दिव्य सूक्तियों के अनुशीलन करने पर 108 दिव्यदेशों की चर्चा मिलती है। वैसे दिव्यदेशों की संख्या अत्यधिक हो सकती है, और है भी। साधना के द्वारा साधक कहीं भी दिव्यदेश का अनुभव कर सकता है। श्री सम्प्रदाय के प्रणेता आलवार संत श्रीमद विष्वक्सेनाचार्य त्रिदण्डी स्वामी के मंगलानुशासन में जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी लक्ष्मणाचार्य द्वारा हरिहर क्षेत्र सोनपुर में गजेन्द्र



भगवान श्री गजेन्द्र मोक्ष श्रीबालाजी वेंकटेश

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 21

मोक्ष देवस्थानम् दिव्यदेश का निर्माण सम्पन्न हुआ है। श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान की पावन प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव तथा श्री लक्ष्मीनारायण यज्ञ भी इसी वर्ष सम्पादित हुआ। श्री कांची प्रतिवादी भयंकर मठाधीश 1008 श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री शिवनिवासाचार्य (गादी स्वामी) ने भी दिव्य देश स्थापना समारोह में शिरकत की। इससे सोनपुर की धार्मिकता और ऐतिहासिकता में और इजाफा हुआ है। मंदिर के मामले में यह इलाका अब उत्तर भारत का तिरूपति बन गया है। भौतिक दृष्टि से सोनपुर स्थित गजेन्द्र मोक्ष देवस्थानम् दो भागों में विभाजित किया गया है। एक प्रासाद, दूसरा विमान। भूमि से छत पर्यन्त भाग को प्रासाद और उसके ऊपरी भाग को विमान कहते हैं। इस प्रकार यहां निर्मित दिव्यदेश क्रमशः उपपीठ, उसके ऊपर अधिष्ठान फिर उपानह, पाद, प्रस्तर, ग्रीवा तब सबसे ऊपर शिखर है। यह एक तल दिव्यदेश का वर्णन है, जो यहां पर फिलहाल है। जैसे-जैसे तलों की संख्या बढ़ेगी, वैसे ही इन अंगों में भी वृद्धि हो जायेगी। ग्यारह तल तक इसमें वृद्धि हो सकती है। प्रासाद के भीतर केन्द्र में गर्भ है, उसके आगे अर्धमंडप तथा मंडप बना हुआ है। पूरब दिशा में पाकशाला, यज्ञशाला तथा संग्रहालय आदि स्थान हैं।

इस दिव्यदेश निर्माण में ब्रह्माण्ड कल्पना की गयी है तथा इसके केन्द्र में बैकुण्ठलोक की। देवस्थानम् का राजगोपुरम् दर्शकों को रोमांचित करता है। उत्तराभिमुख राजगोपुरम् से अन्दर प्रवेश करने पर प्रथम दृष्टि गगनचुम्बी गरूड़ स्तम्भ पर पड़ती है। स्वर्ण गरूड़ स्तम्भ पर नजर पड़ते ही मन प्रसन्न हो उठता है। इससे पूर्व बलि पीठ भी आकर्षण में दर्शकों को बांधे रखता है। स्थान की बायीं ओर से प्रशस्त जगमोहन पर चढ़ने की सीढ़ी है, जिसके साथ दोनों गजमूर्तियां सुशोभित हैं। श्री गजेन्द्र भगवान श्री बालाजी वेंकटेश, श्री श्री श्री भूदेव चक्र आल्वार के ठीक सामने जगमोहन में ही प्रभु के सामने बद्धांजलि मुद्रा में स्थित गरूड़देव के दर्शन होते हैं। श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान के जय-विजय नामक दो पार्षदों की प्रतिमाएं काले पत्थर से बनीं यहां दृष्टिगोचर होती हैं।

श्री गजेन्द्रमोक्ष भगवान सन्निधि दक्षिणपार्श्व में श्री बैकुण्ठवल्ली लक्ष्मीजी की सन्निधि है, जिसमें श्री देवी एवं भू देवी का एक विग्रह

22:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

स्थापित है। श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान के वामपार्श्व की सन्निधि में भगवान रामानुजाचार्य, वरवरमुनी, शठकोपस्वामी एवं विष्णुचित्त स्वामी का भव्य स्वर्णिम विग्रह स्थापित है। उत्सव विग्रह के रूप में भगवान की अतिमोहनी प्रतिमा है। आरती के साथ भगवान को शिविकारूढ़ कराकर किया जाता है। श्री गजेन्द्र मोक्ष देवस्थल सम्पूर्ण भारत में बस यहीं है। देवस्थानम् की उत्तर भारत के तिरूपति के रूप में ख्याति बढ़ रही है। दक्षिण भारतीय लोग तो बेहद आकृष्ट हो रहे हैं।

—‘आज’, सोमवार, 19 जुलाई, 1999



शक्ति आराधकों का पावन तीर्थ 'आमी स्थान'

सारण (सारंगारण्य) की पावन भूमि आरंभ से ही शक्ति-आराधना की साधनास्थली रही है। इस इलाके में एक से बढ़कर एक शक्ति पीठ या तीर्थ हैं। इनमें अंबिका स्थान (आमी), काली स्थान (सोनपुर), हरौली की बूढ़ी माई, कालरात्रि स्थान (डुमरी बुजुर्ग) तथा दिघवारा बुजुर्ग ग्राम में नकटी देवी (महिषासुर मर्दिनी) आदि स्थानों की महिमा तो अपरम्पार है। मां पार्वती के पिता दक्ष प्रजापति का यज्ञ, पार्वती का यज्ञ कुंड में सती होना और भगवान शंकर के तांडव नृत्य के स्थान को लेकर आज भी कनखल (हरिद्वार) और अंबिका स्थान (आमी) के बीच धार्मिक भ्रम या विवाद की स्थिति बनी हुई है। चूंकि इन दोनों जगहों के बारे में एक साथ माना जाता कि यह सब (यज्ञ, सती, तांडव) वहीं हुआ था। यह भ्रम बहस का विषय हो सकता है, लेकिन इसने श्रद्धालुओं की भक्ति और मां की महिमा पर कोई असर नहीं डाला है। यहां सबकी मनोकामना पूर्ण होती है।

अंबिका स्थान सोनपुर-छपरा रेल खण्ड के दिघवारा स्टेशन से महज पांच किलोमीटर पश्चिम बाईं तरफ गंगा नदी के उत्तरी तट पर आमी नामक ग्राम में स्थित है। मां अंबिका महामयी देवी के नाम से भी लोक विख्यात हैं। जिस स्थान पर मां अंबिका का मन्दिर अवस्थित है, वह एक ऊंचा गढ़ या डीह है। इस मन्दिर के अन्दर एक वृहत्ताकार मिट्टी की पिण्डी स्थापित है। यही मां अंबिका है। शारदीय एवं बासन्ती नवरात्रों में उपासना एवं अनुष्ठान हेतु भक्तों का यहां तांता लगा रहता है। वैष्णव, शैव, शाक्त, गाणपत्य हों या सिक्ख भक्त—यहां आकर माता

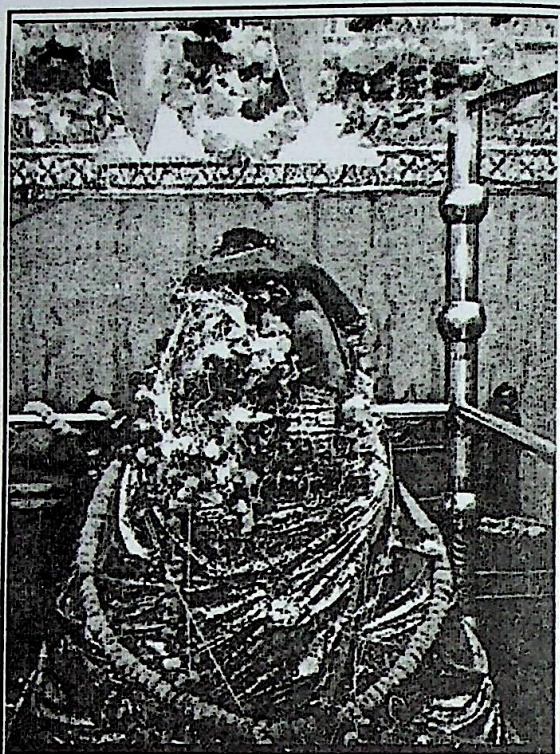
24:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

के दरबार में शीश नवाते हैं। इस दौरान यहां मेला भी लगता है। श्री दुर्गासप्तशती के पाठ का यहां बड़ा महात्म्य है।

बिहार की नदियों के अनुसंधानक स्वर्गीय हवलदार त्रिपाठी सुहृद ने अपनी पुस्तक 'बिहार की नदियां, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सर्वेक्षण (गंगा)' में इस शक्तिपीठ के सन्दर्भ में लिखा है कि यहां का भवानी मंदिर एक प्राचीन मंदिर है और इस मंदिर में अधिष्ठित देवी की बड़ी प्रतिष्ठा है। प्रसिद्ध दंतकथाओं के आधार पर श्री सुहृद ने लिखा है कि दक्ष प्रजापति का यज्ञ यहां हुआ था और सती ने यहीं यज्ञ कुंड में कूदकर अपनी आहुति दी थी। इसके पश्चात राजा सुरथ ने अपनी राजधानी यहां स्थापित की थी। किंतु इन बातों का पौराणिक अथवा ऐतिहासिक प्रमाण कुछ भी नहीं है। फिर भी जिस विस्तृत ऊंचे स्थान पर देवी का मन्दिर है, वह कोई निश्चित ही बहुत प्राचीन स्थान है और किसी बौद्ध-चैत्य का भग्नावशेष है। क्योंकि अब भी यहां मौर्यकालीन ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। शुंगकालीन मिट्टी के खिलौने और मिट्टी के तत्कालीन बर्तन भी प्राप्त हुए हैं। आज भी यदा-कदा ऐसी प्राचीन वस्तुएं यहां प्राप्त हो जाती हैं। यहां चैत शुक्ल रामनवमी को बहुत बड़ा मेला लगता है और देवी-भक्त, विंध्याचल की तरह, दुर्गास्तोत्र का पाठ करने एकत्र होते हैं। दक्ष संबंधी इन्हीं दंत कथाओं को कल्याण के शक्ति विशेषांक (1934) ने भी वर्णन किया है। मां भवानी ने यहीं राजा सुरथ को दर्शन दिया था। पुरातत्त्वविदों ने अम्बिका स्थान की मिट्टी की पिण्डी को प्रागैतिहासिक काल की बताया है। यहां गंगा शिव रूप में लिंगाकार हैं। इस शक्ति मंदिर में एक खास विशेषता यह है कि मिट्टी की पिण्डी के पास एक छोटी छिद्र है, जिसमें एक हाथ गहराई में पानी भरा है। पीछे बगीचे में स्थित कुएं से एक भारी चक्की ठीक वैसी ही निकली है, जैसा कि डुमरी बुजुर्ग स्थित कालरात्रि स्थान (सारण गढ़) की खुदाई में निकली थी। यह ग्रामीण रामसहाय सिंह जी के पास है। इन चक्कियों को तीन-चार व्यक्ति मिलकर ही चला सकते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार अम्बिका स्थान का मन्दिर चतुष्कोण और त्रिकोण शिवलिंग पर स्थित है तथा इस मन्दिर से समान दूरी पर उत्तर में सिल्हौड़ी, दक्षिण में बिहटा, पूरब में बाबा हरिहरनाथ और पश्चिम में

छपरा (धर्मनाथ जी मनोकामना जी) का मंदिर अवस्थित है।

सोनपुर के प्रसिद्ध कालीघाट पर अग्निगर्भा गंडकी नदी के पावन तट पर स्थित काली मन्दिर में प्रतिष्ठित माता काली की प्रतिमा की खास विशेषता यह है कि यहां महाकाल शवरूप धारण करके महाशक्ति के चरणतल में निपतित है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने इस मंदिर की प्राचीनता और महिमा का खूब बखान किया है।



अम्बिका भवानी, आमी, दिघवारा

असुर संहारिणी माता कालिका का प्रलय की छाती पर महाविकराल ताण्डव और रौद्र रूप का साक्षात दर्शन यहां किया जा सकता है। काली, दुर्गा और शक्ति इन्हीं का नाम है। 'विनाशाय च दुष्कृताम' ही इनका महान व्रत है। सृष्टि के पूर्व केवल काली थी और प्रलय के अनन्तर सिर्फ वहीं रह जाती हैं। काली ने नरमुण्डों की माला धारण कर रखी हैं। उनकी लाल-लाल जीभ असुरों के रक्त से तरबतर है। चतुर्भुजी काली के दाहिने दो हाथों में सबसे ऊपरवाले में रक्तरंजित खड्ग है और नीचे असुरों का कटा मुण्ड। बायां हाथ अभयदान एवं वर-मुद्रा में हैं। इनकी दोनों लाल-लाल आंखों से चिनगारियां बरस रही हैं। यहां काली दक्षिणामुखी हैं।

उनके कानों में शव मुण्डों के कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं। यह इस स्थान के वाममार्गी साधकों का साधना केन्द्र होने की गवाही देता

26:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

है।

काली मूर्ति के समक्ष ही दक्षिण शिवलिंग अवस्थित है। इससे शिव एवं शक्ति के बीच अभिन्नता प्रकट होती है। मंदिर के दक्षिण, उत्तर एवं पूरब श्मशान है, जिससे उन्हें श्मशानवासिनी कहा गया है। इस मन्दिर का निर्माण काली-तंत्र साधकों की घोर साधना का नतीजा है। यहां मातृभाव से महामाया काली की उपासना करने वाला प्राणी अपने सभी कष्टों का निवारण कर लेने में समर्थ हो जाता है। तांत्रिक साधकों की तो यह साधनास्थली रही है।

गंगा नदी के पावन तट पर आमी एवं मलखाचक ग्रामों के बीच दिघवारा बुजुर्ग में नकटी देवी के नाम से सुख्यात महामाया आद्याशक्ति महिषासुरमर्दिनी देवी दुर्गा का प्राचीन विग्रह का निष्काम भाव से अर्चन पूजन करनेवाला प्राणी मनोवांछित फल प्राप्त करता है। महिषासुरमर्दिनी देवी दुर्गा का दिघवारा में स्थापित विग्रह अति प्राचीन है। यहां पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होने वाले नवरात्र में महामाया महिषासुर मर्दिनी तथा कन्या पूजन का विधान है। इसके अतिरिक्त नवरात्र पूजन प्रतिपदा से दशमी पर्यन्त किया जाता है। यहां देवी अष्टभुजी हैं, और चेहरा कान्तिमयी है। श्री देवथर्वशीर्षम् में इन्द्र सहित तमाम देवताओं ने इन देवी को कालरात्रि, विष्णुशक्ति, स्कन्दमाता (शिव शक्ति), सरस्वती (ब्रह्मशक्ति), देवमाता अदिति और दक्षकन्या (सती) कहकर नमन किया है। दुर्गासप्तशती के द्वितीय अध्याय में महामाया महिषासुरमर्दिनी की उत्पत्ति एवं सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन मिलता है। देवासुर-संग्राम में महिषासुर नामक एक शक्तिशाली असुर ने देव सैन्य को पराजित करके इन्द्र पद पर अपने आपको प्रतिष्ठित कर लिया। मां महिषासुर मर्दिनी ने उसका संहार किया।

—‘आज’, 19 जुलाई, 1999



विभिन्न सम्प्रदायों की साधना स्थली

अद्भुत ही नहीं, बल्कि दुर्लभ उमा-महेश्वर मन्दिर है यह। मही नदी के पावन पट पर सोनपुर ग्राम के दक्षिण दिशा में कालीघाट-पहलेजाघाट मुख्य पथ से सटे उत्तर अवस्थित इस मन्दिर की विलक्षणता जहां पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकृष्ट करती है, वहीं मन्दिर की भीतरी दीवारों पर चित्रांकित दृश्यावलियां अलौकिक कलात्मकता का परिचय देती हैं। वस्तुतः उमा-महेश्वर मन्दिर का यह स्थल वैष्णव, शैव, शाक्त, गाणपत्य सम्प्रदायों की संयुक्त साधना स्थली-एकता भूमि होने का गौरव प्रदान करती है।

इस मन्दिर की अनेकानेक विशेषताओं में सबसे बड़ी खूबी यह है कि यहां शिवलिंग में ही भगवती श्री उमा की मुखाकृति लिंगोद्भूत है। नाथ सम्प्रदाय के शैव भक्तों के मतानुसार यहां स्थित श्री महेश्वर का शिवलिंग सद्गुरु नाथ का तथा लिंगोद्भूत श्री उमा गुरु माता का प्रतीक है। एक जगह पिता है, तो दूसरा जगह जगतमाता। गुरु गोरखनाथ से लेकर नाथपंथी योगी बालक नाथ तक अनेकानेक सिद्ध योगियों ने यहां आकर श्री उमा-महेश्वर की आराधना तथा साधाना कर अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त किया। यहां का जर्जर-जर्जर हर-हर महादेव का नाम उच्चारण करता मालूम पड़ता है। यहां का कण-कण शिवलिंग का स्वरूप है, ऐसा भक्तजनों को लगता है।

जिस मन्दिर में शिवलिंगोद्भूत मूर्ति स्थापित है, इसे 12वीं शताब्दी का निर्मित माना जाता है। मन्दिर का आकार लघु, परन्तु सुन्दर और सलोना है। पुरातात्विक देख-रेख के अभाव में यह अभी बेहद जर्जर स्थिति में पहुंच गया है।

28:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

इस मन्दिर परिसर क्षेत्र में बालक नाथ की समाधि स्थली सहित कई समाधि-मन्दिर अवस्थित हैं। बालक नाथ महादेव का विशाल शिवलिंग भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है। इस पर सर्प का चित्र उत्कीर्ण है। यह मन्दिर आज भी चकमक, जगमग कर रहा है।

निश्चिततः नाथ सम्प्रदाय के शैव भक्तों के बाद के काल में लिंगोद्भूत उमा-महेश्वर मन्दिर देवी के तांत्रिक भक्तों के हाथ में कुछ दिन रहा होगा क्योंकि मन्दिर के भीतर ऊपर शीर्ष भाग में गुम्बद के नीचे जो श्री यंत्र बना हुआ है या चित्रित है वह कमोवेश यही साबित करता है। मन्दिर की भीतरी दीवार अनुपम एवं सुन्दर कलाकृतियों से चित्रित है। फन फैलाये शेषनाग, रेंगते सर्प, नाग कन्या, जिसकी नाक में नथुनी (नथिया) है, यत्र-तत्र चित्रित हैं। रंग-बिरंगे पुष्पों के गुच्छे भी दृष्टि-पटल के समक्ष आये बिना नहीं रहते। अनुपम एवं निराली छटा दर्शकों का मन हर लेती है।

मन्दिर के अन्दर शीर्ष भाग में श्री यंत्र बना हुआ है, जिसमें 16 कमल दल उत्कीर्ण हैं और उनके बीच में आठ कमल दल भी चित्रित हैं। शास्त्र कहता है कि षोडशदल कमल विसर्गरूप चन्द्र की षोडश कलायुक्त है, जबकि अष्टदल पद्म अव्यक्तादि आठ कारणों से बना है।

मन्दिर की बाह्य दीवारों का ऊपरी भाग अपनी पौराणिकता की कहानी कहता स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। मंदिर पर पूरब, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण चार दिशाओं में चार क्षेत्रपाल का चित्र भी उत्कीर्ण हैं। रूद्रावतार महावीर हनुमान पूरब दिशा के लोकपाल के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनकी बायें हाथ में गदा है। पश्चिम दिशा का क्षेत्रपाल कोई दंडधारी संत हैं। संभवतः कोई नाथपंथी सिद्ध योगी हैं। उनके दाहिने हाथ में दण्ड है जबकि बायां हाथ उनकी अपनी नाभी केन्द्र पर स्थित है। एक साधक का पूर्ण स्वरूप है इस संत की भाव दृष्टि। दक्षिण दिशा का क्षेत्रपाल स्वयं परिपूर्णतम ब्रह्मश्री कृष्ण हैं। उनकी मुखमण्डल की शोभा देखते ही बनती है। उत्तर दिशा के क्षेत्रपाल के रूप में गजानन एवं लम्बोदर नामधारी चतुर्भुज स्वरूपधारी भगवान श्री गणेश विराजमान हैं। श्री गणेश जी पूर्णतः योग-ध्यान मुद्रा में तथा वज्रासन स्थिति में हैं।

—दैनिक 'आज', 19 जुलाई, 1999



श्रीहरि के चक्र के निपतित स्थल हरिहर क्षेत्र

भागीरथी गंगा से गण्डकी नदी जहां मिलती है, वहां स्नान करने से बहुत फल होता है। 'वाराह पुराण' कहता है कि यह वही महान संगम क्षेत्र है जिसे 'हरिहर क्षेत्र' कहते हैं। 'हरि' (विष्णु) तथा 'हर' (शिव) की उपस्थिति के कारण यह 'हरिहरात्मक क्षेत्र' बना। कार्तिक मास में सूर्य जब तुला राशि में आ जाता है तो इस 'गंगा-गंडक संगम तीर्थ' में विधिपूर्वक स्नान करने वाला निश्चय ही मुक्तिफल का अधिकारी हो जाता है। बाराह भगवान स्वयं कहते हैं कि 'जो इस संगम तीर्थ में शरीर का त्याग करता है, उनको उत्तम गति की प्राप्ति होती है।'

सच कहिए तो सम्पूर्ण भारत-भूमि ही 'हरि-हर' मय है। कोई भाग ऐसा नहीं जहां उनकी उपस्थिति न हो। कहीं प्रतीकों के रूप में तो कहीं स्वयं प्रकट या जन्म लेकर देव-श्रेष्ठों ने इस भूमि और यहां निवास करने वाले समस्त जीव-जन्तुओं को पुण्यशाली होने का गौरव प्रदान किया है। 'हरिहर क्षेत्र' और 'गंगा-गंडक' संगम पर सबसे ज्यादा प्रकाश महर्षि वेदव्यास रचित 'वाराह पुराण' डालता है। इस पुराण में 'हरि-हर' की एक ही स्थान पर उपस्थिति तथा 'गंगा-गंडक' का मिलन यहीं दर्शाता है कि आध्यात्मिक साधना के मार्ग से ही राष्ट्र की एकता व अखंडता की रक्षा की जा सकती है। शेष सभी मार्ग विपथगामी व कमजोर पड़ते हैं। आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठों की स्थापना का ध्येय भी यहीं रहा था।

स्वयं भगवान श्री बाराह अपनी सहधर्मिणी देवी वसुंधरा से

30:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

‘हरिहरक्षेत्र’ की उत्पत्ति का रहस्य बताते हैं। जब ‘शालिग्राम-शिला’ के रूप में भगवान श्री विष्णु ने नदी देवी ‘गण्डकी’ के गर्भ में पुत्र बनकर निवास किया तो उस क्षेत्र का नाम ‘शालग्राम क्षेत्र’ पड़ गया। शोध कर्ताओं के अनुसार यह शालग्राम क्षेत्र नेपाल में है। इसी शालग्राम क्षेत्र में निवास करने के दौरान भगवान श्री विष्णु को पता चला कि उनका एक भक्त जलेश्वर (जड़भरत) ने उसकी स्तुति की है तो उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्होंने अपना सुदर्शन चक्र चलाया। उनका प्रथम ‘चक्र’ जहां गिरा, ‘चक्रवर्ती’ बन गया। वाराह भगवान कहते हैं कि इस चक्र-तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य तेज से सम्पन्न हो कर सूर्य के लोक में प्रतिष्ठा पाता है। और, मरकर विष्णु लोक को प्राप्त होता है। भगवान वाराह कहते हैं कि इस चक्र-तीर्थ से ‘श्री हरि (विष्णु) एवं ‘श्री हर’ (शंकर) के रहने के कारण ही यह तीर्थ ‘हरिहर क्षेत्र’ कहलाने लगा। इस तरह यह भी कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि ‘हरिहर क्षेत्र’ नामकरण से पूर्व यह ‘चक्र तीर्थ’ अथवा ‘हरि तीर्थ’ के नाम से सुख्यात था।

वाराह पुराण के अध्ययन से पता चलता है कि शालग्राम क्षेत्र (नेपाल) से गंगा-गंडक संगम तीर्थ तक का सम्पूर्ण भू-भाग ‘हरिहरात्मक-क्षेत्र’ है। इस भूमि-भागों में पड़ने वाले सभी तीर्थ भगवान ‘श्री विष्णु’ और ‘शिव’ से सेवित हैं। इस हरिहरात्मक क्षेत्र में त्रिवेणी स्थित पुलह-पुलस्त्य मुनि के आश्रम के निकट राजा भरत ने ‘त्रिलेश्वर भगवान’ की पूजा की थी। विरक्ति हुई और उन्हें मृग-योनि से मुक्ति प्राप्त हुई थी। जड़भरत के रूप में इनका वास भी यहीं हुआ। जलेश्वर जड़ भरत की पूजा-अर्चना से प्रसन्न होकर शालिग्राम-त्रिवेणी क्षेत्र से ही भगवान श्री हरि ने अपना चक्र चलाया जिससे चक्र-तीर्थ की उत्पत्ति हुई थी। यह चक्र जहां प्रथम बार गिरा वहीं ‘हरिहर क्षेत्र’ कहलाया। ठीक उसी स्थल पर आज बाबा हरिहरनाथ का मंदिर अवस्थित है और यह बिहार के सारण जिला अन्तर्गत सोनपुर में पड़ता है। वर्तमान में यह हरिहरनाथ मंदिर पवित्र मही नदी एवं गण्डकी नदी के किनारे अवस्थित है। हरिहरनाथ मंदिर का मुख्य द्वार पूर्व की ओर है जिनके ठीक सामने ‘रूद्रावतार बजरंग बली’ का मंदिर है। बाबा हरिहरनाथ के दर्शन के

उपरांत उनका आशीर्वाद लेना जरूरी समझा जाता है।

गंगा-गंडक संगम तीर्थ में 'हरिहरक्षेत्र' है और 'हरिहरक्षेत्र' में गंगा-गंडक की मिलन भूमि है। कोई अंतर नहीं। दोनों ही 'हरि' और 'हर' से जुड़े हैं। मुगल काल में तो निश्चित रूप से यह संगम वैशाली जिला मुख्यालय हाजीपुर के कौनहरा घाट एवं सारण जिले के सोनपुर अनुमंडल मुख्यालय सोनपुर के काली घाट के मध्य था। इस स्थान से संगम कब विलुप्त हुआ, लोग एक मत नहीं हैं। लेकिन आज भी काली घाट-कौनहरा घाट को संगम मानकर ही श्रद्धालुओं का समूह स्नान करता है। परन्तु सच्चाई यह है कि कालीघाट-कौनहरा घाट से लगभग चार किलोमीटर दक्षिण पटना के निकट गंगा नदी के उत्तरी किनारे सोनपुर अंचल के ही ग्राम सबलपुर में सैकड़ों वर्षों से यह संगम स्थल मौजूद है। यह सबलपुर पटना से सटे होने और एक विशाल दियारा की भूमि होने के कारण कई नदियों का मिलन-भूमि रही है। गंगा-गंडक के संगम पर बिहार सरकार द्वारा एक भी घाट का निर्माण आज तक नहीं कराया गया है। बाराह पुराण गंगा-गंडक नदियों की मिलन भूमि के बारे में अपना स्पष्ट मत प्रकट करता है कि 'इन दोनों नदियों का जहां संगम है—वहां स्नान करने से मनुष्य सौ अश्वयमेघ यज्ञों का फल प्राप्त करता है। इस संगम में वैशाख मास में स्नान करने से एक हजार गाय दान करने का, माघ महीने में स्नान करने पर प्रयाग में मकर स्नान का फल पा लेता है। और, कार्तिक में मुक्ति फल का अधिकारी हो जाता है। यह संगम स्थल भगवान श्री हरि के प्रतीक नारायणी और भगवान शंकर के प्रतीक गंगा के कारण भी 'हरिहरक्षेत्र' कहा जाता है।

'हरि' के गण्डस्वेदोद्भव गंडकी और 'हर' की जटा। प्रसूत गंगा का मिलन स्थल होने के कारण 'हरिहरक्षेत्र' की प्रसिद्धि अधिक हुई है। शैव एवं वैष्णव सम्प्रदायों की एकता एवं आपसी सुलह स्थान होने की आधुनिक मान्यता भी। 'हरि-हर' की स्थापना तथा हरिहरक्षेत्र की प्रसिद्धि को बल प्रदान करता है। गंगा-गंडक संगम स्थल की उपस्थिति होने के कारण ही सबलपुर में 'संगमेश्वर महादेव' मंदिर की स्थापना 'शांतिधाम गोरखाईनाथ समाधि स्थल' परिसर में हुई। बिहार की नदियां, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण शोध ग्रंथ के लेखक स्व.

हवलदार त्रिपाठी 'सुहृद्' ने अपने इस ग्रंथ के 190वें पृष्ठ पर वर्तमान में गंगा-गंडक संगम तीर्थ सबलपुर में ही होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ में वर्णन है कि हाजीपुर से गंडक नदी अग्निकोण में स्वल्पाधिक पूर्व की ओर झुकती हुई बहती है। वस्तुतः गंगा-गंडक संगम क्षेत्र तो हाजीपुर के बाद ही आरंभ होता है जो पाटलिपुत्र नगर के सामने पड़ता है। गंडक के इस संगम धारा के पास सारण जिले का अंतिम गांव 'सबलपुर' है। इस ग्रंथ में यह भी वर्णित है कि बुद्ध काल में गंडकी की धारा मही नदी के नाम से दिघवारा के समीप गंगा से संगम करती थी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन भी 'मही' नदी को गंडक नदी की ही एक धारा बताते हैं। जो भी हो पर संगम स्नान से सभी इच्छाओं की पूर्ति और पाप का हरण होता है, यह सभी पुराण बखान करते हैं।

—'आज', पटना, शुक्रवार
23 नवम्बर, 2018



मैं हरिहरनाथ हूँ

मैं हरिहरनाथ हूँ। हरि (विष्णु) एवं हर (शिव)। अस्तित्व एक, स्वरूप दो। एक शेष शैय्या पर क्षीर सागर में विराजमान तो दूसरा कैलाशवासी-श्मशानवासी। गले में हलाहल व सर्पों की माला। इस हरिहरनाथ मंदिर के मंडप में हरि स्वरूप में मेरा सुंदर विग्रह दृश्यमान है। नजदीक आकर देखोगे तो दूर से ही मेरा यज्ञोपवित झलकता है। सूत से बना यह पवित्र धागा भक्तों को खींचकर मेरे पास ले आता है। यज्ञ द्वारा पवित्र किए हुए इस धागे को धारण करने वाला व्यक्ति सहज ही मेरा अनुरागी होता है। मेरे नीचे वाले बायें हाथ में कोमदकी नाम की गदा है तो ऊपर वाले बायें हाथ में पांचजन्य नामक शंख है। गदा बुद्धि का प्रतीक है तो शंख पंचमहाभूतों के उदय का कारण और तामस अहंकार का रहस्योद्घाटन करने वाला।

मेरे गले में पड़ी वैजयन्ती माला पंचरत्नों तथा महाभूतों का संयोग है। मेरे वाण ज्ञानेन्द्रियों तथा कामेन्द्रियों के प्रतीक हैं। पत्थर की शिलाओं पर उत्कीर्ण मेरे विग्रह के अगल-बगल में समस्त ब्रह्माण्ड को विद्या-ज्ञान और कलाओं से सेवित करने वाले देवी सरस्वती सहित अन्य देवी-देवताओं की उपस्थिति है। निराकार रूप में मेरी भी पूजा भक्तगण शिवलिंग की ही तरह शालिग्राम की करते हैं। शेषनाग तो मेरी छाया ही है। हरिहर क्षेत्र में मेरी उपस्थिति के कई चिह्न मौजूद हैं। च्यवन कुंड के दक्षिणी किनारे आपरूपी गौरी मंदिर परिसर में मैं शिव परिवार के सदस्य चतुर्भुजी पार्वती और श्रीगणेश के साथ हूँ। भला, फिर मुझमें और शिव में भेद कैसा? वस्तुतः कोई भेद है ही नहीं। यह तो आंखों को दिखने वाली मृगमरीचिका की तरह है। यहां मैं गजेन्द्र के

34:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

उद्धार के लिए
गरुड़ पर सवार
होकर आया था।
यह दृश्य यहां
दिख जाएगा।
हरिहर के इसी
धाम में मेरा
एक स्वतंत्र
मंदिर भी
नारायणी के तट
पर बना है
जिसका नाम ही
श्रीगजेन्द्र मोक्ष
देवस्थानम दिव्य
देश है। यहां
मैं अपने
परिवार श्रीदेवी,
भूदेवी एवं
लक्ष्मी देवी के
संग विराजमान
हूँ। मेरे भक्तों



संगमेश्वर महादेव, शांति धाम, सबलपुर बमनटोली

की भी प्रतिमाएं हैं तो मेरे परम मित्र सखा व सवारी गरुड़ देव की बड़ी प्रतिमा भी है। आइये, अब हमारे हर (शिव) स्वरूप पर एक नजर डालें।

उपरोक्त वर्णित शिव स्वरूप यहां देखने को नहीं मिलेगा। यहां मैं अव्यक्त रूप में हूँ। शिवलिंग स्वरूप में मेरा यहां निवास है। है न अजब संयोग। एक ही मंडप में सनातन हिन्दू धर्म के दो विपरीत ध्रुव के देवों की एक साथ उपस्थिति। एक आगे तो एक पीछे। वह भी पूर्वाभिमुख आमने-सामने। सामने ही बाहर मेरे रुद्रावतार स्वरूप हनुमान जी की मूर्ति सदैव 'हरि' और 'हर' को निहारती रहती है। हरि और हर

के प्रति हनुमान जी की अगाढ़ भक्ति जगत-प्रसिद्ध है। तो आइये अपने उस निराकार आदि-अनादि स्वरूप का दर्शन कराऊँ।

मंदिर में हरि की खड़ी प्रतिमा के आगे मेरा पीठ स्थल है। इस पीठ स्थल के ऊपर वाला अण्डाकार आकार हिस्सा स्वयं मैं शिव हूँ, एवं निचला हिस्सा यानी पीठम पराशक्ति का द्योतक है। वायु पुराण में मेरे इस शिवलिंग के संबंध में ठीक ही कहा है कि प्रलय काल में समस्त सृष्टि मुझ में ही विलीन हो जाती है और पुनः सृष्टि काल में मुझसे ही उत्पन्न होती है। स्कंद पुराण की बात तो मुझ पर और सटीक बैठती है। उसमें तो व्यापक व्याख्या कर कहा है कि आकाश स्वयं लिंग है। धरती उसका पीठ या आधार है। और सब अनंत शून्य से पैदा हो उसी में लय हो जाते हैं—यही शिवलिंग है। शिव पुराण तो मुझ पर ही केन्द्रित है। उसमें संसार की उत्पत्ति का कारण और परब्रह्म कहकर मेरे इस निराकार स्वरूप शिवलिंग की ही बार-बार अभ्यर्थना की है। ध्यान दीजिएगा तो एक अति गूढ़ रहस्य बताना चाहूंगा। मेरे दिव्य ज्योतिर्लिंग की प्रथम पूजा मेरे ही अभिन्न अंग ब्रह्मा जी और हरि (विष्णु) ने की थी। जब वे आपस में श्रेष्ठता की लड़ाई लड़ रहे थे तब इस ज्योतिर्लिंग के माध्यम से मैंने उनका भ्रम दूर किया था कि हममें कोई बड़ा या छोटा नहीं। भक्तों के भाव के अनुसार हमें मानवीय जगत में बड़ा-छोटा मानते और जानते हैं। श्रावण माह में हरिहरनाथ के शिवलिंग पर जलाभिषेक करने वाले की सभी मन्त्रें पूरी होती हैं। हरि के साथ प्रतिदिन सांध्यकालीन बेला में मेरा भी शृंगार किया जाता है।

यह दृश्य तो अलौकिक और अद्भुत होता है। श्रावणी सोमवारी के अवसर पर तो मत पूछिए। स्वयं अपना स्वरूप देखकर अचंभित रह जाता हूँ जिस रूप में भक्तगण मुझे देखना चाहते हैं वैसा मेरा स्वरूप बनाकर अपनी आत्मा को तृप्त करते हैं। सच कहूँ तो यह पूरा हरिहर क्षेत्र ही हरिहरमय है। इसके कण-कण में मेरा निवास है। दक्षिणेश्वरी काली मंदिर में भी उपस्थिति महाशक्ति काली के साथ है।

—दैनिक 'आज', 05 अगस्त, 2019



36:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

हरि और हर के मिलन की आध्यात्मिक भूमि

गंगा गंडक संगम तीर्थ का पर्याय है हरिहर क्षेत्र। हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला इसी संगम तीर्थ में लगता आ रहा है। व्योम में व्याप्त रहने के कारण हिमालय पुत्री गंगा को हर जटाजूट वासिनी कहा जाता है। हर का नाम 'व्योमकेश' भी है। इसलिए गंगा नदी को 'हर' का प्रतीक मानकर पूजा-अर्चना करने की शास्त्र सम्मत मान्यता जगत 'विख्यात' है। जबकि विष्णु (हरि) के गंड-प्रदेश से गिरे श्रम बिन्दुओं से गंडकी की उत्पत्ति होने अथवा भगवान श्री नारायण (हरि) द्वारा पतिव्रता तुलसी को शाप देने के फलस्वरूप तुलसी के नारायणी नदी के रूप में उत्पत्ति होने से गंडकी 'हरि' का प्रतीक मानी जाती है। 'हरि और हर' के दोनों प्रतीकों का यह संगम हरिहरनाथ मंदिर के दक्षिण सबलपुर ग्राम में है। इस संगम के कारण भी इस क्षेत्र का एक नाम हरिहर क्षेत्र पड़ा।

हरिहरनाथ मंदिर स्थापना, हरिहर क्षेत्र तीर्थ तथा हरिहर क्षेत्र मेला की आध्यात्मिक प्रसिद्धि का साक्षात् प्रमाण हरि और हर का प्रतीक गंगा-गंडक संगम तीर्थ स्थल सबलपुर से बढ़कर दूसरा कोई नहीं है। इसी संगम तीर्थ में बाबा हरिहर नाथ की स्थापना की गयी। इस संगम तीर्थ का महात्म्य भारत प्रसिद्ध है। परंतु संगम स्थल मेला के मुख्य एरिया के दक्षिण दियारा सबलपुर ग्राम में अवस्थित होने के कारण बिहार सरकार, सारण जिला प्रशासन, हरिहरक्षेत्र, सोनपुर मेला समिति की उपेक्षा के कारण संगम क्षेत्र एवं स्थल का संपूर्ण भू-भाग पिछले सौ वर्षों से पूर्णतः विकास से महरूम है। इसके विकास के नाम पर मेला समिति एक रुपया भी खर्च नहीं करती। जबकि, संगम स्थल, संगम के स्नानघाट हरिहर क्षेत्र मेला के महत्वपूर्ण भू-भाग है। एक मात्र पुलिस

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 37

नाका रानीघाट के नाम पर मेला के दौरान स्थापित होता है उसमें भी संगम शब्द का नामोनिशान नहीं होता। नारदीय पुराण ने गंगा स्थल को तीन भागों में विभक्त कर इसे गंगा गर्भ, गंगा तीर और गंगा क्षेत्र के रूप में वर्णित किया है। भाद्रपद की कृष्ण चतुर्दशी को गंगा नदी का जल जहां तक पहुंचता है, उसे गंगा गर्भ कहा जाता है, वहां तक गंगा गर्भ कहलाता है। इस गंगा गर्भ की सीमा 150 हाथ की दूरी तक के भूमि भाग को गंगा तट कहा जाता है। और इस तट प्रदेश से दो कोस की दूरी तक की भूमि भाग को गंगा क्षेत्र माना जाता है। कालीमंदिर, गौड़ी शंकर मंदिर, च्यवन ऋषि कुण्ड, बाबा बाला नाथ की समाधि आदि संगम स्थल से दो कोस के अंदर होने के कारण गंगा गंडक संगम तीर्थ क्षेत्र के अंतर्गत ही है। इसलिए इस मेला को संगम पर बताया जाता है। इसलिए यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि बाबा हरिहरनाथ मंदिर में एक गर्भगृह में हरि 'विष्णु' एवं हर 'शिव' की प्रतिमा व लिंग स्थापना के कारण संपूर्ण सोनपुर सहित आसपास का इलाका हरिहर क्षेत्र से सुख्यात है। ठीक उसी प्रकार श्री नारायण से जुड़ी शालिग्रामी (गंडकी) व शिव से जुड़ी गंगा का सबलपुर में समागम होने से यह क्षेत्र प्रत्यक्ष हरिहर क्षेत्र होने का अपना स्वतः प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है। बिहार की नदियां, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण शोध ग्रंथ के लेखक स्व. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' ने इस ग्रंथ के 190वें पृष्ठ पर वर्तमान, गंगा-गंडक संगम तीर्थ सबलपुर में ही होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ में वर्णन है कि हाजीपुर से गंडक नदी अग्निकोण में स्वल्पाधिक पूर्व की ओर झुकती हुई बहती है। वस्तुतः गंगा गंडक संगम क्षेत्र तो हाजीपुर के बाद ही आरंभ होता है, जो पाटलिपुत्र नगर के सामने पड़ता है। गंडक की इस संगम धारा के पास सारण जिले का अंतिम गांव 'सम्बलपुर' है। इससे स्पष्ट होता है कि कम से कम सौ वर्ष के दौरान जब भी संगम स्थल रहा तो कालीघाट (सोनपुर) कौनहाराघाट (हाजीपुर) के निकट दक्षिण ही। ध्यान रहे कि सबलपुर की उत्तरी सीमा कौनहाराघाट, कालीघाट एवं हरिहरनाथ मंदिर के निकटस्थ भाग को स्पर्श करती है। उपरोक्त ग्रंथ में यह भी लिखा है कि गंडकी का प्राचीन संगम स्थान 'दिघवारा' के पास था। गंडकी वहां बुद्धकाल में महीनदी के नाम

38: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

से गंगा से संगम करती थी। इसलिए देश के विभिन्न भागों में विभिन्न-विभिन्न नदियों के संगम-स्थल होने के कारण मेला लगता आ रहा है तथा सरकार संगम स्थल का विकास करती है। ठीक उसी प्रकार हरिहर क्षेत्र नाम की सार्थकता सिद्ध करने वाला गंगा-गंडक संगम स्थल सबलपुर दियारा का चहुमुखी विकास जरूरी है। वराह पुराण (145-114) में गंगा-गंडक संगम तीर्थ को महिमान्वित ही नहीं किया गया है बल्कि उसे पुण्यतम क्षेत्र भी बताया गया है—

“अदौ सा गंडकी पुण्या भागीरथ्या च संगता।

तस्य तीर्थस्य महिमा ज्ञायते न सुरौरपि॥”

इस संग्रह का एक लघु स्वरूप पटना के बख्तियारपुर के पश्चिम, गंगा के वाम पार्श्व में संगम करता दिखाई पड़ता है। यहां भी गंगा-गंडक का दर्शन संभव है। लेकिन, प्रत्येक दृष्टिकोण से सबलपुर दियारावाला संगम स्थायी तथा सर्वसुलभ है।

—दैनिक ‘आज’, 05 अगस्त, 2019



हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 39

सोनपुर के समीप था जड़भरत मुनि का आश्रम

सोनपुर रेलवे स्टेशन से दो किलोमीटर उत्तर गंडकी नदी के किनारे बैजलपुर में जड़भरत मुनि का आश्रम स्थित है। पत्थर (शिला) रूप में उनकी मूर्ति यहां स्थापित रहने के कारण इसका नामकरण 'जड़भरत' तथा जड़भरत आश्रम पड़ा। जड़भरत आश्रम का भी पुराना नाम 'पुलहाश्रम' बताया गया है। सरकारी उपेक्षा एवं गंडकी नदी के कटाव के कारण आश्रम का मूल स्थान नदी के गर्भ में समा गया, परन्तु कटाव स्थल से पीछे श्रद्धालुओं ने एक मन्दिर बनाकर पुनः स्थापित कर दिया है।

पर्यटक सूचना केन्द्र भी सोनपुर में स्थापित है। यह पर्यटक सूचना केन्द्र सरकारी उपेक्षा के कारण बदहाली का शिकार है। इस विभाग द्वारा अनुशंसा किये गये मसलों पर सरकार के यहां कोई सुनवाई नहीं होती। मालूम हो कि जड़भरत आश्रम को सोनपुर स्टेशन से जोड़ने के लिए मात्र डेढ़ किलोमीटर सड़क निर्माण की आवश्यकता थी परन्तु यह कार्य आज तक पूरा नहीं हो सका। अगर, कुछ जड़भरत आश्रम के विकास के लिए किया गया है तो वह सरकार द्वारा नहीं, बल्कि बैजलपुर के ग्रामीणों के अथक प्रयास से ही संभव हुआ है।

जड़भरत आश्रम जहां पर अवस्थित है वहां से उत्तर-पश्चिम दिशा में परिसर (वर्तमान परसा) से लेकर उल्काचेली (वर्तमान हाजीपुर) तक जंगल ही जंगल था। इन जंगलों में मुनियों के जिनमें पुलत्स्य और पुलह ऋषियों के दो प्रसिद्ध आश्रम थे। ब्रह्मा के छह मानस पुत्रों, जिनका उल्लेख विष्णु पुराण में आया है, उनमें मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलत्स्य, पुलह और क्रतु हैं। पुलत्स्य और पुलह के आश्रमों में वेदों का अध्यापन और कर्मकाण्ड की शिक्षा दी जाती थी। इन्हीं ऋषियों में से एक पुलह के आश्रम में जड़भरत जी तपस्या करते थे।

40:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

जड़भरत मुनि के संबंध में कई कथाय पुराणों और जैन ग्रंथों में प्रचलित है। एक तो यह कि वे आंगिरस के पुत्र थे तथा वेदपाठी परिवार में उनका जन्म हुआ था। शाक्तों द्वारा उन्हें एक बार पकड़ लिया गया देवी पर बलि चढ़ाने के लिए, परन्तु भद्रकाली ने प्रकट होकर शाक्तों के पुजारी को उसी के खड्ग से उसकी हत्या कर दी। भद्रकाली का मन्दिर गंडकी नदी के किनारे सोनपुर में आज भी उनकी स्मृति-स्वरूप है, जिसे गुप्त युग का बताया जा रहा है

दूसरा यह कि ऋषभदेव के सौ पुत्रों में सबसे बड़े थे। अपने जीवन काल में ही राज्य को पांचों पुत्रों में बांटकर गंडकी नदी के किनारे स्थित 'पुलस्त्य आश्रम' में तपस्या करने चले गये। एक मृगशावक के प्रति आसक्ति के कारण मरने पर ये मृगयोनि में पैदा हुए थे। जैन ग्रंथों में ऋषभ देव को वैशाली के पश्चिम परिसर (वर्तमान सारण जिले का परसा) के निकट कुंडपुर का निवासी बताया गया है। श्वेताम्बरों के अनुसार भगवान महावीर ऋषभदेव की पत्नी देवनदा के गर्भ में ई. सन् 500 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् आषाढ़ शुक्ल षष्ठी की मध्य रात्रि में प्राणतनामक कल्प से च्यवित हुए। इसीलिए महावीर का नाम च्यवन है। ऋषि च्यवन एवं महावीर (च्यवन) में कोई समानता है या नहीं, यह शोध का विषय है।

परन्तु दिगम्बरों ने गर्भ परिवर्तन परम्परा के सिद्धान्त को अमान्य करते हुए महावीर का जन्म त्रिशला के गर्भ से बताया है। त्रिशला महाराज चेटक की भगिनी थी। जो भी हो, पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा जड़भरत मुनि की उपेक्षा की गई है। जड़भरत कौन थे? इन पर पुराणों एवं जैन ग्रंथों में विवादास्पद कथाएँ हैं, जिन्हें शोधों द्वारा स्पष्ट किया जाना जरूरी है। क्या भरत (जड़) शकुन्तला के पुत्र थे? भरत नाम एक जाति की भी थी, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह जाति इन्द्र की उपासना करती थी। आज जरूरत है जड़भरत आश्रम के जीर्णोद्धार की। बाहर से आने वाले यात्रियों के लिए रैन बसेरा की तथा वाहनों के आवागमन के लिए पक्की सड़क की आवश्यकता है।

—'आज', पटना, 19 दिसम्बर, 1994
अंचल सारण दर्शन।



मनाईन माई की होती है यहां जय-जयकार

मातृशक्ति की आराधना मानव मन व आत्मा का शुभ लक्षण है। जब वह इससे विरत होने की चाह रखने लगता है तो वह माता के आश्रय रूपी आंचल के स्नेह से वंचित हो जाता है। तब दुष्प्रवृत्तियां स्वतः उसके मन पर अपना घर बना लेती हैं। तभी मानव रोग, शोकादि महाविकारों तथा महाविनाशक शक्तियों के मकड़जाल में फंसे अपना जीवन स्वतः बर्बाद कर लेता है। ऐसे में मातृ-शक्ति का बाल-भाव से अर्चन—पूजन ही हमें इस फंदे से बचाती है। आश्विन के शारदीय नवरात्र में सोनपुर अनुमंडल क्षेत्र के शीतलपुर-दरियापुर पथ पर शीतलपुर में स्थित महादेवी दुर्गा के पिन्डी रूप 'मनाईन माई' स्वरूप की भव्य पूजा-अर्चना भक्तों के मातृ शक्ति के प्रति समर्पण का ही द्योतक है।

कलयुग में तामस प्रवृत्तियों ने मानव मन पर नख से सीख तक अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए एक लम्बी लड़ाई चला रखी है। अगर हम मातृ-शक्ति की शरण न गहे होते तो इसका दुष्परिणाम का हाल जानने वाला भी आज नहीं बचता। शीतलपुर में स्थित 'मनाईन माई' की देहरी पर माथा टेकनेवालों की भीड़ जमी देखकर इस बात का अंदाजा सहज ही लग जाता है। आश्विनी के अतिरिक्त अन्य नवरात्र तथा साल के बारह महीने यहां भक्तों का मेला लगा रहता है। मनाईन माई मंदिर प्रांगण को शक्ति के उपासक भक्तों की साधना-भूमि के रूप में ख्याति प्राप्त है। लोक विश्वास है कि मनाईन माई का यहां दर्शन, पूजन करने वाला प्राणी रोग, शोक आदि महाविनाश शक्तियों से रक्षित तथा कलयुग के तापों से सर्वथा मुक्त रहता है। यही कारण है कि यहां

42:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

आठों पहर माई की जय-जयकार होती रहती है।

मनाईन माई को मन अथवा मनन शक्ति के नाम से भी जाना जाता है। श्री दुर्गा सप्तशती में यह नाम आया है। यही आद्या शक्ति 'मनाईन माई' हैं। मंदिर के भीतर मनाईन माई की 'पिण्डी' स्थापित है। इसे प्रागैतिहासिक काल का माना जाता है। मंदिर को नया स्वरूप प्रदान किया गया है। मन्दिर के पुजारी पं. कामेश्वर तिवारी का कहना है कि सैकड़ों वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में फैली महामारी से 'मनाईन माई' ने ही इस क्षेत्र के लोगों को निजात दिलाया था। हैजा, प्लेग आदि बीमारियों ने हर घर को जब वेध दिया—लोग उसका ग्रास बनने लगे तक भक्तों ने दुर्गा की अराधना की। माता ने उनकी गुहार सुनी और उन्हें उनकी पुकार का उत्तर दिया—'भाग नहीं, ठहरो।' तुम्हारे रोग, शोकादि भय शीघ्र ही नष्ट हो जायेंगे और, सच ही कुछ ही क्षणों में बीमारी से आक्रांत चेहरे स्वस्थ हो गये। ऐसा लगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं था।

मनाने से मान गयी माई। इसलिए इनका नाम पड़ा मनाईन माई। तब से यहां मां दुर्गा की पूजा 'मनाईन माई' के नाम से ही की जाती है। भक्तों ने उनका दर्शन भी किया है। ऐसा कोई साक्षात् प्रमाण तो उपलब्ध नहीं है पर लोकोक्तियां तो अवश्य ही प्रसिद्ध हैं। लोगों का तब से माई के प्रति श्रद्धा और विश्वास में और वृद्धि होती चली गयी। कहते हैं हरिद्वार (मायानगरी) से स्वयं देवी मनसा यहां आकर विराजती हैं। मंदिर के नव निर्माण में शीतलपुर बाबूटोले के स्व. बिन्दा सिंह की अहम भूमिका रही है।

इसके बाद अरुण कुमार सिंह ने जन सहयोग से इसे सुन्दर स्वरूप प्रदान किया। नवरात्रों में इस मंदिर परिसर में दुर्गा सप्तशती के पाठ द्वारा मनाईन माई की उपासना, महात्म्य पाठ, कवच, यंत्र, तंत्र तथा कथा-श्रवण करता है—उससे अग्नि, भय, महामारी भय, ग्रह-पीड़ा आदि का भी सदा-सर्वदा के लिए शमन हो जाता है। बशर्ते विश्वास में तनिक भी खटास की उत्पत्ति न हो।

—'ताना-बाना', दुर्गा पूजा विशेषांक।



उमा-महेश्वर मंदिर शैवों, वैष्णवों एवं शाक्तों की संयुक्त साधना-स्थली

अग्निधर्मा महीनदी के पावन तट पर सोनपुर ग्राम के दक्षिण दिशा में कालीघाट पहलेजाघाट मुख्य पथ से सटे उत्तर अवस्थित उमा-महेश्वर मंदिर की विलक्षणता जहां पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकृष्ट करने से नहीं चुकती वहीं मंदिर के भीतरी दीवारों पर चित्रांकित दृश्यावलियां अलौकिक कलात्मकता का सुन्दर उदाहरण है तथा इसे एक साथ वैष्णव, शैव, शाक्त, गणपत्य सम्प्रदायों की संयुक्त साधनास्थली प्रमाणित करती है।

उमा-महेश्वर मंदिर के अन्दर स्थापित शिव-लिंग में ही भगवती उमा की सुन्दर और आभा मंडित मुखाकृति 'लिंगोद्भुत' है। नाथ शैव भक्तों के मान्यतानुसार श्री उमा देवी गुरु माता हैं और श्री महेश्वर सद्गुरुनाथ हैं। हम पहले ही कह चुके हैं कि यह मंदिर अद्भुत है। नाथ-योगियों की सतत् साधना एवं वैष्णव, शाक्त एवं पाणपत्य सम्प्रदायों के संतों की भी भाव-भूमि रही है यह। गुरु गोरखनाथ से लेकर गुरु बालक नाथ तक सिद्ध योगियों ने यहां उमा-महेश्वर की आराधना एवं साधना की।



उमा महेश्वर लिंगोद्भुत मूर्ति

44:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

‘हर हर महादेव’ इस मंदिर के जर्ने-जर्ने में उच्चरित होता है। यहां पाये जाने वाले शिव लिंगों की बहुलता इसका खुद परिचय देती है।

‘हर हर महादेव’ प्राचीन काल से ही हिन्दुस्तानियों का ‘युद्धघोष’ मंत्र रहा है। इस युद्धघोष में जो भयंकरता है वास्तव में उसका हृदय शांति हैं, यह प्रत्येक देशवासी को घोष के अनुभव से ज्ञात है। ‘हर-हर महादेव’ युद्ध में रक्त तर्पण की सूचना है। एक अर्थ में इस मंदिर में स्थित शिवलिंग में अद्भुत जो उमा शक्ति है वे वस्तुतः ब्रह्मविद्या है और महेश्वर परब्रह्म है। परब्रह्म की प्राप्ति ब्रह्मविद्या के बिना नहीं हो सकती है और ब्रह्मविद्या ब्रह्म में ही रहती है। शिवलिंगोद्भूत भगवती श्री उमा की मूर्ति इसी का परिचायक है। लघु स्वरूप वाले इस मंदिर पर घास-फूस भी उग आये हैं। खजुरियां ईंटों से निर्मित मंदिर का मुख्य द्वार तथा लिंगोद्भूत मूर्ति दोनों ही उत्तरामुख हैं।

मंदिर की जीर्ण-शीर्ण अवस्था के कारण यत्र-तत्र ईंट भी निकल आयी हैं जो यह दर्शाती है कि न पर्यटन विभाग, न प्रशासन और न ही सोनपुर के श्रद्धालुजनों की इस पुरातात्विक धरोहर की चिंता है। मंदिर के बाह्य भाग में पूरब दिशा में भी एक दरवाजे जैसा चिह्न मिलता है। इसमें कोई प्राचीन मूर्ति स्थापित थी जो अब दिखाई नहीं पड़ती। इस मंदिर के ऊंचे डीह पर यत्र-तत्र भूमि के अंदर दबे अनेक शिवलिंग भी दृष्टिगोचर होते हैं। पुरातत्व विभाग द्वारा इसकी सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। कई शिवलिंगों का शीर्ष भाग यहां दृष्टिगोचर होता है। इस मंदिर के सटे पश्चिम एक ही परिसर में बालकनाथ महादेव एवं बालकनाथ की समाधि स्थली भी अवस्थित है, जो ग्रामीणों की कृपा से चमक रहा है। सफेद संगमरमर की तरह। शिवलिंग विशाल है और उस पर सर्प की आकृति मूर्ति स्थापित है।

मंदिर की बाह्य दीवार के ऊपरी भाग के चार दिशाओं के रक्षक हैं चार दिक्पाल। रुद्रावतार महावीर हनुमान पूरब दिशा के लोकपाल के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनकी बायें हाथ में गदा है जो कंधे से सटा है। उनका बायां पैर पीछे की ओर उठा हुआ है और दायां आगे की ओर बढ़ा हुआ है। उनके दायें हाथ में महावीरी पताका है जो विजय अभियान पर निकलने का द्योतक है। उनका शरीर बन्दराकार तो अवश्य

है, पर योग और भक्ति की गहनतम साधना से उनका भौतिक अस्तित्व पूर्णतः दिव्य और आध्यात्मिक हो चुका है। हनुमान जी एक आदर्श योगी, आदर्श भक्त, आदर्श कर्मा, आदर्श त्यागी और आदर्श ज्ञानी है। उन्होंने इसी योगबल से असाधारण और अद्भुत शक्ति विकसित कर ली थी। उन्हें साक्षात् महेश्वर का रूद्रावतार माना जाता है। पश्चिम दिशा में एक दिव्यरूपधारी संत योगी का चित्र उत्कीर्ण है। संभवतः गुरु गोरखनाथ अथवा कोई सिद्ध महात्मा हैं। इनके दायें हाथ में दण्ड है, जबकि बायें हाथ पेट के नीचे के अगले अंश पर स्थित है। साधना का कोई तरीका है।

दक्षिण दिशा के दिक्पाल परिपूर्णतम ब्रह्म श्री कृष्ण स्वयं हैं। मुरलीधर के रूप में सुशोभित हो रहे हैं। दायां पैर बायें पैर पर चढ़ा हुआ और होठों पर राजसी मुरली देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी मधुर स्वर लहरियों में डुबा सम्पूर्ण जगत मोहित हो गया है। पुराणों में श्री कृष्ण की शिव भक्ति प्रसिद्ध है। मुरलीधर ने अपने नाना अवतारों में, युग-युग में महेश्वर को तपस्या द्वारा प्रसन्न किया। सच कहिए तो श्रीकृष्ण की प्रेरणा से ही वीर हनुमान ने महाभारत युद्ध में अर्जुन के रथ की ध्वजा में अपने आपको स्थिर किया था। उत्तर दिशा में गजानन, लम्बोदर नामधारी चतुर्भुज श्री गणेश जी विराजमान हैं। वे पूर्णतः योग ध्यान मुद्रा में है। लग रहा है कि जैसे उन्होंने समाधि ले रखी है। करबद्ध प्रार्थना में लीन हैं। बजासन स्थिति में हैं। इसे हठयोग के चौरासी आसनों में एक माना जाता है। गणेश जी को उमा-महेश्वर के अन्तःपुर के द्वार का प्रहरी एवं संसार की अप्रत्यक्ष शक्तियों का शासक, शांति एवं भौतिक समृद्धि का देवता, ज्ञान तथा बुद्धि का देवता माना जाता है। एक आदर्श योगी तो श्री गणेश जी हैं ही, इनके साथ ही इन्हें उमा-महेश्वर के पुत्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है।

मंदिर की भीतरी दीवारों की चित्रात्मकता अनुपम एवं निराली है। दीवारों पर रेंगते नाग एवं मोर-पक्षी के चित्र लोगों को एकटक देखने को विवश कर देते हैं। रंग-बिरंगे पुष्प के गुच्छे भी यत्र-तत्र चित्रांकित हैं। भीतर ही गुम्बद के शीर्ष भाग में 16 कमलदल उत्कीर्ण हैं। जिसके बीच में भी 8 कमलदल चित्रित हैं। दीवारों पर भीतर ही चारों तरफ

46:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

करीब छह की संख्या में बायीं नाक में नथिया धारण किये नाग बालिकाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं। सुरक्षा-संरक्षा के अभाव में अनेक चित्र मिट गये हैं या आधे-अधूरे बचे हैं। उनकी भी सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं। लिंगोद्भुत भगवती उमा की मूर्ति में आकर्षण इतना है कि लगता है कि उनकी मुखाकृति अब बोल उठेगी। अनुमान है कि मूर्ति और मंदिर पालकालीन है या उससे भी पहले की है। कहना न होगा कि यह मंदिर वैष्णव, शैव, शाक्त एवं गाणपत्य सम्प्रदायों की साधना एवं पूजा-स्थली है जो हिन्दू धर्म का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

—‘हिन्दुस्तान’, पटना,
07 अक्टूबर, 1999 (अध्यात्म)



हरिहर क्षेत्र की महिमा अपरम्पार

उत्तर भारत में प्रसिद्ध मेला एवं तीर्थ के नाम से हरिहर क्षेत्र (सोनपुर) प्रख्यात है। बाबा हरिहरनाथ मन्दिर यहां अवस्थित हैं। इसी मन्दिर के अन्दर पालन एवं संहार के महादेवों 'भगवान शिव' (हरि) की प्रतिमा तथा 'महादेव' (शिव) का लिंग प्रतिष्ठित है। इस तीर्थ की महिमा अपरम्पार है। अयोध्या के राजा श्री रामचन्द्र ने सीता सहित हरिहर क्षेत्र-तीर्थ की यात्रा की थी।

'हरिहर क्षेत्र' नामकरण के सन्दर्भ में शोध कार्य आज भी जारी है। किंवदंतियाँ भी काफी प्रचलित हैं। जिससे लोगों को भ्रम का शिकार भी होना पड़ता है। पर, रामदास रचित 'आनन्द रामायण' के यात्रा काण्ड में 'हरिहर क्षेत्र' का एक तीर्थ के रूप में वर्णन मिलता है।

इस रामायण-कथा के यात्रा-काण्ड में वर्णित है कि तीर्थ यात्रा के क्रम में श्री राम और जानकी ने गंगा-सरयू संगम पर गंगा जी का पूजन किया—तत्पश्चात पुष्पक विमान से प्रयाग, विन्ध्यवासिनी और कर्मनाशा होते हुए च्यवन मुनि के आश्रम जा पहुँचे। जहां से शोणभद्र-संगम और गंडकी के संगम होकर नेपाल में पहुँचकर पशुपतिनाथ का दर्शन किया। यहां से 'हरिहर क्षेत्र' फिर हरिहर क्षेत्र से वैकुण्ठपुर, राजगृह होकर फल्गु नदी के पूर्वी तट पर पहुँचकर विमान छोड़ 'विष्णुपद' का दर्शन किया। अगर इस तथ्य में तनिक भी सत्यता है तो निश्चय ही श्री रामचन्द्र के राज्याभिषेक के दौरान 'हरिहर क्षेत्र' एक तीर्थ के रूप में प्रख्यात था।

वैसे, विभिन्न किंवदंतियों पर दृष्टिपात करना भी जरूरी है—जब तक कि 'हरिहर क्षेत्र' नामाकरण का कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिल जाता। 'आभा' सोनपुर अंक में हनुमान साह पोद्दार का 'हरिहरक्षेत्र' शीर्षक से

48:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

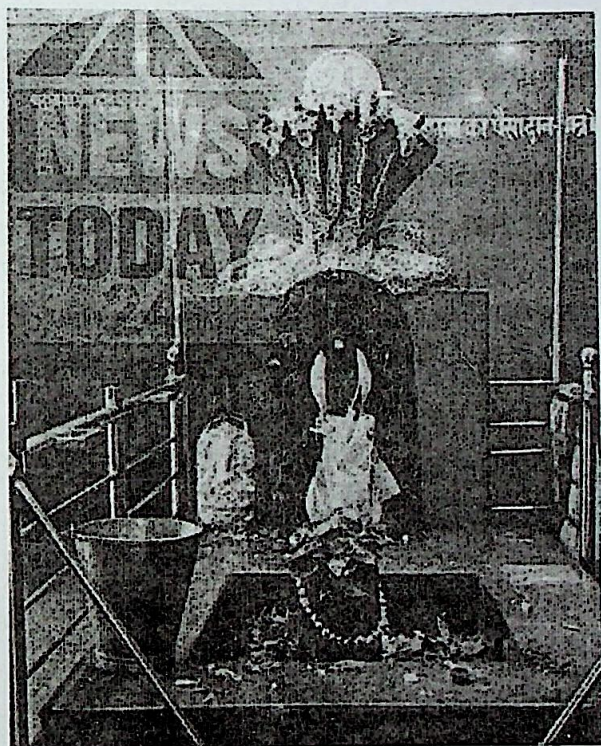
एक अति संक्षिप्त लेख प्राप्य है। उन्होंने वाराह पुराण के हवाले से लिखा है कि भगवान हरि सभी गौओं को लेकर हरिहरक्षेत्र गये थे। वहां त्रिशूलपाणि 'हर' ने नन्दी के साथ गोधन की रक्षा की थी। और, उसी दिन से वहीं रहने लगे। इसी से इस स्थान का नाम 'हरिहरक्षेत्र' पड़ा।

'सोनपुर प्राचीन काल से वर्तमान काल तक' शीर्षक अपने आलेख में सियाशरण शास्त्री ने पद्मपुराण के 145वें श्लोक का जिक्र करते हुए हरिहरक्षेत्र की महत्ता, उत्पत्ति तथा इसकी साधना और तपचर्या पर पूर्णरूपेण प्रकाश डाला है। वस्तुतः देवर्षि नारद तथा राजा पृथु संवाद के रूप में वर्णित यह श्लोक निम्न प्रकार है—

“स्नान, दान जपं” स्वास्थ्यार्थं पितृ तर्पणम्। जागरं तलयः कुर्यात्, सोयन्त-फलं भानुप्रयात्। नैदृश्य दानं सन्मानं, गयाया न च याजनात्। यादृश कालिकालेन, हरिहर क्षेत्र संगमे। (पद्म पुराण) प्रमाण है कि स्वयं ब्रह्मा ने हरि और हर को यहां स्थापित किया। (कुछ लोगों का यह भी कहना

है कि दशरथ नन्दन श्री रामचन्द्र जब सीता के स्वयंवर में शामिल होने आये तब उन्होंने इस स्थान पर 'हरि और हर' की स्थापना की। तत्पश्चात् मिथिला पहुंचे।

हरिहरनाथ के मन्दिर को किसने बनवाया, इसका भी ठीक-ठीक पता नहीं चलता। परन्तु



बाबा हरिहरनाथ की प्रतिमा

पूर्व समय में कई बार मंदिर जीर्ण-शीर्ण हुआ और भक्तों द्वारा मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया गया। वर्तमान मन्दिर के बारे में कहा जाता था कि काली मन्दिर को एक पुजारिन ने चढ़ावे की रकम से इसे 17वीं सदी के अंत में बनवाया। परन्तु, कुछ जानकारों के मुताबिक वर्तमान हरिहरनाथ का मन्दिर ख्याति प्राप्त साहित्यकार स्व. रघुवीर नारायण के पूर्वज ठाकुर बलभद्र दास के प्रयास से बना था। ठाकुर बलभद्र दास सोनपुर के निकट अकंधरपुर के ही वासी थे। उत्तर प्रांत के 'कामाणिकपुर' में आकर यह चरामार के 'कानूनगो' पद पर कार्यरत रहे। कुछ लोगों के अनुसार वर्तमान मन्दिर पटना के सूबेदार महाराजा रामनारायण ने बनवाया था।

आंगल श्वासन के आरंभिक इतिहास में भी इस स्थान के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख पाया जाता है। 1860 ई. में टिकारी की महारानी ने मन्दिर के पश्चिम साधु-सन्तों के ठहरने के लिए भवन का निर्माण किया और 1860 ई. में लार्ड मार्टिन की आज्ञा से मन्दिर का भवन विस्तार किया गया था। पुनः बिड़ला बन्धुओं ने मन्दिर विकास में भूमिका अदा की। बाद में, बोध गया मठ से स्वतंत्र होने पर मन्दिर में विकास के पर लग गये।

हरिहरनाथ मन्दिर के अन्दर शिव-लिंग तथा विष्णु की मूर्ति स्थापित है। शिव-लिंग की पौराणिकता, प्रचलन के संदर्भ में कोई विवाद नहीं है। वेदों में भी शिव-लिंगोपासना विख्यात है ही है। स्कंद पुराण के मुताबिक भगवान विष्णु ने लक्ष्मी सहित शिव-लिंग की पूजा की थी। शिव भक्त रावण की लिंग पूजा तो प्रसिद्ध है। हरिहरनाथ मंदिर में जो शिव लिंग स्थापित है उनके निचले हिस्से में प्रस्तर का बना एक आधार है, जिसे पोट या 'योनि' कहते हैं। लिंग की आकृति (एक आकाश का) योनि-स्थान में प्रकट होता दृष्टिगोचर होता है। लिंग का शिरोभाग गोल है।

शिव-लिंग के पीछे चबूतरे पर भगवान विष्णु की चतुर्भुज मूर्ति एक प्रस्तर खण्ड पर उत्कीर्ण है। उक्त प्रस्तर खंड भी उत्कृष्ट कला का नमूना है। भगवान विष्णु के दायें कसौटी के दो प्रस्तर स्तम्भ भी हैं, जो प्रकट करता है कि उक्त प्रस्तर खंड पर उत्कीर्ण स्तम्भ दरवाजा का

50:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

भाग है। जिसमें चतुर्भुज विष्णु (अन्दर) निवास करते हैं। विष्णु का बायां हाथ जो उठा हुआ है, उसमें सुदर्शन-चक्र सुशोभित हो रहा है, जो विष्णु का आयुध भी है तथा दूसरा बायां हाथ जो नीचे की ओर झुका हुआ है, उसमें 'शंख' है। जबकि दाये, हाथ ऊपर वाले में 'मूसल' अथवा 'गदा' है। तथा, निचले दाये हाथ 'स्वाहा' की मुद्रा में है अर्थात् हथेली खुली हुई है। हथेली से ठीक सटे श्री लक्ष्मी जी हैं। उनके बायें हाथ में कमल पुष्प है जो ऊपर उठा हुआ है। हथेली के पिछले भाग से स्पर्श कर रहा है। विष्णु के इस हाथ में 'कमल' नहीं है। वहीं, नीचे वाले बायें हाथ में शंख है—से सटे नीचे वीणाधारिणी सरस्वती की खड़ी प्रतिमा है।



हरिहर क्षेत्र की महिमा प्रयागराज से कम नहीं

गंगा और गंडक का संगम तथा पुण्यदायिनी दोनों धाराओं का अविरल प्रवाह लोक ही नहीं, परलोक में भी सब सुख सम्पन्नता देनेवाला माना गया है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस संगम में स्नान कर मनुष्य अक्षय पुण्य का भागी होता है। अभी वर्तमान में गंगा-गंडक का संगम सोनपुर स्थित कालीघाट एवं हाजीपुर स्थित कौनहारा घाट से साढ़े तीन किलोमीटर दक्षिण सोनपुर थाने के सबलपुर दियारा मौजे में अवस्थित है। गंगा-गंडक संगम एवं इन नदियों की स्थिति का वर्णन पुराणों, बौद्ध एवं जैन ग्रन्थों में ही नहीं, बल्कि जनश्रुतियों में भी महिमा-मंडित है।

गंगा और गंडक का संगम कभी एक स्थान पर स्थित नहीं रहा। समय-समय पर इसकी धाराओं में व्यापक परिवर्तन होता रहा। जैसा कि आज है। 1837 ई. के लगभग गंगा-गंडक का संगम ठीक कालीघाट एवं कौनहारा घाट के निकट था—ऐसा बताया जाता है। भ्रमवश आज भी दूर-दराज के लोग गंगा-गंडक का संगम कालीघाट एवं कौनहारा घाट के समीप मानकर संगम स्नान कर कृत-कृत हो घर वापस लौटते हैं। जबकि, संगम-स्थल पर पहुंचना कहीं सुगम है। संगम स्थल पर पहुंचने के लिए कालीघाट एवं लोक सेवाश्रम, सोनपुर के मध्य सबलपुर दियारा की ओर जानेवाली ईंट-सोलिंग सड़क से जाया जा सकता है। जगन्नाथ मन्दिर, सबलपुर से कच्ची एवं बालू वाली सड़क पकड़नी पड़ेगी।

545 ई. पूर्व में जब मगध सम्राट बिंबसार राजगद्दी पर बैठा, उस समय गंगा और गंडक का संगम न कालीघाट-कौनहारा घाट के समीप ही था और न वर्तमान संगम स्थल सबलपुर दियारा में ही।

52:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के मुताबिक उस समय संगम-स्थल वर्तमान सोनपुर अनुमंडल क्षेत्र के दिघवारा (प्राचीन नाम दीर्घवाह) के समीप था। यहीं शोणभद्र भी मिलता था। इस प्रकार लिच्छवियों की पश्चिमी सीमा पर गंडक, सदानीरा या मही बहती थी और दक्षिण में गंगा-गंडक संगम था। महापंडित सांकृत्यायन ने मही नदी को गंडक नदी की ही एक धारा माना है तथा इसका एक अन्य नाम 'सदानीरा' बताया है। हालांकि कुछ विद्वान सप्ती का भी प्राचीन नाम 'सदानीरा' ही बतलाते हैं।

जैन एवं बौद्ध साहित्य में मही का स्पष्ट उल्लेख है। मगध के एक शासक बालदित्य (समय सन् 467-474) ने मही सागर संगम पर एक संधाराम बनवाया था। इसका वर्णन 'रिकार्ड्स ऑफ दि बुद्धिस्ट रेलिजन' में मिलता है। जैनियों के धर्म ग्रंथ में 'ऋजु-बालिका' का वर्णन है। वह दूसरी नदी नहीं, गंडक ही है। कहीं ऋजुबालुका भी पाठ है। मही सागर का उल्लेख सिर्फ तीन पुराणों में मिलता है। वे हैं—पद्मपुराण, स्कंदपुराण और नारद विष्णु पुराण। बाबा हरिहरनाथ का मन्दिर मही नदी किनारे ही अवस्थित है। जैन ग्रंथों में जहां कहीं भी मही, सदानीरा, ऋजुबालुका इत्यादि का उल्लेख हुआ है, उन सभी स्थानों में यह नदी वैशाली के पश्चिम में कही गयी है।

वैशाली का सिंह सेनापति जब तक्षशिला में विद्याध्ययन के लिए रवाना हुआ तो पश्चिम दिशा में मही को पारकर फिर दक्षिण दिशा में घूम गया। नाव द्वारा थोड़ी दूर की यात्रा करने पर वह गंगा में पहुंच जाता है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि गंडक और मही एक ही नदी का पुराना नया नाम है। पुराणों में गंडकी नदी का वर्णन आया है, परन्तु ऋग्वैदिक युग में गंडक नाम की किसी नदी का उल्लेख नहीं किया गया है, और न इसी का उल्लेख है कि गंडक-गंगा में मिलती है। प्राचीन आर्यों को गंगा गंडक के संगम तक का ज्ञान नहीं था।

पुण्य सलिला 'गंडकी की उत्पत्ति' के संबंध में बाराह पुराण में कथा है कि विष्णु की घोर तपस्या के फलस्वरूप उनके गंडस्थान (कपोल) से स्वेद उत्पन्न हुआ। वही स्वेद रूपी जल जगत में गंडकी नाम से विख्यात हुआ। शिला रूप होकर पुत्रवत् भगवान विष्णु गंडकी

के गर्भ में सदा निवास करते हैं। इसलिए इसका दूसरा नाम शालिग्रामी भी है। विष्णु से ही संबंधित होने के कारण इसका एक नाम नारायणी भी है। गंडकी नदी लगभग चार सौ मील बहने के बाद यहां गंगा की मुख्यधारा में आकर मिल गयी है इसीलिए कहा गया है कि हरि के गण्डस्वेदोद्भव गंडकी और हर का जटा प्रसूत गंगा का मिलन जिस स्थल पर हो उससे बढ़कर पृथ्वी पर दूसरा पुण्यस्थल हो नहीं सकता।

कुछ ऐसे श्लोक भी मिलते हैं, जो गंगा-गंडकी संगम पर हरिहर क्षेत्र की स्थिति बतलाते हैं—

“गंडकी गंगायोर्मध्ये, क्षेत्रं हरिहराभिधम।

तत्र स्नात्वा जलं पीत्वा, नरो नारायणो भवेत्॥”

गंगा की उत्पत्ति भी इसी में वर्णित है—“वैसाखे मासि शुक्लायां, तृतीयायां-नृपोत्तम। ब्रह्म लोका त्रिपथगा, पृथिव्यां भवतारिता॥” वाल्मीकि रामायण के मुताबिक पर्वतों के राजा हिमवान की दो कन्याएं थीं। हिमवान की ज्येष्ठ पुत्री का नाम गंगा तथा छोटी पुत्री का नाम उमा थी। देवताओं ने देवकार्य सिद्धि हेतु हिमवान से गंगा जी को मांग लिया तथा स्वर्ग ले गये। दूसरी तरफ उमा की शादी भगवान रुद्र से कर दी गयी। आगे चलकर स्वर्ग से त्रिपथगा नदी के रूप में गंगा धरती पर अवतीर्ण हुई।

“पूर्व जन्म सहस्रेषु पुत्रत्, पापं समुपार्जितम्। एकेन मन्त्रजेनाशु, दहे तूलस्य राशिवत्॥” हजारों जन्म का उपार्जित पाप एक बार स्नान करने से रुई की राशि के समान भस्म होता है। ऐसी प्रसिद्धि गंगा-गंडक पर संगम स्थान की है। “स्नान, दान, जपं, स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। जागरं तलयः कुर्यात् सोनन्त फल माप्नुयात्। नेदृश्य दान-सम्मानं गयायां न च याजनात्। यादृश कलि कालेतु, हरिहर क्षेत्र संगमे। गया और प्रयाग की तरह हरिहर क्षेत्र संगम को उपरोक्त श्लोक में सिद्ध किया गया है।

—‘आज’, पटना, शनिवार,

23 नवम्बर, 1996



यहीं रावण ने पर्वत को छेदा

हरिहर क्षेत्र क्या है और कहां स्थित है? इस विषय पर एक मात्र साक्ष्य श्रद्धा एवं विश्वास है। इतिहास और पुराण स्पष्ट स्थिति तय नहीं करता। परन्तु कतिपय पुराणों एवं जनश्रुतियों में हरिहर क्षेत्र की प्रतिष्ठा किसी दूसरे हिन्दू तीर्थ से कम नहीं आंकी जाती। वस्तुतः हरिहर क्षेत्र है जहां शालंकायन ऋषि ने तप किया था। इसका पूर्व नाम शालग्राम क्षेत्र तथा सोमेश्वर क्षेत्र भी है।

सोमेश्वर के दक्षिण नर्तनाचल पर स्थित वाणेश्वर लिंग है। वहां एक बार रावण ने वाण से पर्वत का छेदन किया तो अतिपवित्र जलधारा का प्रादुर्भाव हुआ था जो वाणगंगा के नाम से प्रसिद्ध है। उसी के समीप शालंकायन मुनि ने ईश्वर (शिव) तुल्य पुत्र प्राप्त करने के निमित्त घोर तप किया। तब नन्दीश्वर ने प्रकट होकर कहा—

उतिष्ठ मुनि शार्दूल सफलस्ते मनोरथः।

त्वद् दक्षिणां गाज्जतोऽस्मि पुत्रस्ते शाधिमां प्रभो॥

किन्तु मुनि देख न सके कि भगवान शिव उनके पुत्र के रूप में स्थित हैं और नन्दीश्वर को उन्होंने आज्ञा दी कि वह उनके शिष्य आमुष्यायण को मथुरा से बुला लावे। आमुष्यायण गुरु की आज्ञा पा सभी गो-धान के साथ गंडकी तीर पर उनके पास पहुंचे और तभी इनका नाम हरिहर क्षेत्र पड़ा। यथा—

“गोधानान्यग्रतः कृत्वा हरिक्षेत्र जगामह।

हरिणधिष्ठितं क्षेत्रं पूजनीयं ततः स्मृतम्॥” 163

यदा नन्दी शूलपाणि गोर्धने न पुरस्कृतः।

स्थितवांस्तदिदतनादेतख्यातं हरिहर प्रममा॥164

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 55

बराहपुराण देवताओं के प्रमण से यह 'देवाट' भी कहलाता है—
'देवनाभटनाश्चैव देवाट इतिह संज्ञितम्।'

वाराह पुराण के अनुसार हरिहर क्षेत्र का विस्तार चारों दिशाओं में द्वादश-द्वादशवा योजन पर्यन्त बतलाया गया है। वर्तमान समय में एक योजन चार कोसों (आठ मील) का माना जाता है। यह आवश्यक नहीं कि उस काल में भी एक योजन 1760 x 2 x 4 गज का होता होगा। सोमेश्वर लिंग जो अभी नेपाल में है, से 12 योजन के अन्तर्गत यदि वर्तमान सोनपुर को मान लिया जाय तो काम चल जायेगा। इन्हीं तथ्यों के आधार पर कहा गया है कि 'शालिग्राम से उत्तर और हिमालय के दक्षिण की पृथ्वी महाक्षेत्र' है। शालिग्रामी तथा गंगा का संगम होने एवं महाक्षेत्र का अंतिम भाग होने के कारण ही यहां 'हरिहर' की स्थापना हुई।

हरि के गण्डस्वेदोद्भव गंडकी और हर की जटा प्रसूत गंगा का मिलन स्थल होने के कारण भी 'हरिहर क्षेत्र' की प्रसिद्धि अधिक हुई। शैव एवं वैष्णव सम्प्रदयों की एकता एवं आपसी सुलह स्थल होने की आधुनिक मान्यता भी हरिहर की स्थापना तथा हरिहर क्षेत्र की प्रसिद्धि को बल प्रदान करता है।



कांवरियों ने लगायी दक्षिणी वाहिनी गंगा में डुबकी

सारण जिले के सोनपुर अंचल के प्रसिद्ध पहलेजा घाट पर शुक्रवार को हजारों कांवरियां तीर्थयात्रियों ने दक्षिणीवाहिनी गंगा नदी की पवित्र जलधारा में डुबकी लगायी। शिव-गंगा धाम में तब्दील पहलेजा धाम भोले नाथ शिव और देवी गंगा के सुयश गान से गूंज रहा है। बिहार के बंटवारे के बाद वैद्यनाथ धाम झारखंड राज्य में चला गया तब से पहलेजा-गरीबनाथ कांवर यात्रा का शुमार बिहार के सबसे बड़े कांवर यात्रा के रूप में होने लगा है। हालांकि बिहार के इस बड़ी कांवर यात्रा को सुव्यवस्थित स्वरूप देने के लिए राज्य सरकार ने आज तक कोई ठोस कदम नहीं उठाये हैं जिसका साक्षात् प्रमाण है पहलेजा घाट से हाजीपुर तक के पथों का अंधकार में डूबा होना। पहलेजा घाट रेलवे प्लेटफार्म भले ही जर्जर, ध्वस्त व विरानगी का शिकार बना दी जा चुकी है। परंतु तीर्थयात्रियों ने इसे आबाद कर दिया है। यही हालत बदहाल बिहार राज्य पथ परिवहन निगम के टिकट काउंटर के पास की है। यहां भी जिधर देखो उधर ही शिव नाम संकीर्तन जारी है। शिव नगरिया मे जाने वाले कारवां में शामिल बूढ़े भी हैं, जवान भी, किशोर भी व अधेड़ भी। पिछले 30 वर्षों से लगातार पहलेजाघाट से कांवर में जल उठाकर बाबा गरीबनाथ पर जलाभिषेक करने जाने वाले छपरा के मौना चौक के राजेन्द्र साह बताते हैं कि राज्य के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि प्रतिवर्ष लाखों कांवरिया पहलेजा घाट पर आकर स्नान पूजन व कांवर में जल उठाकर मुजफ्फरपुर स्थित बाबा गरीबनाथ का जलाभिषेक करते हैं बावजूद बिहार सरकार द्वारा इस यात्रा को राजकीय संरक्षण नहीं देना दुखद है। न घाट निर्माण किया जा सका है और न ही धर्मशाला का निर्माण। सारी व्यवस्थाएं परंपरा निर्वाह तक सीमित है।□

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 57

स्वर लहरियों के बीच गुजर गई रात

सोनपुर में लोक सेवा आश्रम के प्रेक्षागृह में 61वां शास्त्रीय संगीत, नृत्य एवं वाद्य संगम संपन्न हुआ। संगीत, नृत्य और गायकी स्वर लहरियों के बीच कब रात गुजर गयी, पता नहीं चला।

सरोद वादक शिवदास चक्रवर्ती, कलकत्ता एवं तबलावादक गोकुल मिश्र, आकाशवाणी, पटना के बीच जमकर प्रतियोगिता हुई। लोग वाह-वाह कर उठे। सीवान निवासी रामप्रकाश मिश्र ने शास्त्रीय गायन ख्याल के माध्यम से लोगों को अनुरंजित किया। काष्ट तरंग वादक रामरूचिदेव भण्डारी के साथ की। तबला वादक त्रिलोक कपूर ने वादन श्रोता-दर्शकों को झूमा दिया। लकड़ी पर ठोकर मारकर संगीत ध्वनि निकालना इस कला की विशेषता ने भंडारी की प्रशंसा के फूल बिखेर दिये। गायन एवं गजल का भी दौर चला। कुछ क्षण लोग शास्त्रीय संगीत की दुनिया से हटकर महम्मद असलम, गायन, बेतिया एवं गजल गायक ओमप्रकाश सिंह, दरभंगा के गानों का रसास्वादन भी किया। हालांकि इस मंच की प्राचीन परम्परा इसकी इजाजत नहीं देती।

इलाहाबादी सितार वादक शिवनाथ मिश्र एवं सरोद वादक विकास कुमार अपने-अपने वाद्य यंत्रों से खूबसूरत युगलबंदी पेश कर लोगों को आकृष्ट करने में सफल रहे। इनके साथ भारत प्रसिद्ध तबला वादक, वाराणसी के ईश्वरीलाल ने संगत की।

वाराणसी की कत्थक नृत्यांगना श्रीमती मधु मिश्रा एवं श्री रविशंकर, ने युगल नृत्य प्रस्तुत कर मंच की गरिमा को बढ़ाया। विशेष उल्लेखनीय बात यह रही कि इस दौरान भारत विख्यात वाराणसी के

नृत्याचार्य पं. दुर्गालाल भी दो आदमियों के सहारे मंच पर आये। 85 वर्षीय पं. दुर्गालाल के मुख से बोल फूट पड़े। वयोवृद्ध नृत्याचार्य जोश में कभी-कभी 'बोल' का उच्चारण करते खड़े हो जाया करते। इनके साथ तबले पर पं. ईश्वरीलाल अच्छे वादन के बावजूद कुछ-कुछ फीके लगे। हारमोनियम पर साथ दे रहे थे श्री त्रिलोकी नाथ मिश्रा भाव नृत्य के दरम्यान गाते हुए उनकी आवाज दर्शक-श्रोताओं के द्वारा सराही गयी। साथ में पटना के सारंगीवादक मुहम्मद अनवर ने भी अपने सफल वादन से सराहनीय सहयोग दिया।

कथक नृत्य पर आधारित भावनृत्य जो मधु मिश्रा और रविशंकर मिश्रा ने प्रस्तुत किया। उनमें 'माखनचोर', 'चीरहरण' इत्यादि का सफल प्रस्तुतीकरण हो सका। कथक नृत्य की दुनिया से लुप्त हो रहे कुछ अनमाल बोल पर मधु मिश्रा एवं रविशंकर मिश्रा ने जो नृत्य प्रस्तुत किया वह आज कल के सभी शास्त्रीय, नृत्य के जानकारों के लिए अनुकरणीय है।

भाव नृत्य के द्वारा शिव नृत्य का प्रदर्शन भी इन कलाकारों ने किया। लगा कि प्रेक्षागृह पंडाल में कोई भी दर्शक नहीं बल्कि सभी कलाकार उपस्थित है। वाराणसी से आये एशिया प्रसिद्ध मिश्र बन्धु अमरनाथ पशुपतिनाथ ने युगल बन्दी में राग 'अहिर भैरव' प्रस्तुत किया। आखिरी में 'राग भैरवी' के साथ कार्यक्रम का समापन किया। प्रथम बार मंच को डॉ. अशोक कुमार 'गौतम' ने उद्घोषक के रूप में संभाला।



हरिहर क्षेत्र में पुरातात्विक खजाना, खुदाई के प्रति सरकार उदासीन

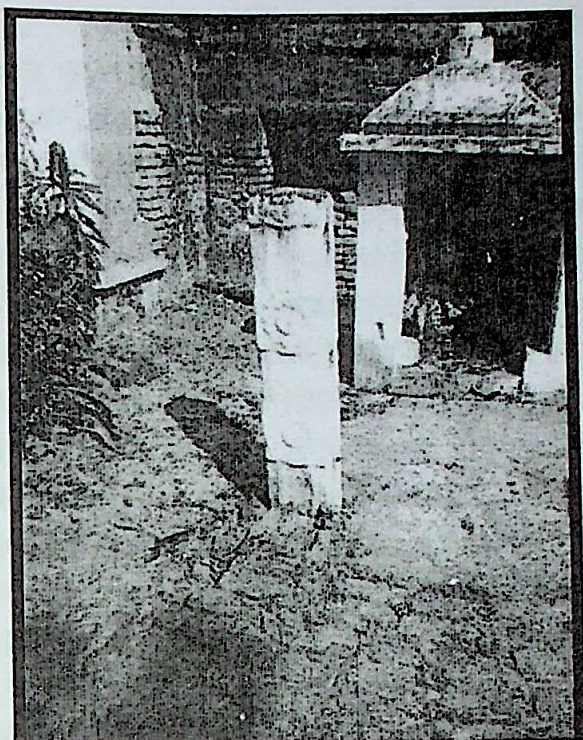
हरिहर क्षेत्र सोनपुर में पुरातत्व का खजाना दबा पड़ा है जिसे उजागर करने की जरूरत वर्षों से महसूस की जा रही है। पुरातत्व विभाग के वर्तमान निदेशक डॉ. अजय कुमार सिन्हा से लेकर काली प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा सहित राज्य के लब्ध प्रतिष्ठित पुरातत्ववेत्ताओं, इतिहासकारों ने अपने सोनपुर दौरे के क्रम में सर्वेक्षण एवं संगोष्ठियों के माध्यम से एक मत एवं एक स्वर में इस क्षेत्र की प्रधानता को स्वीकार करते हुए पुरातात्विक स्थलों के उत्खनन की आवश्यकता पर बल देते हुए आवाज बुलंद की थी। परन्तु एक वर्ष बीत गया इस पुरातात्विक खुदाई की सुगबुगाहट दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही है।

बीते 30 अक्टूबर को सोनपुर स्थित रेलवे अधिकारी क्लब में सारण प्रमण्डल के आयुक्त जे.एल. मीणा की अध्यक्षता में 'हरिहर क्षेत्र' सोनपुर मेले की पुरातात्विक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्ता विषयक संगोष्ठी में राज्य के वरिष्ठ पुरातत्ववेत्ता डॉ. बी.पी. सिन्हा, शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा, पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. बी.पी. राय, पूर्व अध्यक्ष डॉ. भगवान सहाय आदि दर्जनाधिक्य वक्ताओं ने अपने सहकर्मियों पुरातत्व संरक्षण पदाधिकारी सहिदेव कुमार, छाया चित्रक संजीव रंजन एवं हरिहर क्षेत्र कला संस्कृति सम्बर्द्धन परियोजना के अध्यक्ष ए.के. शर्मा, हरिहर क्षेत्र स्मृति मंजूषा के सम्पादक बी.एन. सिंह एवं हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला समिति के गैर सरकारी सदस्य उदय प्रताप सिंह के साथ

60:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

सोनपुर के पुरातात्विक स्थलों का गहन सर्वेक्षण किया था।

सर्वेक्षण में कालीघाट के ऊंचे टीले पर खाकी चौक ठाकुरबाड़ी में शुंगकालीन लाल बलुआही पत्थर 'रेलिंग स्टोन' का पता चला जो बोध गया, पाटलिपुत्र, मध्य प्रदेश (सांची) का प्रतिरूप है। जबकि



आज से 50 वर्ष शुंगकालीन वैदिक स्तंभ (पुरातात्विक धरोहर) पूर्व सोनपुर से प्रकाशित 'आभा' सोनपुर अंक जिसमें महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने आरंभ में ही लिखा है कि सोनपुर के काली मंदिर में शुंगकालीन एक पाषाण स्तंभ है, जो वहां के इतिहास के 21 सौ वर्ष पूर्व तक ले जाता है। कुआं खोदने, नींव तैयार करने, बरसात के बाद पुराने काल की चीजें बाहर आती हैं। टूटी-फूटी मूर्तियों से भी यहां के इतिहास की प्राचीनता स्पष्ट झलकी है। मटमैले चुनारवाले पत्थर गुप्तयुग (ई. 5वीं सदी) के साक्षी है। यहां पर यत्र-तत्र मिलने वाले काले पत्थर पाल-युग के हैं। देवपाल के समय के काले पत्थरों की मूर्तियां विशेष रूप से निर्मित होती हैं। शुंग-कालीन रेलिंग-स्टोन के बाद सोनपुर में मिली दूसरी बड़ी मूर्ति को पुरातात्विक निदेशक डॉ. अजय कुमार सिन्हा ने इसे हरिहर क्षेत्र सोनपुर की दूसरी बड़ी सांस्कृतिक धरोहर की मान्यता दी। यह अद्भुत मूर्ति 5वीं शताब्दी की है। फिलहाल यह मूर्ति हरिहरनाथ मंदिर के महंत अवध किशोर गिरि के पास सुरक्षित है। यह

‘सैंड-स्टोन’ की बना हुई है।

हालांकि संगोष्ठी में ‘गज-ग्राह्य युद्ध स्थल’ विवाद का विषय बना रहा। पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन भारत के इतिहास विभाग के अध्यक्ष एवं पटना विश्वविद्यालय के कुलपति के प्रतिनिधि की हैसियत से उपस्थित डॉ. बी.पी. राय ने कहा कि गज-ग्राह युद्ध स्थल आज भी शोध का विषय है। यहीं पटना विश्वविद्यालय इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. भगवान सहाय ने सोनपुर में मिली प्राचीन गज-ग्राह युद्ध की प्रतिमा की जांच पर जोर दिया। उनके मुताबिक बिहार में इस तरह की कोई प्राचीन प्रतिमा नहीं मिली है। यह देखना जरूरी है कि यहां ग्राह की आकृति है या अन्य पशु की। उनका कहना था कि ग्राह की परिकल्पना जो कहानियों में मिलती है—उसका समीकरण मगर लिया गया है। झांसी जिले के देवगढ़ में ‘दशावतार मूर्ति’ है। वहां गजेन्द्र मोक्ष की आकृति बनी हुई है। यहां भगवान श्री विष्णु को आकाश में गरुड़ पर आसीन होकर नीचे की ओर आते दिखाया गया है। हाथी ऊपर की ओर सूढ़ उठाये हुए है। लेकिन ग्राह के स्थान पर यहां नागदेवता की आकृति प्रमाण की मुद्रा में स्थापित है। ऐसे में अगर सोनपुर में मिली ‘गज-ग्राह युद्ध’ की स्मृति को दर्शाती प्राचीन प्रतिमा मिली है और वहां जांच में खड़ी उतरती है तो यह पुरातत्व तथा सोनपुर के इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धि सिद्ध होगी।

सर्वेक्षण में चिड़ैयामठ के मही नदी किनारे की प्राचीन दीवारों को मुस्लिम कालीन बताया गया। दीवार लखौड़ी ईंटों से बनी है जिसपर बाघ, मृग, मछली, मोर के धुंधले चित्र अब भी उत्कीर्ण दिखायी पड़ते हैं। संभवतः 17वीं-18वीं सदी के हैं। इस मठ की दीवारों के बाहरी स्वरूपों को देखकर पुरातत्व संरक्षण पदाधिकारी सहदेव कुमार का मानना था कि यह मुस्लिम काल में कोई महत्वपूर्ण किला रहा होगा। दीवारों से लगी ईंटों का मुआयना करने के उपरांत पुरातत्व निदेशक डॉ. अजय कुमार सिन्हा ने कहा कि इसका बार-बार निर्माण हुआ है। मठ के अन्दर एक लकड़ी के तख्त पर खुदे बजरंगबली के चित्र को नीम की लकड़ी पर निर्मित बताया। यह डेढ़ फीट की है तथा प्राचीन भी है। मठ के भीतर और बाहर रखे चार प्रस्तर स्तम्भों को गुप्तकाल का उन्होंने

62:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

बताया। जनार्दन बाबा की समाधि स्थल पर बना मन्दिर एक मुखी शिवलिंग का मन्दिर भी मुस्लिम कला का नमूना है। गाई आखाड़ा स्थित जनार्दन बाबा की समाधि मन्दिर लखौड़ी ईंटों से निर्मित है।

इस समाधि स्थल से मही नदी किनारे पहलेजाघाट से हरिहर नाथ की ओर जाने वाली सड़क पर थोड़ा पूरब बढ़ने पर वह प्राचीन पुरातात्विक स्थल और उसका इलाका नजर आता है जहां खुदाई में पुरातात्विक वस्तुयें मिलने की संभावना पुरातत्व निदेशक ने व्यक्त की है। यह स्थल है बाबा बालानाथ तथा एकमुखी शिवलिंग क्षेत्र का सम्पूर्ण इलाका। यहां की एकमुखी शिवलिंग बदहाल और पुरातात्विक संरक्षा-सुरक्षा के अभाव में असुरक्षित भी। यहां की अद्भुत एकमुखी शिवलिंग पालकाल से भी पहले का है। श्री सिन्हा ने एक मुखी शिवलिंग मन्दिर को 'मुस्लिम आर्किटेक्चर' का उदाहरण बताया। इस मंदिर के भीतरी भागों का चित्रांकन पटना स्थित बैकटपुर के मन्दिर के चित्रांकन से मेल खाता है। यह मन्दिर भी बार-बार मरम्मत हुआ है। पुरातात्विक दृष्टि से इस एकमुखी शिवलिंग के भीतर दीवारों पर नाग, मोर, नारी का रंगीन चित्रांकन देखने को मिलता है। नारी की नाक में नथ अथवा नथिया है। भीतर ही गुम्बद के शीर्ष भाग में तंत्र बना हुआ है जिसमें 16 कमल दल उत्कीर्ण हैं। उसके अंदर भी 8 कमल दल हैं। मन्दिर के बाहरी दीवारों के चार कोणों पर चार देवता दिक्पाल के रूप में स्थित हैं। पूरब में हाथ में पताका लिये महावीर हनुमान, पश्चिम में कोई नाथ पंथी योगी, दक्षिण में मुरलीधर श्री कृष्ण तथा उत्तर दिशा में योग, ध्यान मुद्रा में लीन चर्तुभुज श्री गणेश जी हैं।

—'दैनिक जागरण', 'पटना आसपास'

4 अक्टूबर, 2000

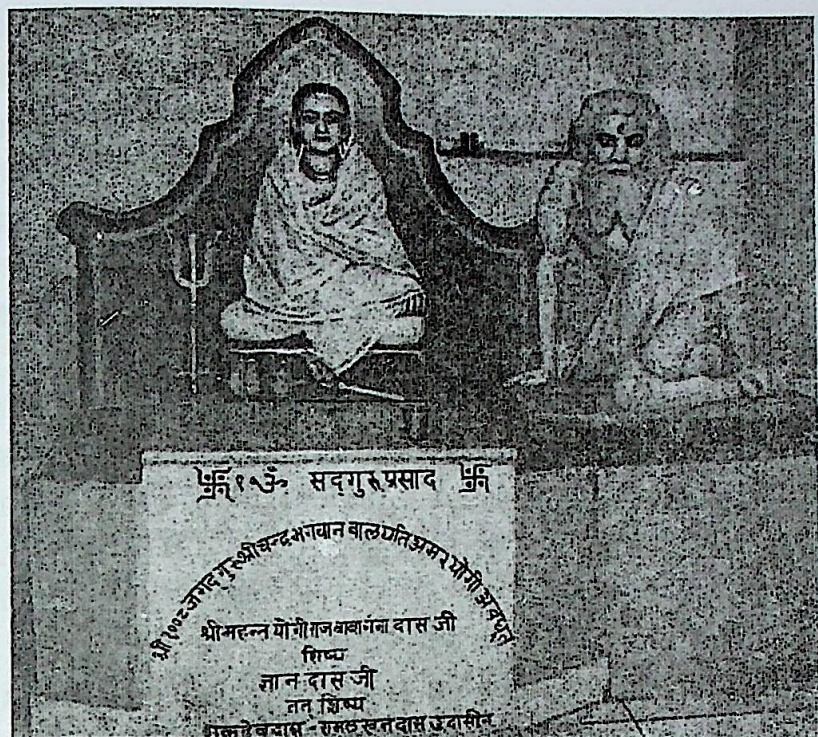


बाबा राम लखन दास

‘उठो-जागो गुरु भाइयों, धर दो कुछ दिन कंठी माला। दुश्मन चढ़ आया भारत पर, हाथ में ले लो राइफल भाला।’ सन् 1962 में जब चीन की लाल सेना ने भारत पर अकारण आक्रमण कर दिया, तब हाजीपुर कचहरी मैदान की एक सभा में सोनपुर स्थित लोक सेवा आश्रम के संस्थापक संत बाबा राम लखन दास ने यही उद्घोषणा की थी। इस उद्घोषणा में सिंह गर्जना का समावेश था जिसने कायरों को भी पुरुषत्व से भर दिया। सात अगस्त उन्नीस सौ उनहत्तर की रात्रि सोनपुर की धरती के लिये कालरात्रि बनकर आयी। किसी आततायी ने बाबा राम लखन दास की हत्या कर दी। बाबा शहीद हो गये। परन्तु कलाकारों की वाणी में बाबा आज भी जीवित हैं।

भारत का कण-कण सुबक उठा। जो सुना वही रो पड़ा। सुगम, शास्त्रीय नृत्य, गीत एवं संगीत से जुड़ी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हस्तियां भी विलख उठीं। क्योंकि स्व. संत बाबा राम लखन दास सिर्फ संत ही नहीं बल्कि वे समाजसेवी, देशभक्त क्रांतिकारी भी थे। इन्होंने ही सर्वप्रथम सन् 1945 में सोनपुर में संगीत की अखंड ज्योति जलायी थी। अखिल भारतीय संगीत समारोह का आयोजन प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दो दिन बाद यानी भाद्रपद दशमी को बड़े धूम-धाम से संपन्न होता था—परन्तु इनकी शहादत ने कलाकारों को हिला दिया। 6 सितम्बर 1969 भाद्रपद कृष्ण पक्ष दशमी की रात्रि का अंतिम प्रहर। लोक सेवा आश्रम का कला मंच (प्रेक्षा-गृह)। अचानक विश्व प्रसिद्ध शहनाई सम्राट बिस्मिल्ला खां की शहनाई दर्द बिखेरती गूँज उठती है—‘दिल का खिलौना हाथ टूट गया... कोई लुटेरा आके लूट गया...।’

64:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला



स्व. रामलखन दास

स्व. संत बाबा राम लखन दास के संबंध में उनके शिष्य व लोक सेवा आश्रम के व्यवस्थापक संत रामदास उदासीन के अनुसार स्व. संत बाबा रामलखन दास का शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखेदव जैसे क्रांतिकारियों से रिश्ता था। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जब कभी उलझनों में उलझकर अशांत होते—लोक सेवा आश्रम आकर अक्सर बाबा से मिलते थे। उन्हें यहां अटूट शांति मिलती थी। सन् 1962 के भारत पर चीनी आक्रमण के दौरान देश के सुरक्षा कोष में दस हजार रुपये प्रदान कर बाबा राम लखन दास ने राष्ट्रभक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण पेश किया था। इनका जन्म 1888 ई. में रानीपुर, झांसी (उ.प्र.) में हुआ था। इनके बचपन का नाम पंडित लक्ष्मण अरजरीया था तथा इनके पिता पंडित कालुराम शास्त्री थे। गौर ब्राह्मण कुलवत्स थे। बाबा राम लखन दास की शहादत ने कलाकारों की बाबा की पुण्य तिथि 7 अगस्त के अवसर पर संगीत-समारोह आयोजित करने

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 65

की प्रेरणा प्रदान की।

सन् 1969 के उसी श्रद्धांजलि, संगीत समारोह में पद्मश्री बिस्मिल्ला खां, शहनाई सम्राट एवं तबला सम्राट पं. किशनजी महाराज ने सर्वसम्मति से फैसला लिया कि प्रतिवर्ष की भांति इस पारम्परिक संगीत सम्मेलन को अगले बार से बाबा राम लखन दास के शहादत दिवस पर मनाया जाय एवं इस स्मृति एवं श्रद्धांजलि सभा में हिन्दुस्तान के तमाम कलाकार निःशुल्क श्रद्धांजलि समर्पण करेंगे। इस कला मंच पर अब तक शहनाई सम्राट बिस्मिल्ला खां, तबला सम्राट पद्मश्री पं. किशनजी महाराज, तुमरी गायिका श्रीमती बृजवाला देवी, पं. कंठेजी महाराज, तबला, पं. अनोखेलाल, तबला, अलखनंदा, नृत्यांगना, रौशन कुमारी, कथक नृत्यांगना, पं. शांता प्रसाद, तबला, सी. रामचन्द्र, संगीत निर्देशक, उस्ताद बड़े गुलाम अली खां, पद्मश्री डा. बी.जी. जोग, वायलीन वादक, पद्मश्री गोपाल प्रसाद मिश्रा, सारंगी वादक, माया चटर्जी, नृत्यांगना, पद्मश्री पं. सियाराम तिवारी, पं. श्यामदास मिश्रा, पं. कृष्णा जी महाराज, नृत्य निर्देशक, विरजू महाराज, कपूर मिश्र, अनोखे लाल जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों ने निःशुल्क सेवा की है।

बाबा राम लखन दास को अपनी जन्म भूमि से गहरा लगाव था। जो इनकी वार्ताओं के क्रम में परिलक्षित हुए बिना नहीं रह पाती थी। कहते—‘मैं वहां का रहने वाला हूं जहां की एक छोकरी ने सारी दुनिया को हिला के रख दिया था।’ जब वे क्षुब्ध होते तो आक्रोशपूर्ण लहजे में कहते कि ‘दरियाई नारियल (कमंडल) से बूंद जल छिड़क दूंगा तो तुम्हारा सर्वनाश हो जायेगा। ‘महज एक लंगोटी एवं एक कमंडलधारी इस संत में वह कौन सी सिद्धियां थी कि राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों ने सोनपुर में निःशुल्क आकर माथा टेका तथा अपनी कला साधना की परीक्षा दी? आज भी कौतुहल का विषय है और आगे भी रहेगा।

—‘आज’ पटना, 13 अगस्त, 1998



66:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

संत रामलखन दास की पुण्यतिथि पर आयी कलाकारों की याद

अखिल भारतीय 64वां शास्त्रीय संगीत, वाद्य एवं नृत्य महोत्सव 7 अगस्त को सारण जिले के सोनपुर के लोकसेवा आश्रम के प्रेक्षा-गृह में संपन्न हुआ। इसके साथ ही उन कलाकारों की यादें भी ताजी हो गयी जिन्होंने बिहार के इकलौते इस मंच पर गरिमा के साथ अपनी संगीत साधना के द्वारा इसको पुष्पित-पल्लवित करने का काम किया था। इस प्रेक्षा-गृह के मंच पर पिछले 64 वर्षों से देश के राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शास्त्रीय संगीत, वाद्य तथा नृत्य में दक्ष कलाकारों ने आकर निःशुल्क कार्यक्रम प्रस्तुत किया और यह सिलसिला आज भी जारी है।

अब तक शास्त्रीय नृत्य, संगीत एवं वाद्य की बड़ी-बड़ी हस्तियों के तबले की थाप पर नृत्य, गायन व शहनाई की धुन पर अपनी कला साधना का यहां अप्रतिम परिचय दिया जिसकी अनुगूंज अब भी यहां के वातावरण में सुनाई पड़ती है।

यहां आने वाले कलाकार बड़े हो या छोटे, सभी संत बाबा स्व. रामलखन दास को अपनी कला साधना का परिचय देते नहीं अघाते। सभी बाबा का आशीर्वचन की ख्वाहिश रखते हैं और भाव रहता है समर्पण का।

लोक सेवा आश्रम के संस्थापक संत बाबा रामलखन दास ने ही अपने आश्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारंभ किया था। वर्तमान प्रेक्षागृह बनने से पूर्व आश्रम के भीतर जगत पर ही शास्त्रीय संगीत, नृत्य-संगीत एवं वाद्य का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। पद्म विभूषण से सम्मानित पं. किशन जी महाराज, तबला, वाराणसी के फूफेरे भाई प्रसिद्ध कथक नर्तक पं. जोखू महाराज ने इस मंच पर 35 वर्ष तक नृत्य किया था परन्तु सात अगस्त 1969 को बाबा रामलखन दास की आश्रम में हत्या के बाद उनकी पुण्यतिथि पर यह कार्यक्रम होने लगा। कथक नर्तक जोखू महाराज, ठुमरी गायिका बृजवाला देवी, वज्जन खां, गायक,

मुजफ्फरपुर, खुनू मिश्र, तबला वादक आजमगढ़ के एक साथ 1942-43 में सांस्कृतिक कार्यक्रम पहली बार शिरकत की थी। सारंगी वादक मुजफ्फरपुर के नसीरुद्दीन थे। पं. किशन जी महाराज के पिता कण्ठे महाराज, तबला, वाराणसी, जोखू महाराज के छोटे भाई सामता प्रसाद उर्फ गोदई महाराज, तबला, दिल्ली, सितारा देवी वाराणसी, अलका नंदा देवी नृत्य एवं तारा देवी गायिका वाराणसी ने भी अपनी कला साधना का परचम यहां लहराया। तारा देवी के प्रसिद्ध नर्तक पुत्र गोपी कृष्ण ने बचपन में इस मंच पर मां के साथ आकर नृत्य किया। भारत रत्न शहनाई वादक बिस्मिल्ला खां तो इस मंच के बाद में अध्यक्ष भी बन गये। पद्म विभूषण से सम्मानित पं. किशन जी महाराज भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में संस्थापक सदस्यों में से हैं। बाबा रामलखन दास के शिष्य परंपरा की सुशीला देवी, बृजबाला देवी मुजफ्फरपुर का नाम तो भुलाया ही नहीं जा सकता। कोलकाता की प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना सुश्री माया चटर्जी तो इस मंच की जान ही थी।

6 सितम्बर 1969 को इस कला मंच पर एक साथ पद्म श्री से विभूषित ख्याति प्राप्त कलाकारों ने जुटकर बाबा रामलखन दास को श्रद्धांजलि दी। पद्मश्री किशन जी महाराज, डॉ. बी.जी. जोग वायलीन, गोपाल प्रसाद मिश्र, सियाराम तिवारी के अतिरिक्त कोलकाता की प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना सुश्री माया चटर्जी, प्रसिद्ध नृत्य निर्देशक पं. कृष्णा जी महाराज, विरजू महाराज, बृजवाला देवी, कपूर महाराज, बज्जन खां आदि शामिल थे।

बिहार के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ब्रह्मनाद गायक इस मंच के आधार प्राण ही हैं। इसके अतिरिक्त बड़े गुलाम अली खां लाहौर जो कोलकाता में थे, ने भी इस मंच पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मधु मिश्रा, कथक नृत्यांगना, वाराणसी, जयंती मुखर्जी, कोलकाता, अर्जुन महाराज, आदि सैकड़ों ऐसे नाम हैं जो एक-से-बढ़कर एक हैं जिन्होंने यहां आकर अपनी श्रद्धांजलि दी। बिस्मिल्ला खां यहां अपनी के शहनाई पर यह गीत बजाना जरूरी समझते रहे—‘दिल का खिलौना हाथ टूट गया, कोई लुटेरा आके लूट गया’।

—‘दैनिक जागरण’, ‘अपना प्रदेश’, 9 अगस्त, 2004



68:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

पुरातत्ववेत्ताओं की नजरों से ओझल कालरात्रि स्थान

सारण जिले का एक ऐतिहासिक स्थल 'सारणगढ़' एवं पौराणिक कालरात्रि-स्थान पुरातत्ववेत्ताओं की नजरों से ओझल एवं उपेक्षित है। गढ़-स्थल की खुदाई और शोध की जरूरत है। यहां प्राचीन इतिहास का निधियां छिपी हुई हैं।

पूर्वोत्तर रेलवे के सोनपुर मंडल अन्तर्गत नयागांव रेलवे स्टेशन से करीब दो किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम महीनदी किनारे पंचायतराज डुमरी बुजुर्ग में 'सारण गढ़' एवं पौराणिक 'काल रात्रि' स्थान अवस्थित है। यहां के मूल निवासी कर्मवाड़ क्षत्रिय हैं तथा उनके गोत्र भारद्वाज हैं। यहां निवास करने वाले ब्राह्मण परिवारों के भी यही गोत्र हैं।

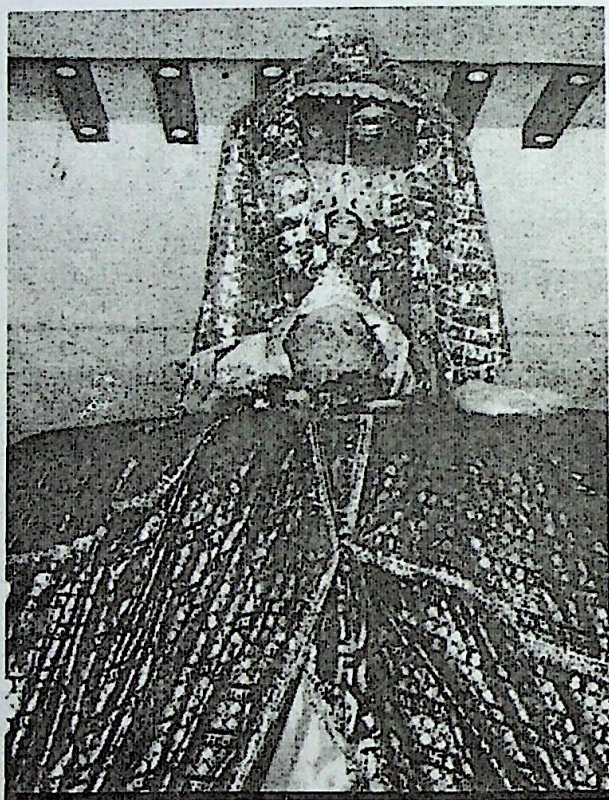
सारणगढ़ के निवासी होने के कारण यहां के क्षत्रियों को 'सरनीहां राजपूत' भी कहा जाता है। इस गढ़ की पूर्व में ग्रामीणों द्वारा की गयी खुदाई के दौरान महात्मा बुद्ध की संगमरमर की एक मूर्ति निकली, बहुत ही सुन्दर, जिसे उस गांव के एक ठाकुरबाड़ी में प्रतिष्ठित कर मूर्ति को भ्रमवश ठाकुर जी 'विष्णु' मानकर लोग पूजा-अर्चना करते हैं।

उस मूर्ति में महात्मा बुद्ध की योग-मुद्रा है। मूर्ति के प्रस्तर-आसान पर पाली-भाषा अथवा अन्य प्राचीन भाषा में कुछ लिखा हुआ है जो अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। 10, 11 एवं 12 जून को नयागांव थाने के इस ऐतिहासिक स्थल के दौरे और स्थल-निरीक्षण एवं वहां के बुद्धिजीवियों से मिली जानकारी के मुताबिक डुमरी बुजुर्ग गांव के

सारण-गढ़ निवासी राम सहाय सिंह के घर निर्माण के दौरान धरती के गर्भ से प्राचीन काल का विशाल भारी-भरकम एक जोड़ी जाता तथा एक हांडी जिसमें बालू था—निकला था।

उक्त जाते की परत काफी मोटी है। जो अब बर्तन इत्यादि मांजने के काम में आता है। गढ़ के ही एक अन्य स्थान की खुदाई के दौरान शिव-पार्वती की युग्म मूर्ति जो प्राचीन है—निकली थी—जिसे निकट के एक मन्दिर में ग्रामवासियों ने प्रतिष्ठित कर उसकी सुरक्षा-संरक्षा की है। आजकल 'सारणगढ़' असुरक्षित है। इस गढ़ पर 'गढ़' होने के कोई प्राचीन चिह्न मौजूद तो नहीं है, परन्तु मही नदी किनारे एक ऊँचे टीले पर सारण गढ़ के अवस्थित होने तथा खुदाइयों के दौरान निकलनेवाली प्राचीन वस्तुओं ने अनायास लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है। इस गांव के बड़े-बुजुर्गों के मुताबिक सारण गढ़ के एक बड़े हिस्से पर ही 'डुमरी बुजुर्ग' गांव अवस्थित है। आज सिर्फ उसका मूल हिस्सा बचा-खुचा संकीर्ण रूप में 'सारण गढ़' के रूप में दृष्टिगोचर होता है।

सारणगढ़ में ही मही नदी किनारे श्री काल रात्रि देवी का स्थान अवस्थित है। इसे सिद्ध स्थल भी कहा जाता है। डुमरी-बुजुर्ग के भारद्वाज गोत्रीय



कालरात्रि स्थान, डुमरी बुजुर्ग नयागांव

70:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

अवकाश प्राप्त शिक्षक पं. गाकुलानंद मिश्र से उनके आवास पर कड़ी दुपहरी में भेंट होती है—जो अपने युवा पुत्र के गायब हो जाने के कारण कई माह से गमगीन हैं—बावजूद इसके उन्होंने 'कालरात्रि' के संबंध में काफी जानकारी हासिल करने में मदद की। श्री मिश्र के पिता स्व. कृष्णानंद मिश्र ने वर्ष '81 के 30 मार्च को 'श्री कालरात्र्यै नमः' नाम से अपनी पद्यात्मक रचना में 'कालरात्रि' के महत्व पर प्रकाश डाला है। देवी दुर्गा के सातवें रूप को 'कालरात्रि' कहा जाता है। दुर्गासप्तशती में वर्णित रात्रि-सूक्तम् एवं प्राधानिक रहस्यम् के अनुसार कालरात्रि ही योगमाया या योग निद्रा है जिसका वर्णन श्रीमद्भागवत में भी है। देवी दुर्गा के कालरात्रि के रूप में ही रक्तबीज नामक राक्षस का शोणित पान कर उसका बध किया था। श्री मिश्र के मुताबिक श्री कालरात्रि देवी की वैष्णवी पूजा भारत में प्रधानतः तीन जगहों, काश्मीर, राजपूताने एवं सारण गढ़ (डुमरी बुजुर्ग) में होती है।

कालरात्रि स्थान एवं सारण गढ़ से सम्बन्धित कई लोकोक्तियां यहां प्रचलित हैं। परन्तु, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस क्षेत्र का विशेष महत्व है। दसवीं शताब्दी के अन्त एवं ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक दौर में जब मुसलमानों का आक्रमण पश्चिमी भारत पर हुआ तो राजस्थान एवं जयपुर इत्यादि से बहुत से लोग पूर्वी भारत में आने लगे। उसी में कर्नावाड़ क्षत्रियों का एक दल कान्तिपुर से यहां पहुंचा। इसकी इष्टदेवी भी 'कालरात्रि' ही थीं। कालान्तर में कर्मवाड़ क्षत्रियों का समूह तीन जगहों पर विभक्त हो गये। एक साखा अमजीर में, दूसरा मुजफ्फरपुर के 'हरखा' नामक गांव में तथा तीसरा प्राचीन डुम्बी (आज का डुमरी) नामक गांव में बसी है।

काल-रात्रि देवी एवं उनके मंदिर का आज जो स्वरूप है—वह प्राचीन काल में नहीं था। पहले मिट्टी के एक ऊँचे टीले पर एक 'पिण्डी' के रूप में 'कालरात्रि' देवी की पूजा होती थी।



कैतुकालच्ची ज्योतिखा क्या बौद्धकाल की ज्योति-शिखा है?

सारण जिले के अमनौर प्रखंडान्तर्गत ग्राम पंचायत राज 'कैतुकालच्ची' स्थित ज्योतिखा (ज्योतिशिखा) क्या बौद्ध कालीन ज्योतिशिखा है? इसकी जांच के लिए पुरातत्व विभाग, बिहार सरकार को लिखा गया है। इस सन्दर्भ में अमनौर प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी ने जांच की तथा सारण के जिलाधिकारी ने 'ज्योतिखा' के विकासार्थ राज्य के पुरातत्व निदेशालय से जांच का अनुरोध किया है। कैतुकालच्ची पंचायत के नागरिकों का कहना है कि 'ज्योतिशिखा' का संबंध निश्चित रूप से प्राचीन वैशाली गणतंत्र से है, जो संभवतः बौद्धकालीन है। संभवतः यह उपदेश मन्दिर का खंडहर है जहां पर भगवान बुद्ध ने 'सामन्त मुख धारणी' और दूसरे सूत्रों का उच्चारण किया था। चीनी यात्री देन यंग हांग ने लिखा है कि इस खंडहर से एक उज्ज्वल 'ज्योतिशिखा' निकला करती थी। एक हजार वर्ष से ज्यादा समय निकल गया, वह ज्योतिशिखा आज भी अपने अपभ्रंश रूप 'ज्योतिखा' के रूप में उपलब्ध है।

अब तो यह सर्वविदित होता जा रहा है कि प्राचीन लिच्छवी गणतंत्र, वैशाली का फैलाव बनिया बसाढ़ से लेकर सारण जिले के सोनपुर, दरियापुर, दिघवारा, परसा, अमनौर प्रखंडों तक था, यह खोज का विषय है। जैसे, बौद्ध काल का 'चपला' बौद्ध छपरा के 'चपरघाट' चपला चैतूरु से सम्बद्ध है। बौद्धकाल का 'मर्कटा हूद' आज भी 'बनराडीह' के नाम से मशहूर है। कुछ लोग इसे 'बाड़ाडीह' भी कहते हैं। बौद्ध ग्रंथों में वर्णित 'कुसुमपुरी बिहार' आज कल 'पिपरा मठ' माना जाता है। कहते हैं कि यहां बौद्ध संघ की दूसरी बैठक हुई थी। बौद्ध ग्रंथों

72:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

में वर्णित 'बेलूगामक' (बेला) से 'कुसुमपुरी बिहार' संघ का स्थल एक ही मील पर था। फाहियान यही दूरी बताता है। आज के बेला गांव से पिपरा मठ की दूरी भी पूरब दिशा की ओर मात्र एक किलोमीटर है। कुसुमपुरी या पिपरा इसका नाम इसलिए पड़ा कि इसका बाहरी रंग कुसुम फूल-सा पीला होगा।

वैशाली से करीब छह कोस उत्तर-पश्चिम एक बड़ा स्तूप था। इसी स्थान से लिच्छवी और बज्जि सरदारों को भगवान बुद्ध ने अपना कमंडल देकर लौटा दिया था। ये भगवान बुद्ध का कुशीनारा जाते समय पीछा नहीं छोड़ रहे थे, क्योंकि वे जानते थे कि भगवान वहां शरीर त्याग करने जा रहे हैं। उनके बहुत हठ करने पर भगवान बुद्ध ने एक बड़ी नहर, बहुत दूर से, अपनी अलौकिक देवी शक्ति या किन्हीं और प्रयत्नों से बहवा दी थी। उक्त 'नहर' अब भी नाले के रूप में बहुत दूर तक सारण जिले में बहती है। इसका आज भी नाम 'बौधा-धारा' है। वह स्तूप का स्थल अजनी सिक्टी गांव के एक पुराने तालाब स्थित टीला (डीह) को कहते हैं। बौद्धकाल मार्कटाहूद (बड़ाडीह) वैशाली के 'मर्कट' नामक एक नागरिक ने झील के रूप में खुदवाई थी। इसके अतिरिक्त बौद्धकाल एवं प्राचीन वैशाली से संबंध रहने के कई प्रमाण यहां मौजूद हैं।



श्री राम ने जनकपुर की राह में संझा गांव में संध्योपासना की थी

सोनपुर अनुमंडल क्षेत्र के डेरनी थानान्तर्गत संझा गांव में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, लक्ष्मण एवं ऋषि विश्वामित्र ने संध्योपासना की थी। उनके यहां आगमन का एकमात्र स्मृति चिन्ह श्री राम, लक्ष्मण एवं गुरु विश्वामित्र मंदिर ध्वस्त हो चुका है। मालूम हो कि सीता स्वयंवर में भाग लेने जनकपुर जाते समय श्री राम, लक्ष्मण अपने गुरु विश्वामित्र के साथ जिस स्थान पर ठहर कर संध्योपासना की वही आज संझा गांव के नाम से विख्यात है।

संझा गांव मही (गंडकी) नदी के किनारे बसा हुआ है। यहां नदी संझा गांव के उत्तर में अवस्थित है। यहां के ग्रामीण प्रमाण एकत्र कर बताते हैं कि गरखा बाजार से पूरब पांचेक मील पर रामपुर पीठाघाट में रामपुर उत्तर की तरफ है, जबकि दक्षिण पीठाघाट है। इसके मध्य गंगा नदी बहती थी, जिसे पारकर श्री राम अपने भाई लक्ष्मण और गुरु विश्वामित्र के साथ संध्योपासना की थी। उस स्थल पर उक्त महापुरुषों की स्मृति में निर्मित मंदिर के ध्वंसावशेष हैं। ग्रामीण बताते हैं कि यहां जब भी गंगा में बाढ़ आती है, तब गंगा का दबाव संझा गांव से दक्षिण ही रहता है, उसी तरह गंडकी की बाढ़ के पानी का दबाव संझा के उत्तर ही रहता है। संझा में गंगा एवं गंडकी नदियों के प्राचीन क्षेत्र का स्पष्ट पता चल जाता है।

अभी संझा फूरसतपुर पंचायत के अन्तर्गत है। यह पंचायत दरियापुर प्रखंड में है। आज भी सर्वे नक्शा में संझा से होती हुई जो सड़क पीठाघाट की ओर जाती है, उन सभी गांव के नक्शा में लिखा

74:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

है—सड़क रामपुर को। जबकि गरखा की ओर से संज्ञा गांव की ओर जो सड़क जाती है, उसे सरकारी नक्शा एवं खतियानों में सड़क 'पीठाघाट को' लिखा दिखाया गया है। ऐसा बताया जाता है कि गंगा की पूजा प्राचीन काल में पीठा एवं पाठी से होती थी।

श्री राम के संध्योपासना स्थल पर निर्मित मंदिर ध्वस्त हो चुका है। वहां की मूर्ति जो अष्टधातु की है, उसे सुरक्षित रखा गया है। उसके प्रति संज्ञा एवं आसपास के सभी गांव के निवासियों की अपार श्रद्धा है, क्योंकि सैकड़ों वर्ष पूर्व उक्त स्थल पर हिन्दू धर्माचार्य दीक्षांत समारोह आयोजित किया करते थे। संध्योपासना स्थल 232 प्लांट नं. में अवस्थित है। करीब 5 बीघा के अंतर्गत इस मंदिर अथवा मठिया के प्रांगण की चाहरदीवारी थी कभी, परन्तु आज मठिया के एक महंथ की स्थली को खोद-खोद कर कुछ असामाजिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों ने खेत बना डाला है। इसके प्रांगण में ही देवी भगवती का मंदिर अवस्थित है।

इस पौराणिक स्थल की दुर्दशा से यहां की आम जनता मर्माहत है। बिहार सरकार के संस्कृति स्थलों के प्रति उपेक्षापूर्ण बर्ताव से भी यहां की जनता एकदम खिन्न है। श्री राम जानकी मंदिर संघर्ष समिति, संज्ञा इस मंदिर के जीर्णोद्धार तथा इसकी जमीन से अतिक्रमण हटाने के लिए सारण जिले की जनता को गोलबंद कर संघर्ष का बिगुल फूंक चुकी है।

—'आज', पटना।



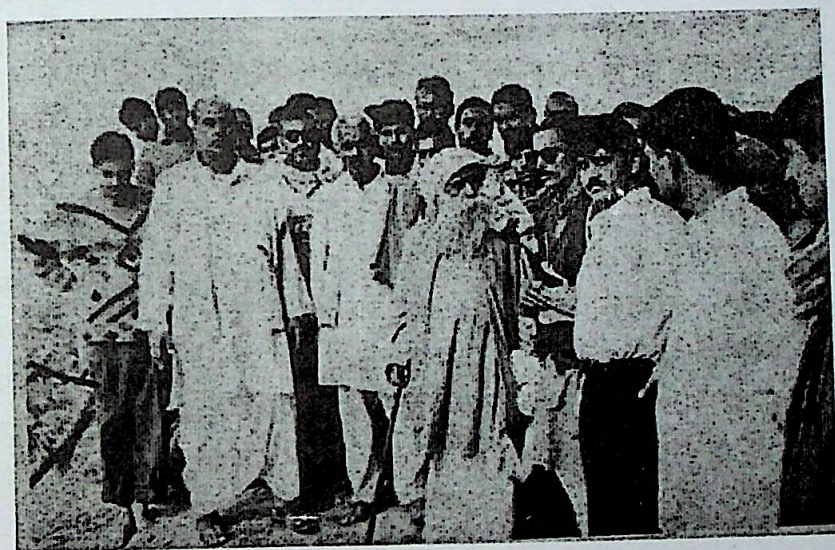
ढांचा गिरने के बाद मंदिर निर्माण का सपना पूरा होते न देख सके

श्री रामजन्म भूमि न्यास के अध्यक्ष व आन्दोलन के प्रथम पंक्तियों के जुझारू एवं संघर्षशील योद्धा अयोध्या स्थित पंच रामानन्दीय दिगम्बर अखाड़ा के महंत प्रतिवादी भयंकर रामचन्द्र परमहंस ने 1949 में श्री रामजन्म भूमि की मुक्ति के लिए न्यायालय में न सिर्फ मुकदमा दायर किया था बल्कि बाद में जन्म भूमि पर लगे ताला न खोलने पर आत्मदाह की धमकी भी दी थी जिसके परिणामस्वरूप 01 फरवरी 1986 को न सिर्फ ताला खुला बल्कि उसके बाद शिला पूजन, शिलान्यास, कार सेवा और अंततः 6 दिसम्बर 92 को विवादित ढांचा लुप्त हुआ।

गोलोकवासी होने से पूर्व परमहंस जी बिहार प्रदेश में अपनी जन्मभूमि सोनपुर प्रखंड अंतर्गत सिंघिलपुर बरियारचक धमार्थ कार्य हेतु कई बार आये जहां उन्होंने अपने विशेष साक्षात्कार में 22 फरवरी 99 को कहा कि ढांचा गिराकर राम मंदिर की सबसे बड़ी बाधा हमने दूर कर दी है, अब मंदिर मात्र बचा है। जन्मभूमि बिहार एवं देश के लोग संतों के सहयोग से इस बाधा को दूर करें, यह विश्वास है। गंगा नदी किनारे नया गांव के गोपालपुर महदली चक में 22 फरवरी 99 से 28 फरवरी 99 तक परमहंस रामचन्द्र दास के नेतृत्व में श्री महा विष्णु यज्ञ संपन्न हुआ था जिसमें विश्व हिन्दु परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री अशोक सिंघल, श्री राम जन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष महंत अवैधनाथ आदि ने शिरकत कर अयोध्या को इस दौरान नया गांव में ला दिया था। अपने साक्षात्कार में इस दौरान परमहंस ने देश की वर्तमान

76:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

दशा एवं दिशा पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि नेहरू के स्थान पर सरदार पटेल प्रधानमंत्री बनते तो देश की यह दुर्दशा नहीं होती। उनकी नजर में जब विभाजित जर्मनी एक हो सकता है तो क्या अंग्रेजों की कूटनीति से अलग और खंड-खंड हुआ भारत एक क्यों नहीं हो सकता। श्री राम जन्म भूमि पर मंदिर निर्माण कार्य आरंभ करने के प्रश्न पर उनका कहना था कि मंदिर तो बना दिया है। पूजा पाठ जारी है। पत्थर तराशी कार्य पूर्ण होते ही संतों के मार्गदर्शन में विहिप एवं न्यास के लोग गाजे-बाजे एवं डंके की चोट पर मंदिर को भव्य रूप देंगे। विरोधियों द्वारा न्यायालय को नहीं मानने के आरोप लगाये जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि न्यायालय को नहीं मानता यह बात निराधार है। सन् 1949 से अब तक मैं श्री राम जन्मभूमि मंदिर मुकदमें का वादी रहा हूं। यही सबसे बड़ा प्रमाण है कि न्यायालय की इज्जत करता हूं। उन्होंने कांग्रेस को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि मुल्लों के कहने पर शाहबानों के मामले में कांग्रेस के ही युवा प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने उच्चतम न्यायालय के आदेश को संविधान बदलकर रद्द कर दिया। उन्होंने कहा कि अगर कांग्रेस उच्चतम न्यायालय का निर्णय ठुकराये तो अच्छी और हम ठुकरा दे तो अपराधी। स्वयं स्वतंत्रता के बाद सरदार पटेल व डॉ.



श्री राम जन्मभूमि न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष,
स्व. परमहंस रामचन्द्र दास

राजेन्द्र प्रसाद ने महमूद गजनवी द्वारा तोड़े गये सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण कराया तो एक लौह पुरुष कहा गया तो दूसरे को देशरत्न। लालकृष्ण आडवाणी ने मंदिर पर कार सेवा की तो सांप्रदायिक हो गये। एक देश में दो कानून बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। केन्द्र में कहने के लिए ही भाजपा की सरकार है उसे अपना बहुमत नहीं है। वैशाखियों के सहारे टिकी हैं। विपरीत विचारधारा वाले अपने राजनीतिक सहयोगी दलों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर उसे चलाना पड़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के संबंध में उन्होंने कि कि वार्ता के बल पर मंदिर मसला हल करने का उनका वक्तव्य आया है जो एक शुभ संकेत है। इससे पूर्व अटल को छोड़कर जितने भी कांग्रेसी या उससे ही निकाले गैर भाजपाई प्रधानमंत्री हुए उन्होंने मंदिर निर्माण के मसले में मुझसे बातचीत की। मंदिर निर्माण का आश्वासन दिया, परन्तु किसी ने मंदिर नहीं बनाया। संतों सहित करोड़ों हिन्दू धर्मावलम्बियों के साथ धोखा किया। परिणाम सामने है, वे या तो हार गये या राजनीति की मार से मर-खप गये। न्यायालय के निर्णय पक्ष में नहीं आने के सवाल पर उनका कहना था कि न्यायालय के अभी के निर्णय हमारे पक्ष में रहे हैं इसलिए उस पर अविश्वास का सवाल ही नहीं है। वैसे न्यायालय के धर्मसम्मत गिराजधार नहीं बनाये जाते। न्यायालय यह कैसे निर्णय देगा कि रामजी यही जन्मे थे और हजरत बल में जो बाल है वह मोहम्मद साहब का बाल है। वस्तुतः यह आस्था का प्रश्न है।

परमहंस दास का कहना था कि एक बार फिर उनकी जन्मभूमि बिहार के लोग अपने मान बिन्दुओं की हिफाजत हेतु उठ खड़े होंगे। श्री राम जन्मभूमि कृष्ण जन्मभूमि एवं काशी विश्वनाथ अपने पूर्व स्वरूप में आयेगा। संतों का यह अटल आत्म विश्वास है। वे एक बार फिर कहते हैं कि नेहरू के स्थान पर सरदार पटेल प्रधानमंत्री बनते तो देश की जो आज दुर्दशा है वह नहीं होती। अगर भाजपा मंदिर के नाम पर राजनीति कर रही है तो मुलायम, लालू, बीपी मुस्लिम वोट की राजनीति नहीं कर रहे हैं।

—‘आज’, पटना।



साधना स्थली के रूप में भी विख्यात है हरिहर क्षेत्र

हरिहर क्षेत्र तीर्थ की महिमा का गान पुराणों ने गाया है। भगवान श्री राम ने अपनी धर्मपत्नी सीता सहित हरिहर क्षेत्र का परिभ्रमण किया था तथा पवित्र गंगा-गंडक के पवित्र संगम स्थल पर स्नान दान, पूजा-अर्चना भी की थी। इस तीर्थ में लगनेवाला हरिहरक्षेत्र मेला भारतीय सभ्यता-संस्कृति का उत्कृष्ट उदाहरण है। कतिपय विसंगतियों के बावजूद यह मेला पूर्ण रूप में अपने आध्यात्मिक स्वरूप के साथ मौजूद है। इसका चप्पा-चप्पा तीर्थ है तथा पशुधन सम्बर्द्धन संस्कृति का यह प्रमुख केन्द्र है। वाराह पुराण के अनुसार गंगा-गंडक संगम तीर्थ के पास जो हरिहर क्षेत्र है, भगवान विष्णु नदी वृषभ के नेतृत्व में गौओं को हाककर यहां लाये थे। अतः हरिहर क्षेत्र नामकरण का एक कारण यह भी है। आज भी गौओं का यहां प्रसिद्ध मेला लगता है। जिस प्रकार गौ की सेवा करने में राजा दिलीप ने अपूर्व तितिक्षा का, तपस्या और गौ के बदले अपने प्राण तक अर्पित कर त्याग का परिचय दिया था, वहीं कलयुग में चतुरी महतो एवं उसके परिजनों (मौदह) ने गो रक्षा हेतु अपना अपूर्व बलिदान देकर इस क्षेत्र को गो-भक्तों का पूजनीय एवं वंदनीय स्थल के रूप में स्थापित कर दिया।

इस मेले के दर्शनीय स्थलों में अनेक हिस्से गंडकी नदी के पूर्वी किनारे हाजीपुर में अवस्थित हैं। पहले यह मेला हरिहरनाथ मंदिर से पश्चिम पहलेजा घाट एवं मंदिर से पूरब वर्तमान हाजीपुर क्षेत्रान्तर्गत रामचौड़ा (रामभद्र), कौनहारा घाट, अन्दर किला, बागमली, हथिसार गंज, स्वर्ण चिरैया पोखर एवं घुड़दौड़ पोखर इत्यादि तक विस्तृत एवं

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 79

एक दूसरे से जुड़ा था। महापंडित राहुल सांकृत्यायन का भी मत है कि पूर्व में हाजीपुर एवं सोनपुर अविभाजित था और इस तरह महान बज्जी संघ (वैशाली) का महत्वपूर्ण भाग था। कालान्तर में नदी की धारा परिवर्तित हो जाने के कारण सोनपुर-हाजीपुर एक-दूसरे से पृथक हो गये और मेला सोनपुर तक सिमट गया।

1961 में सोनपुर-हाजीपुर के बीच गंडकी नदी पर अंग्रेजों द्वारा निर्मित रेलपुल ने सैकड़ों वर्षों से बिछुड़े बज्जी संघ क्षेत्र वासियों को पुनः एक-दूसरे से मिला दिया। प्राचीन वैशाली गणतंत्र के अनेक भग्नावशेष गंडक नदी के पश्चिम किनारे सोनपुर अनुमंडल क्षेत्र के परसा, मकर आदि प्रखंडों में बिखरे मिलते हैं जो वर्तमान वैशाली जिले में खोजने से भी नहीं मिलते। हरिहर क्षेत्र के इन पुरातात्विक स्थलों की संरक्षण, सुरक्षा एवं खुदाई की व्यवस्था की जाती तो इस मेले में देशी-विदेशी पर्यटकों का आगम तो होता ही, इसके साथ ही बुद्धिस्ट-सर्कट से जोड़ने में भी मदद मिलती।

ऋषि-मुनियों की साधना-स्थली होने के कारण यह संत तीर्थ भी है। यहां अनेकानेक संतों के चरण चिह्न पड़ चुके हैं। संतों की जन्म भूमि, साधना-भूमि एवं निर्वाण-भूमि एवं समाधियां इस क्षेत्र के गौरव-स्तंभ हैं। श्रीमदभागवत के सातवें अध्याय में उल्लेख है कि ऋषभ पुत्र राजा भरत अपनी सम्पत्ति, स्वजन-परिजन और आवास-निवास का त्याग कर तपस्या करने 'पुलहाश्रम' में चले गये। उसी आश्रम-वन में भरत पत्र, पुष्प तुलसीदल और जल से हरि की अर्चना-पूजन कर मुक्ति पा गये। वहीं, पुलहाश्रम कालान्तर में 'जड़भरत-आश्रम' के नाम से लोक विश्रुत हुआ। आज भी बैजलपुर स्थित मंदिर में रखे एक पत्थर को 'जड़भरत' एवं 'मुण्ड' भाग को सिन्धु सीवीर देश के राजा रघुगण का प्रतीक माना जाता है।

वैसे जड़भरत आश्रम, वैजलपुर से गंगा-गंडक संगम तीर्थ सबलपुर दियारा तक का सम्पूर्ण भू-भाग भी संत तीर्थ ही है। मही नदी, इसी संत तीर्थ में गंगा-गंडक नदियों से मिलकर 'त्रिवेणी' संगम का रूप धारण करती है। इसी त्रिवेणी संगम में गज-ग्राह का युद्ध हुआ तथा भगवान विष्णु ने यहीं पर गज-ग्राह को शापों से उद्धार किया था।

80:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

कौनहारा घाट (हाजीपुर) कालीघाट (सोनपुर), विष्णुवाहन गरूड़ मन्दिर (सोनपुर), गजेन्द्र मोक्ष स्मारक (सोनपुर), हरिहरनाथ मंदिर में स्थित गजेन्द्र मोक्ष प्रतिमा इसका उदाहरण है। गंडक नदी किनारे साधु गाछी में श्री श्री 10008 मद्देदमार्ग प्रतिष्ठज्ञपनाचार्य विविध विरुदावली विभूषित श्री मद्द्विष्वसेनाचार्य श्री त्रिदण्डी स्वामी जी महाराज के दिव्य मंगलानुशासन से साधु गाछी नारायणी तट हरिहरनाथ क्षेत्र, सोनपुर मेला में करोड़ों की लागत से श्री गजेन्द्र मोक्ष देव स्थान (दिव्य देश) का निर्माण हो रहा है। इस पर अभी तक करीब एक करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं। इस देवस्थान के अध्यक्ष स्वामी लक्ष्मणाचार्य के अनुसार यह पूर्णतः दक्षिण भारतीय पद्धति से बन रहा है। सम्पूर्ण भारत वर्ष में यह अनुपम है तथा इसका स्थान 117वां है।

इसी संत तीर्थ में देवोत्थान एकादशी के दिन संतों द्वारा प्रबोधनोत्सव की औपचारिकताएं भी पूरी की जाती हैं। वैष्णव-भक्तों द्वारा विभिन्न वैष्णव मन्दिरों एवं शालिग्रामी नदी (गंडकी) तट पर शालीग्राम, विवाहोत्सव भी धूम-धाम से संपन्न होता है। यह सब नजारा देखते ही बनता है। नारद-पुराण में कार्तिक शुल्क एकादशी के दिन को 'भीष्म-पंचक व्रत' कहा गया है। इस दिन नारायण की पूजा कर पांच दिनों का व्रत रखने से मनुष्य के जन्मांतरों के पाप नष्ट हो जाते हैं। इस दौरान हरिहरक्षेत्र में पांच दिनों तक शाक अथवा अन्न भक्षण करने का विधान है। वाराहपुराण के अनुसार प्रबोधिनी में एकादशी की रात्रि में 'कलश' के ऊपर रखे वृत-पात्र में सोने की मछली बनाकर मत्स्य आदि दस नामों से विष्णु की षोड्स उपचारों से पूजा कर दान करने का प्रावधान है। इसलिए यहां के पवित्र घाटों पर देवोत्थान एकादशी के प्रारंभ भीष्म पंचक व्रत में कार्तिक पूर्णिमा तक पांडवों के संबोधन से सभी वर्ण वाले व्यक्ति भीष्म को अर्घ्य देते देखे जाते हैं।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन हरिहरक्षेत्र के संत-तीर्थ में हिन्दू धर्म के विविध सम्प्रदायों, पंथों के संत, संतगण भगवान मत्स्य की जयंती मनाते भी देखे जाते हैं। मन्वन्तर का प्रारंभ होने के कारण भी भक्त गणों का आश्रय स्थल बना रहता है मेला का संत तीर्थ। संत-महात्माओं का साधना एवं तपस्थली का ऐसा नमूना कुम्भ के मेलों के बाद हरिहरक्षेत्र

में ही एक साथ देखने को मिलता है।

जगदगुरु श्री वल्लभाचार्य की चौरासी बैठकों में से एक बैठक गंगा-गंडक संगम तीर्थ क्षेत्र में ही हाजीपुर स्थित है। जगदगुरु ने यहां भगवान दास वैष्णव के घर पर बैठक की थी। निकट ही रामभद्र स्थान है जहां भगवान श्री राम जनकपुर जाने के रास्ते में ठहरे थे। एक ऊंचे टीले पर उनका चरणचिह्न स्थित है। बाराह पुराण के अनुसार हरिहर कुंभ संगम क्षेत्र का नाम 'देवाट' भी है, क्योंकि यहां देवता लोग अटन करते हैं। इस संगम का एक नाम 'हंस तीर्थ' भी है, जहां दो कौए परस्पर उड़ते हुए संगम के जल में गिर गये थे और दोनों ने हंस का रूप ग्रहण कर लिया था। नारदीय महापुराण के अनुसार इस संगम क्षेत्र का नाम 'गांडीव तीर्थ' भी है।

गौरी शंकर मंदिर में महादेव की चार भुजाएं हैं। वृषभ नहीं है। एक हाथ में (दाहिने के ऊपरवाले में) त्रिशूल है। यह हाथ ऊंचा किया हुआ है। दूसरा दाहिना हाथ पार्वती के उरोज का स्पर्श कर रहा है। पार्वती नग्न हैं। और शिव की बायें जांघ पर आसीन हैं। इनके दोनों पैर नीचे लटक रहे हैं। शिव के दाहिने पैर की जांघ बायें पैर से दबी हुई है और अपने नीचे लिंग छिद्र को दबाए हुई है। आंखें शिव के बायें हाथों में से ऊपर का पार्वती के कंधे के नीचे के भाग को और नीचे कटि के ऊपर भाग को आवेष्टित किये दिखलाये गये हैं। हठ योगियों की भाषा में यह 'काम विजय मुद्रा' है तथा तांत्रिक युग की मूर्ति है।

यहो दक्षिणेश्वरी महाकाली का स्थान पूर्णतः एकांत शांत स्थान पर अवस्थित हैं, इसे, आराधना और तांत्रिक प्रयोग के लिए सर्वोत्तम स्थान माना जाता है। हर जगह ग्रहों एवं कष्टों के निवारण हेतु मिन्नते मानी जाती हैं, परन्तु यहां नक्षत्र की पूजा होती है। प्रमाणस्वरूप आप देखेंगे कि काली की मूर्ति दक्षिण की ओर आशीर्वाद की मुद्रा में विराजमान हैं। उनके चरणों के नीचे शिव-शव के समान पड़े हैं और ठीक सामने 27 हाथों की दूरी पर काले पत्थर का एक प्राचीन शिव लिंग उत्तर दिशा की ओर केन्द्रित है। यह सर्वविदित है कि भारतीय ज्योतिष विज्ञान शास्त्र में 27 नक्षत्र हैं इसलिए नक्षत्रों की पूजा अपने-अपने रीति-रिवाज से किया जाता है। विष्णु एवं शंकर की मर्यादा का ख्याल

82:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

करते हुए इस मंदिर का निर्माण करने वाले ने यहां पूर्णतः वैष्णवी आराधना, साधना और उपचार का प्रावधान किया था। वे परम्परा आज तक अक्षुण्ण है। यहां बलि में केले का फूल, बेलपत्र, ईख, नारियल, सिसकोहरा ही प्रदान किया जाता है। वैसे भक्त जैसा समर्थ होते हैं, उस विधि से पूजन-अर्चन करते हैं। यहां पर भूटान, आसाम, नागालैंड, मिजोरम एवं बंगाल के तांत्रिक साधक भी आते रहे हैं।

तंत्र साधकों के मतानुसार नेपाल के महान तांत्रिक जोगा बाबा, लखनऊ के भूतनाथ बाबा तथा बंगाल के कालीदास जैसे साधकों की साधना-स्थली रहने का भी इस काली-स्थान को गौरव प्राप्त है। यहाँ का महत्व यही है कि जिसने बाल रूप करुणामय क्रन्दन से माता की आराधना की उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। चाहे पुत्र की प्राप्ति, पुत्री की शादी के लिए या परिवार, समाज एवं देश के कल्याण की बात हो, उसकी मनोकामना पूर्ण हुई। पर जिसने किसी की बुराई के लिए आराधना या मिन्त की उसको माता ने अस्वीकार कर दिया है। इसके हजारों ज्वलंत उदाहरण सुने जाते हैं। शिव लिंग एवं काली की मूर्ति एक ही हालनुमा मंदिर में है, परन्तु दोनों के अलग-अलग गुम्बद हैं, जो खजुरिया ईंट से निर्मित है। ठीक इसके पीछे खाकी चौक मंदिर अवस्थित है, जहां खाकी बाबा महान संत हो चुके हैं। इस साधनास्थली में श्रीराम, हनुमान, सीता एवं राधेकृष्ण की मूर्तियां हैं। इसके दक्षिणी दीवार के पास कई प्राचीन साधना स्तूप हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र एवं पराशक्ति श्री सीता द्वारा पुष्पक विमान से च्यवनाश्रम, गंगा-गंडकी संगम नारायणी गंडकी संगम एवं हरिहरक्षेत्र तीर्थ की यात्रा का वर्णन आनन्द रामायण में मिलता है। काली मंदिर के सामने पत्थरों पर उत्कीर्ण दो योगियां हैं जिनको वाम-मार्गियों के यहां बहुत महत्व दिया जाता है। यहीं पर महावीर जी की एक छोटी मूर्ति भी है। 1857 में गंगा-गंडक का संगम स्थल भी यहीं था। नीचे काफी नष्ट हो चुका है।

मुगलबाड़ी भी कभी दर्शनीय था आज विरान है। कष्टरिया घाट के पास जो हथिसार एवं संत-तीर्थ का क्षेत्र है उसे ही बाग राजा मान सिंह कहा जाता है। इसे राजा मान सिंह ने बसाया था। कष्टहरिया मठ

के दक्षिण से लेकर बोरिंग हाउस तक राजा बाग जेल बोला जाता है। इस बाग में जो कुआं है उसके अन्दर पत्थर पर राजा मान सिंह खुदा हुआ है। पुरातत्व विभाग इन स्थानों की जितनी उपेक्षा कर रहा है उतना ही पुरातात्विक सबूत नष्ट करने का सिलसिला भी जारी है। वस्तुतः राज्य एवं केन्द्र सरकार का पर्यटन विभाग बैजलपुर स्थित जड़भरत आश्रम से सबलपुर गंगा गंडक संगम स्थल जगन्नाथ घाट तक गंडक किनारे पक्का कटाव निरोधक कार्य कराकर सीढ़ीनुमा घाटों का निर्माण करा दें, घाटों पर वृक्षारोपण, च्यवन तालाब का जीर्णोधार सहित यात्री सुविधाओं से इन्हें सुसज्जित कर दे तो हरिहर क्षेत्र मेला देशी एवं विदेशी पर्यटकों का अभयारण्य बन सकता है।

लोकसेवा आश्रम का अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रेक्षाग्रह यहीं है। इसे 1954 में संत बाबा रामलखन दास जी ने स्थापित किया था। सेवा सदन धर्मशाला महात्मा गांधी की याद ताजा करा देता है। मेला के समय मेला यात्रियों का आश्रय स्थल एक यह भी है। इसका अधिकांश भाग क्षतिग्रस्त एवं ध्वस्त हो चुका है। किसी गांधी भक्त मंत्री तथा उसकी सरकार ने आज तक उसकी सुधि तक नहीं ली है। मही नदी किनारे नाथ सम्प्रदाय के संतों की समाधियां हैं तो सबलपुर में गोरखाई नाथ ने जीवित समाधि ली थी। मखदूम साहब का मजार, देशी केसों सिंह की डीह, सतिहारा भी पूजनीय स्थल है। इसके अतिरिक्त विश्व में पशुओं के व्यवसाय एवं पशु संरक्षण के लिए भी यह मेला प्रसिद्ध है। चिड़ियां, भेड़, बकरियों की कौन कहे, यहां हाथी, ऊंट, घोड़ा, खच्चर, बैल, गाय भी बड़ी संख्या में मेले में लाये जाते हैं। राज्यपाल द्वारा मेला परिभ्रमण के दिन पशु-प्रतियोगिता का आयोजन भी मेले का एक दिलचस्प पहलू है। जहां पर देश-विदेश के लोग दौड़ प्रतियोगिता को देखने हेतु जुटते हैं। इस मेले में सुदूर काबुल के घोड़े, उत्तर से लाये गये दुग्धा भेड़, पंजाब से अच्छे बैलों की जोड़ी भी पहले पहुंचती थी। आज भी हरियाणा की गायें बिक्री के लिए यहां लायी जाती हैं।

चिड़ियां बाजार में तोंता, मैना, तीतर, बटेर, कबूतर, बुलबुल, बतख, मोर, चाईनिज मुर्गा, पहाड़ी सुग्गा, कुत्ता, खरगोश, बंदर, बिलाइती चूहा भी बिक्री के लिए आते हैं।

84:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

इसके अतिरिक्त इस मेले में खेती-गृहस्थी के विभिन्न औजार, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के पलंग, कुर्सियां तथा विभिन्न प्रकार के फर्निचर, इतर, लहठी, खिलौने, सिन्दूर, सूती-ऊनी तथा रेशमी वस्त्र, खादी के कपड़े, काश्मीरी शाल-दुशाला, लुधियानवी स्वेटर, कार्डिगन एवं कम्बल आदि के बाजार अपनी-अपनी जगह सजे मिलते हैं।

—‘आर्यावर्त’, पटना, ‘हरिहर क्षेत्र मेला पर विशेष’,
वृहस्पतिवार, 5 नवम्बर, 1998



नाथ सम्प्रदाय की सिद्ध भूमि है हरिहर क्षेत्र

सबलपुर दियारे के बभनटोली में नाथ पंथ के योगिराज गोरखाई नाथ की समाधि-गुफा विराजमान है। ग्रामीणों का मानना है कि इस सदी के पूर्वार्द्ध में खुद भगवान के ही ज्योतिर्मय स्वरूप गुरु गोरखनाथ ने गोरखाईनाथ के रूप में प्रकट होकर इस क्षेत्र का महिमा मंडन किया और अंततः समाधि में लीन हो गये।

सोनपुर स्थित नाथ सम्प्रदाय के मठ-मंदिर, खोह, गुफाएं और टीलों के अंदर छिपे पुरावशेष इस बात के प्रतीक हैं कि कभी नाथ सम्प्रदाय का यहां डंका बजता था। यह नाथ सम्प्रदाय अत्यंत ही शक्तिशाली, प्रभावशाली और मानव-कल्पना का मार्ग प्रशस्त करने वाला एक प्रमुख पंथ रहा है। इन पुरातात्विक धरोहरों का क्षय होना जारी है। ऐसा प्रतीत होता है कि जब सामंती प्रवृत्तिवाले व्यक्तियों ने इस सिद्ध क्षेत्र पर अपना कब्जा और पैर जमा लिया तब इस क्षेत्र की एकांतता भंग हो गयी। सिद्ध पुरुषों ने स्वतः और स्वभावतः क्षेत्र छोड़ दिया। यहां की अधिकतर समाधि-गुफाओं तथा मठ-मन्दिरों के क्षेत्रों का अतिक्रमण कर उस पर अपना अधिकार जमाकर पुरातात्विक धरोहरों को विनाश के कगार पर पहुंचाने का काम स्थानीय लोगों ने किया।

नाथ सम्प्रदाय की उत्पत्ति भगवान शिव आदिनाथ द्वारा हुई है। इस सम्प्रदाय के सभी प्रवर्तक सिद्ध और आचार्य नाथ नाम से ही विख्यात हैं। मानव-कल्याण के लिए जिन नव नारायणों ने इस धराधाम पर अवतार लिया है, उनमें कविनारायण ने श्री मत्स्येन्द्र नाथ तथा इसी तरह भाजन नारायण ने गहनिनाथ, अन्तरिक्ष नारायण ने ज्वालेन्द्रनाथ

(जालन्धर नाथ), श्री प्रबुद्ध नारायण ने कर्णिपानाथ, श्री आर्विहोत्र नारायण ने नागनाथ, पिप्लायन नारायण ने चर्पटनाथ, श्री चमस नारायण ने रेवणनाथ, श्री हरिनारायण ने भर्तृनाथ (भरथरी), श्री दुमिल नारायण ने गोपीचन्द्रनाथ के रूप में शंकरचार्य से पूर्व हरिहर क्षेत्र इलाके को बौद्ध धर्म के प्रभाव से मुक्त कराने में नाथ सम्प्रदाय के योगियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। शैव मत को सुप्रतिष्ठित करने में नाथ गुरुओं का स्थान अग्रगण्य है। यही कारण है कि यहां भगवान शिव की मूर्तियां अधिक पायी जाती हैं।

कालयोग शास्त्र में भगवान शिव की स्वीकृति है कि मैं योगमार्ग प्रचारक गोरक्ष हूं। यहां चिड़ैयामठ में भगवान शंकर की शांत चित्त मूर्ति स्थापित है। हरिहरनाथ मंदिर से सटे पश्चिम से लेकर महीनदी किनारे हरिहरनाथ कॉलोनी तक का संपूर्ण इलाका कभी हठयोगी गुरुओं का केन्द्र रहा है।

यहां के मठ-मंदिरों में कभी उपरोक्त नवनाथों की मूर्तियां भी थीं जो सैकड़ों वर्षों के विपदकाल में नष्ट हो गयी या चोरी कर ली गयीं। इन हठयोगी नाथ पंथों के गुरुओं के आराध्य आदिनाथ शंकर भगवान तथा माता पार्वती हैं। जिनकी मूर्तियां भी एक साथ पायी जाती हैं। गोरखबानी संबन्धी में एक योगी को योग सिद्धि का उपाय खुद गुरु गोरखनाथ ने बताया है। उन्होंने कहा है कि 'मन रूपी योगी ने अपने लिये पांच तत्व की कथा बनायी है। वह क्षमा का षड्सन, ज्ञान की आधारी, सद्बुद्धि की खड़ाऊं और विचार रूपी डंडा अपनी योग साधना के उपयोग में लाता है। शरीर का नहीं, मन का योग वास्तविक योग है, बाध्य योग-साधनाओं और यौगिक उपकरणों की अपेक्षा आभ्यान्तर मुक्तियों के ग्रहण से योग की सिद्धि होती है। योगी गुदड़ी धारण करता है। इस गुदड़ी में परमात्मा अथवा आत्मस्वरूप योगी का वास होता है। गुदड़ी योगसिद्धि का परम उपाय है।' सोनपुर स्थित नाथपंथी गुरुओं की समाधि में एक समाधि बालानाथ की भी है।



मठ-मन्दिरों में झलकता इतिहास

सोनपुर के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक हरिहर क्षेत्र मेले की प्राचीनता एवं यहां अवस्थित मठ-मंदिरों में मिलती है। इस मेले का मूलाधार भी यही है।

सोनपुर सदियों पूर्व से ज्ञान की तपोभूमि रही एवं ऋषि-मुनियों की साधना भूमि रही है। वस्तुतः सोनपुर का स्वर्णिम इतिहास वहां के पुराने चिन्हों, खण्डहरों के भग्नावशेष, पुराने मठ-मंदिरों, मूर्तियों, लोककथाओं एवं जनश्रुतियों में उपलब्ध हैं। जिसे पौराणिक धर्मग्रन्थों से अभयदान प्राप्त है।

इसकी पौराणिक गाथा पद्म पुराण, वाराहपुराण एवं विविधा (तीर्थकर) हत्यादि में वृहत् मिलते हैं। जो पर्यटकों के लिए ही नहीं सभी मेला दर्शकों के लिए रुचिकर एवं दर्शनीय है।

बाबा हरिहनाथ मंदिर के बारे में कहा जाता है कि ब्रह्मा ने ही हरि और हर का लिंग स्थापन किया था। प्रवाद यह भी है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जब सीता स्वयंवर में भाग लेने मिथिला जा रहे थे तभी उन्होंने यहां हरि और हर का लिंग स्थापित किया। हाजीपुर (प्राचीन नाम अल्काचेलि) में अवस्थित राम भद्र स्थान (राम चौड़ा) को इसका सदस्य माना जाता है कि राम इस रास्ते से आये थे।

प्रवाद यह भी है कि भगवान विष्णु (कृष्ण) ने यहां कुम्भीर के मुख से हाथी को बचाया था। कौनहारा घाट, हाजीपुर को गाज ग्राह का युद्ध स्थल तथा काली घाट, सोनपुर स्थित पौराणिक गरुड़ पर सवार विष्णु की प्रतिमा को इसका साक्ष्य माना जाता है।

वस्तुतः हरि और हर का संगम भारत वर्ष में अन्यत्र दुर्लभ है। इसकी स्थापना के और कई आख्यान मिलते हैं। गौरी शंकर मंदिर

88:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

स्वयंभू बताया गया है। आज से 80 वर्ष पूर्व गौरीशंकर का सिर्फ मस्तक भाग ही दृष्टिगोचर होता था। अब पूरा दिखाई पड़ता है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार संत प्रकृति के ग्रामीणों द्वारा दान एवं चंदे की रकम से किया गया है। मूर्ति काले पत्थर की है। संभवतः पालकालीन है। इसे कुछ लोग तांत्रिक युग की मूर्ति भी मानते हैं।

महादेव की चार भुजाएं हैं। वृषभ नहीं है। एक हाथ में (दाहिने के ऊपर वाले) में त्रिशूल है। पार्वती जी शिव जी की बायीं जांघ पर आसीन हैं। हठ योगियों की भाषा में यह काम विजय मुद्रा है।

गौरी शंकर मंदिर प्रांगण में ही काले पत्थर पर भगवान विष्णु की तस्वीर गरुड़ की सवारी पर चित्रित है। यह मूर्ति भी अति प्राचीन है और उसके सामने शिव लिंग एवं उरोजों की बनावट अजंता की कला से मिलती है। काली के दोनों तरफ द्वार बने हैं।

काली मंदिर के सामने ही पत्थरों की बनी दो योनि आकृतियां हैं जिनको वाम मार्गियों के यहां बहुत महत्व दिया जाता है। इस प्रकार की आकृतियां किसी प्राचीन मकानों अथवा राजभवनों की नक्काशी का भी हो सकती हैं। क्योंकि इस प्रकार की आकृतियां अन्यत्र भी देखी गयी हैं। यहीं पर समीप ही ऊंचे टीले पर पीपल वृक्ष के नीचे सिन्दूरी रंग के महावीर जी की एक मूर्ति एक छोटे मंदिर में है।

खाकी चौक मंदिर में राम, लक्ष्मण सीता और राधा-कृष्ण की मूर्ति है। इस मंदिर में खस्ता हालत में एक पाषाण स्तंभ है, जिसे महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने शुंगकालीन माना है। इस मंदिर का भवन पहले खपरैल था, जिसे एक स्थानीय जमींदार ने नया स्वरूप दिया। इस स्थान की खुदाई से इतिहास की दबी परत उघर सकती है।

गंडक तटवर्ती दरियादासी मन्दिर में दरियादासी महात्मा रहते हैं। जबकि कष्टहरिया मठ में कबीर पंथी महात्माओं का निवास स्थान है। राजामान सिंह गढ़ जो पहले वाणासुर गढ़ भी बोला जाता था, यहां पर गढ़ के आज भी बड़े-बड़े पत्थर तथा ईंट के बुर्ज उस जगह की याद दिलाते हैं। यहां एक दौलत कुआं है। किंवदंति के अनुसार इसमें काफी धनराशि है। उसकी उड़ाही सरकारी विषय है।

बाग मिर्जादिल कभी मेले का दर्शनीय स्थल था। यह मुगल बादशाह मिर्जादिल का बसाया हुआ है। सरकार इसका अधिग्रहण कर पर्यटकों के

लिए विकसित कर सकती है। तब पुनः इसका सौंदर्य लौट जायेगा।

कष्टहरिया घाट के समीप जो हथिसार तथा बगीचा वगैरह है, उसे ही बाग राजा मान सिंह कहते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से पुरातात्विक महत्व का होने के कारण इस संपूर्ण क्षेत्र को सरकार द्वारा इसका भू अर्जन आवश्यक है और इसका पर्यटकों के दृष्टिकोण से नयनाभिराम बाग के रूप में विकसित करना सरकार का फर्ज भी है। क्योंकि इसे राजा मान सिंह ने बसाया था। कष्टहरिया मठ के दक्षिण से लेकर बोरिंग हाउस तक राज्य बाग बोला जाता है। इस बाग में आज जो कुंआ मौजूद है वह मुगल कालीन है। जिसके अंदर पत्थर पर राजा मानसिंह का नाम खुदा हुआ है। बताया जाता है कि उत्कीर्ण नाम एवं पत्थर को मिटाने का प्रयास भी किया जा रहा है।

उपरोक्त सभी मठ-मंदिर स्थान पर बाग-बगीचा एवं पुरातात्विक साक्ष्य गंडक नदी के किनारे अवस्थित है। जो मेला में आए पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। अगर इसे सरकार भू-अर्जन कर विकास कर दे तो मेला में चार चांद लग सकता है और यह विश्व के खूबसूरत मेलों में स्थान पाने का अधिकारी हो सकेगा और सर्वाधिक सुंदर और ऐतिहासिकता से जुड़े पर्यटक क्षेत्र का स्थान ले लेगा। गंडकी नदी के किनारे ही च्यवन ऋषि के पोखरा के नाम से विख्यात एक तालाब या विशाल गड्ढा है। इसे वैदिक काल का तथा सर्वाधिक प्राचीन बताया जाता है। कुष्ठ रोग के निवारणार्थ इस पोखर का निर्माण ऋषि च्यवन ने करवाया था। कुछ लोग इसे दशरथ तालाब भी कहते हैं।

मेला क्षेत्र एवं मही नदी किनारे साधु संतों की समाधि, गुफाओं की अधिकता है। बाबा बालानाथ की समाधि, जनार्दन बाबा की समाधि, गंगादास की समाधि सहित अनेकों समाधि की गुफाएं मौजूद हैं। विशाल नाथ मंदिर के बगल ही में कई छोटी-छोटी समाधि गुफाएं हैं। बाबा बालानाथ ने जीवित समाधि ली थी। इस समाधि स्थल के आस-पास बहुत से मंदिरों के खंडहर आज भी मौजूद हैं। मंदिर निर्माण में खजुरिया ईंट का प्रयोग है। चिड़ैयामठ सोनपुर में ऐतिहासिक महत्व का स्थल है। इस सबका अगर सरकार विकास करे तो सालों भर देशी-विदेशी पर्यटक इस ओर आकृष्ट होकर पहुंचेंगे।

—‘आज’, पटना, 18 नवम्बर, 1994



90:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

हरिहरनाथ मंदिर के अस्तित्व पर संकट

हरिहरनाथ मंदिर किसने बनवाया? इस संबंध में किसी प्राचीन ग्रंथ में कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता। जो जनश्रुतियां प्रचलित हैं उनमें भी मत मतान्तर है। लोग एक मत नहीं हैं। साथ ही समय-समय पर मंदिर जीर्णोद्धार के भी प्रयास होते रहे हैं। जीर्णोद्धार कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होता रहा है।

वर्तमान मंदिर के जीर्णोद्धार के सम्बन्ध में कहा जाता है कि सोनपुर स्थित काली मंदिर के एक प्रभावशाली पुजारी ने चढ़ावे की रकम से 17वीं सदी में बनवाया था। सोनपुर के लोगों, खासकर मंदिर के पुजारियों की धारणा रही है कि नयागांव के किसी कायस्थ भक्त ने ही हरिहर नाथ का वर्तमान मंदिर बनवाया था।

एक दूसरी जनश्रुति है कि वर्तमान मंदिर पटना के एक सूबेदार महाराजा राम नारायण ने बनवाया था परन्तु नयागांव के कायस्थ भक्त द्वारा वर्तमान मंदिर निर्माण के संबंध में साक्ष्य अधिक मिलते हैं। अकबरपुर (सोनपुर) निवासी ठाकुर बलभद्र दास द्वारा वर्तमान मंदिर के निर्माण की जनश्रुति अधिक सत्य प्रतीत होती है। क्योंकि बाबा हरिहर नाथ का मंदिर अकबरपुर मौजे में ही अवस्थित है और ठाकुर बलभद्र दास जाति के कायस्थ थे। बाद में नया गांव में जाकर बस गये।

ठाकुर बलभद्र दास करेमाणिकपुर (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। सियाशु नामक रेलवे स्टेशन (इलाहाबाद स्टेशन से चौथा) से तीन कोस दक्षिण उपरोक्त गांव अवस्थित है। मुगल सम्राट अकबर के काल में ठाकुर बलभद्र दास, ठाकुर मुसरा दास एवं ठाकुर चेतादास (तीनों सहोदर भाई) कानूनगो के पद पद नियुक्त करके अकबरपुर (सोनपुर) भेजे

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 91

गये। उन्होंने अपना निवास अकबरपुर में ही बनवाया। ठाकुर बलभद्र दास कशमर परगना के काजी के साथ काम करने लगे और भगवद प्रेरणा से मुगल सम्राट अकबर के ही काल में वर्तमान हरिहर नाथ का मंदिर बनवा दिया।

समय-समय पर मंदिर जीर्णोद्धार कार्य भी होता रहा। विभिन्न व्यवधानों के बावजूद पुराने समय से लेकर अब तक इस विषय पर पूर्ण सफलता संदिग्ध रही है। 1936 में बिड़ला बंधुओं ने मंदिर जीर्णोद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। भूकम्प से क्षतिग्रस्त मंदिर की मरम्मत इत्यादि संपन्न हुए। यह सब हिन्दू महासभा के नेताओं द्वारा बिड़ला बन्धुओं को दी गयी प्रेरणा से संभव हुआ था। 1945 के दौरान हथुआ की महारानी और टेकारी के महाराज द्वारा मंदिर जीर्णोद्धार के प्रयास किये गये। 1945 से 1970 तक मंदिर दुरावस्था का शिकार रहा। मंदिर प्रांगण भक्तों के लिए असुरक्षित हो चुका था।

बोध गया के महंथ सदानंद गिरि ने 1971 ई.में करीब एक लाख रुपये की लागत से बाबा हरिहर नाथ मंदिर में यात्रियों एवं श्रद्धालुओं को ठहराने के लिए दस कमरों की एक धर्मशाला निर्माण करवा दिया। इस समय मंदिर के महंथ के रूप में वर्तमान महंत अवध किशोर गिरि की नियुक्ति बोध गया के अधीन थी। परन्तु अब उससे स्वतंत्र हो चुका है। 1973 में ठाकुर अमरेन्द्र नारायण सिंह द्वारा प्रदत्त ग्यारह हजार रुपये से महावीर मंदिर एवं बाबा हरिहरनाथ मंदिर की छत एवं हरिहर नाथ मंदिर की दिवाल मरम्मत करने की बात बतायी जाती है।

मंदिर में संस्कृत वेद पाठशाला का शुभारम्भ 1974 से हुआ परन्तु 1979 तक ही इसे चलाया जा सका। इसके लिए जगद्गुरु शंकराचार्य कांची द्वारा करीब एक लाख रुपया सहयोग के रूप में खर्च किया गया था। बाद में राशि के अभाव के कारण हरिहर क्षेत्र के संस्कृत वेद पाठशाला में पठन-पाठन ठप्प हो गया।

1974 में हरिहर नाथ मंदिर के महंथ अवध किशोर गिरि ने सोनपुर स्टेशन को हरिहर क्षेत्र स्टेशन बनाने का प्रस्ताव रेलवे बोर्ड से किया था। इससे प्रत्येक वर्ष दस से बीस लाख रुपया इस धार्मिक क्षेत्र

को लाभ होता। 1978 में महंथ गिरि ने मेला क्षेत्र में महाशिव रात्रि मेला का शुभारंभ भी करवाया ताकि स्थानीय व्यवसायियों, बेरोजगारों एवं क्षेत्र को बेरोजगारी से मुक्ति तथा क्षेत्र का समुचित विकास हो सके। परन्तु कतिपय स्थानीय लोगों की संकीर्णता तथा समझ के अभाव के कारण सभी योजनाएं विफल रहीं। जबकि सोनपुर रेलवे स्टेशन स्थल सोनपुर गांव मौजे की जमीन में अवस्थित नहीं है।

1973 में मंदिर के महंथ द्वारा करीब दस हजार रुपये खर्च कर मंदिर एवं यात्रियों की सुरक्षा हेतु एक पुलिस नाका की स्थापना करवाई तब से मंदिर में यात्रियों की सुरक्षा की गारंटी प्राप्त हुई। महंथ द्वारा ही मेला यात्रियों एवं व्यवसायियों तथा धार्मिक जनों की सुविधा हेतु हरिहर नाथ मंदिर परिसर में एक सब पोस्ट ऑफिस की स्थापना करवायी। तथा 1976 में हरिहर क्षेत्र के नाम से करीब 20 लाख रुपये मूल्य की 22 बीघा जमीन का रजिस्ट्रेशन करवाया। 1976 से 1995 तक मंदिर विकास कार्य बोधगया के विरोध के कारण बाधित रहा। इस दौरान स्थानीय असहयोग भी चरम सीमा पर पहुंच गया था।

—'आज', पटना, 18 नवम्बर, 1994



कृष्ण के विराट व्यक्तित्व में छिपी थी राष्ट्र की सुरक्षा की चिंता

योगेश्वर श्रीकृष्ण के विराट व्यक्तित्व में राष्ट्र की एकता व अखंडता की सुरक्षा का संकल्प और धर्म स्थापना का ध्येय अंतर्निहित और सर्वोपरि रहा है। उनका जन्म महाभारत के उस महासंक्रांति काल में हुआ था जब उसका अपना कोई 'महानायक' नहीं था। भारत के हर खांड का शासक स्वेच्छाचारी और मनमानी पर उतारू था। राष्ट्र की चिंता किसी को नहीं थी। ज्ञान-विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा था। ऐसे में श्रीकृष्ण का भारत भू पर आना कम कठिनाइयों से भरा नहीं था। जन्म से लेकर मरण तक पग-पग मानवीय परीक्षाओं से उन्हें गुजरना पड़ा। इन्हीं परीक्षाओं ने उन्हें 64 कलाओं का स्वामी और साधारण मानव से योगेश्वर



राधा-कृष्ण की प्रतिमा, राधा-कृष्ण मंदिर, सोनपुर

94:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

बनाया। अपने लोक कल्याणकारी रूप में श्रीकृष्ण ने गोपालक बन गो-संरक्षण का संदेश दिया। इसके लिए इन्हें गोविंद की उपाधि प्रदान की। फिर विष-युक्त यमुना नदी के जल को विष मुक्त किया। यहाँ वे जल-संरक्षक की भूमिका में दिखे। जंगल में फैली अग्नि को पीकर सम्पूर्ण जंगल, जीव-जन्तुओं, गौओं और गोपों की रक्षा की। वे यहाँ पर्यावरण रक्षक के रूप में उभरे। इन्द्र यज्ञ जैसे पुरातन रीति-रिवाजों में उलट-फेर का साहस दिखाया। इन्द्र के कोप से उल्का, बारिश, बाढ़, आँधी-तूफन और वज्रपात से ब्रजवासियों की रक्षा की। गोवर्धन पर्वत को धारण कर इन्द्र का गर्व हरण किया। यज्ञ, गौ, ब्राह्मण और गिरिराज गोवर्धन की पूजा की नई परंपरा को प्रतिष्ठित किया। गोवर्धन धारण करने और उससे सुरक्षा मिलने से जगत को यह संदेश गया कि पर्वत भी विषम परिस्थितियों में रक्षा कवच का काम करते हैं।

अब आइए मूल विषय श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व व कृतित्व के विकास में भूमिका निभाने वाले तत्कालीन कारणों को ढूँढ़ें। मंथन करें। श्रीकृष्ण के जन्म के समय के राजाओं पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि अधिकांश राजा खलनायक की मुद्रा में थे और उनके कृतित्व से नैतिक पतन का बोध हो रहा था। मथुरा में कंस, मगध में जरासंध का आतंक व्याप्त था तो दूसरी ओर प्राज्योतिषपुर के अधिपति भूमि पुत्र भौमासुर (नरकासुर) मानवता का घोर शत्रु बन बैठा था। देव जाति भी भूमि पुत्र भौमासुर (नरकासुर) से भयाक्रांत थी। यवनराजा कालयवन का भी आतंक व्याप्त था। मथुरापति कंस एवं जरासंध के सहयोगी प्रलम्बासुर, बकासुर, चाणूर, अधासुर, मुष्टिक, अरिष्टासुर, द्विविद्, पूतना, केशी और धेनुक, वाणासुर, भौमासुर भारतीय संस्कृति के लिए ध्वंसक साबित हो रहे थे। अपने पिता उग्रसेन, अपने परम् मित्र और बहनोई वसुदेव और बहन देवकी को कारागार में डाल कर कंस देवकी के जन्म लेने वाले नवजात शिशुओं को मार रहा था। एक दैवीय भविष्यवाणी या ज्योतिषीय गणना के अनुसार उसे इस बात का भय था कि देवकी के गर्भ से उत्पन्न होने वाला आठवां पुत्र उसे मार डालेगा। अब एक ऐसे नायक की कहानी बताते चलें जो महाभारत का अकेले महानायक बनने की योग्यता रखता था। पर, अपने भीष्म-प्रतिज्ञा के

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 95

कारण वह अपने घर के नायक होने का भी कर्तव्य निभा न सके। यह और कोई नहीं बल्कि गंगा पुत्र देवव्रत भीष्म की बात है। वे शक्तिमान और ज्ञानवान दोनों थे। बावजूद वे महाभारत के इतिहास के सबसे निःसहाय व अशक्त व्यक्ति बने रहे। उनके जीवन काल में बार-बार नारी जाति का अपमान हुआ। स्वयं उनके हाथों भी ऐसा कुछ हुआ जिसका मूल्य उन्हें आगे चलकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में अपनी जान देकर चुकाना पड़ा। अपने सौतेले भाई विचित्रवीर्य के विवाह के लिए उन्होंने बलपूर्वक काशी राज की तीन पुत्रियों, अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका का हरण कर लाये। यह घटना तब घटी जब तीनों राजकुमारियाँ अपने स्वयंवर सभा में अपना-अपना वर चुनने के उपक्रम में लगी थीं। वर चुनने के उनके अधिकार का हनन देवव्रत भीष्म जैसे महान योद्धा के ने किया। इनमें से दो अम्बिका और अम्बालिका विचित्रवीर्य की पत्नी बनीं। अम्बा एक अन्य राजा शल्व नरेश से प्रेम करती थी—यह जानने के बाद विचित्रवीर्य ने उससे विवाह करने से इंकार कर दिया। भीष्म ने उसे उस राजा शाल्व के पास भिजवा दिया। पर, शाल्व ने अम्बा को स्वीकार नहीं किया। लौटकर अम्बा हस्तिनापुर आई। भीष्म से विवाह की याचना की। भीष्म ने प्रतिज्ञाबद्ध बताकर विवाह से इंकार कर दिया। अम्बा को भीष्म से विवाह कराने का परशुराम ने भी वचन दिया। पर भीष्म ने उनके अदेशों की अवहेलना की। नाराज परशुराम ने तब भीष्म को युद्ध के लिए ललकारा। युद्ध भयंकर हुआ पर बराबरी का रहा। देवताओं ने बीच-बचाव कर गुरु और शिष्य के बीच का युद्ध शांत करा दिया। भीष्म के द्वारा गुरु के अपमान की इस घटना को परशुराम भूल न सके। उन्होंने तभी निश्चय किया कि अब वे किसी क्षत्रिय को अपना शिष्य नहीं बनायेंगे। तब अम्बा ने क्रोधित होकर भीष्म से कहा कि उनकी मृत्यु का कारण वह बनेगी और यह कहकर चली गयी। उसने भगवान शिव की घोर तपस्या की और अगले जन्म में शिखंडी के रूप में जन्म लेकर भीष्म की हत्या में महत्वपूर्ण भागीदारी बनी। अपने अंधे भतीजे धृतराष्ट्र के विवाह के लिए गांधार की राजकुमारी गांधारी को जबरन उठा ले आने वाले भीष्म ही थे। शकुनी गांधार के इस अपमान को कभी भूला न सका और भीतर ही भीतर हस्तिनापुर को कमजोर

करने में भूमिका निभाता रहा। धृतराष्ट्र की सभा में कुरुओं की पुत्रवधु पांचाली (गांधारी) का चीरहरण भी रोक पाने में भीष्म विफल साबित हुए। शकुनि के बिछाए घूत-क्रीड़ा के महाजाल को भी काट नहीं सके। कुरुक्षेत्र के भीषणतम युद्ध में हुए नरसंहारों के लिए उनकी प्रतिज्ञा बहुत बड़ी कसूरवार साबित हुई। इन्हीं अंतर्विरोधों के कारण लगता है राजा पांडु के रिश्तेदारों वसुदेव और देवकी को कंस से सुरक्षा कर पाने में हस्तिनापुर अक्षम साबित हुआ। द्रोणाचार्य थे तो महान धनुर्धर पर उनकी स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी। वे अपने गुरुकुल के मित्र राजा धृपद से अपने अपमान का बदला लेने के लिए ही कौरवों और पांडवों का गुरु बनना स्वीकार किया था। इसी बदले की भावना ने उन्हें सत्ता पक्ष का दास बना दिया और कुरुक्षेत्र के युद्ध में उनका दुःखद अंत भी हुआ। उनके पुत्र अश्वत्थामा के पीड़ादायक जीवन और उसके चीत्कार के लिए भी दोषी आचार्य द्रोण के पूर्व कर्म ही थे। धर्म विरोधी कृत्यों को अंजाम देने वाले राजसत्ता का सही अवसर आने पर भी वे दामन छोड़ नहीं सके और धृतराष्ट्र की तरह पुत्र मोह से हर समय ग्रसित दिखे।

श्रीकृष्ण ने जब अपनी आँखें खोली और कर्मक्षेत्र में अपना पाँव रखा तो वह सब कुछ नजारा देखने को मिला। बाकी कालचक्र के कारण उन्होंने सब कुछ समझ लिया था। उन्होंने बचपन में ही अपने रिश्तेदारों कंसादि से जिन्दगी के खट्टे-मीठे अनुभवों का स्वाद चख लिया था। उन्होंने अनुभव किया कि महाभारत अब नाम का महाभारत रह गया है। राजसत्ता नैतिक मूल्यों से विहीन हो गई थी। बिदुर जैसे धर्मज्ञ एवं ज्ञानी व्यक्तियों के परामर्श का कोई मोल नहीं रहा था। द्रोण, भीष्म पितामह जैसे लोग बस माननीय भर रह गये थे। जान-अनजाने अनाचारियों को उनका संरक्षण प्राप्त हो रहा है।

विश्व इतिहास की यह आश्चर्य कर देने वाली घटना थी कि श्रीकृष्ण को मारने के लिए उनके जन्म का इंतजार हो रहा था। मारने की वृहद तैयारी मथुरा में रची जा चुकी थी। मथुरा की निर्दयी राजसत्ता ने जनमते ही श्रीकृष्ण के अबोध व निर्दोष भाइयों को निगल लिया था। कंस के कोप से बचने के लिए कृष्ण को भी सुरक्षा की दृष्टि से नंद बाबा के यहाँ गोकुल में छुपना पड़ा था। दुधमुँहे कृष्ण को मारने के लिए

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 97

कंस ने पूतना के माध्यम से अनगिनत दुधमुंहे बच्चों की हत्या करवा दी थी। पूतना एक ऐसी राक्षसी मातृशक्ति थी—जिसने दूध के बदले दुधमुंहे श्रीकृष्ण को हलाहल विष का पान कराया। यहां एक विचित्र दृश्य देखने को मिला। शिव समुद्र के महागरल को कंठ में धारण कर नीलकंठ बन गये और यहां पूतना का स्तन पान कर सांवले श्रीकृष्ण थोड़ा और काले पड़ गए और श्याम कहलाए। पूतना उनके लिए काल बनकर आई थी। पर उन्होंने उसे मातृ स्वरूप में ही देखा और विष को दूध समझकर पूरी की पूरी हलक में निचोड़ लिया—जब तक कि पूतना का अंत नहीं हो गया। पूतना के बाद भी श्रीकृष्ण को मारने का प्रयास थमा नहीं। कंस ने अनेक प्रयास किये पर सफल नहीं हुआ बल्कि उसके भेजे सभी मायावी मारे गये। पूतना को अभी गोकुलवासी भूले भी नहीं थे कि बवंडर रूपधारी कंस का बफादार दैत्य तृणावर्त ने गोकुल पर धूल कणों का बवंडर खड़ा कर दिया। बवंडर ने सब कुछ ओझल कर दिया। तृणावर्त रूपी बवंडर कृष्ण को उड़ा ले गया। कृष्ण ने तृणावर्त को गला घोटकर मार डाला। कंस के उपद्रव और बच्चों की उससे सुरक्षा के लिए गोकुलवासियों ने अपनी गौओं सहित वृंदावन में डेरा डाल दिया। यहाँ पर श्रीकृष्ण, बलराम ने वत्सासुर, बकासुर, अघासुर, धेनुकासुर और उसके अन्य परिजनों का संहार किया।

कालिया नाग के विष से यमुना का जल विष के समान हो गया। यहाँ जल प्रदूषण को समाप्त कर बालक श्रीकृष्ण जल-संरक्षक जल पुरुष के रूप में दिखे। यहीं बलराम जी ने प्रलम्बासुर का वध किया। श्रीकृष्ण ने वन में लगे दावानल को बुझाकर गौओं समेत समस्त जीव-जगत और पर्यावरण की रक्षा की। श्रीकृष्ण ने यहीं पर अपने योगबल से अग्नि को पी लिया—वैसे ही जैसे समुद्र मंथन के समय शिव ने हलाहल विष का पान कर जगत की रक्षा की थी। नग्न-स्नान की एक दूषित परंपरा से होने वाली हानि से गोपों को मौलिक रूप से अहसास कराकर सदा के लिए इस पर विराम लगाने की सफलता का श्रेय भी श्रीकृष्ण के नाम जाता है। उन्होंने खंडचुड़, कयक्ष, अरिष्टासुर (वृषासुर) केशी एवं रूयोमासुर नामक राक्षसों का भी अंत किया। कंस के बुलावे पर अक्रूर जी के साथ मथुरा पहुंचे श्रीकृष्ण-बलराम की

98:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

जोड़ी ने अपने कारनामों से मथुरावासियों में भरोसा की अलख जगायी। कंस की रूपवती दासी त्रिवक्ता (कुब्जा) को अपने औषधीय ज्ञान से कुब्जापन दूर किया। कंस की रंगशाला में रखे धनुष को तोड़ दिया और कंस के भेजे सैनिकों को उसी धनुष के टुकड़े से मार डाला। रंगशाला के मुख्य द्वार पर कुवलियापीड हाथी और उसके महावत को भी मार डाला। रंगशाला में कंस के पहलवानों चाणूर, शल, तीशल को कृष्ण ने और मुष्टिक और कूट को बलराम ने मल्ल युद्ध में मार गिराया। यादवों को बंदी बनाने व मार डालने के कंस के आखिरी कोशिश को भी श्रीकृष्ण ने नाकाम कर दिया। उन्होंने रंगशाला में जनसमुदाय के बीच सिंहासन से खींचकर कंस का वध कर दिया। लड़ने आये कंस के छोटे आठ भाई भी मार डाले गये। श्रीकृष्ण ने उस कारागार का दर्शन किया जहाँ उनका जन्म हुआ था। माता-पिता को उस बन्दीगृह से मुक्त कराया।

अपने नाना उग्रसेन को मथुरा के राज सिंहासन पर बैठाया और यादवों का राजा घोषित किया। उन्होंने यहाँ भी सिद्ध किया कि वे दोनों भाई सत्ता के लोभी नहीं हैं। अपने दामाद कंस की हत्या का बदला लेने के लिए जरासंध ने मथुरा पर 17 बार हमला किया। मथुरावासियों की जरासंध व कालयवन से रक्षा के निर्मित समुद्र द्वारा प्रदत्त उभरे टापू पर श्रीकृष्ण ने देव शिल्पी विश्वकर्मा की मदद से द्वारिका नगरी बसाई। यादवों को ले जाकर भी वहीं बसाया।

—‘आज’, पटना, संपादकीय पृष्ठ।

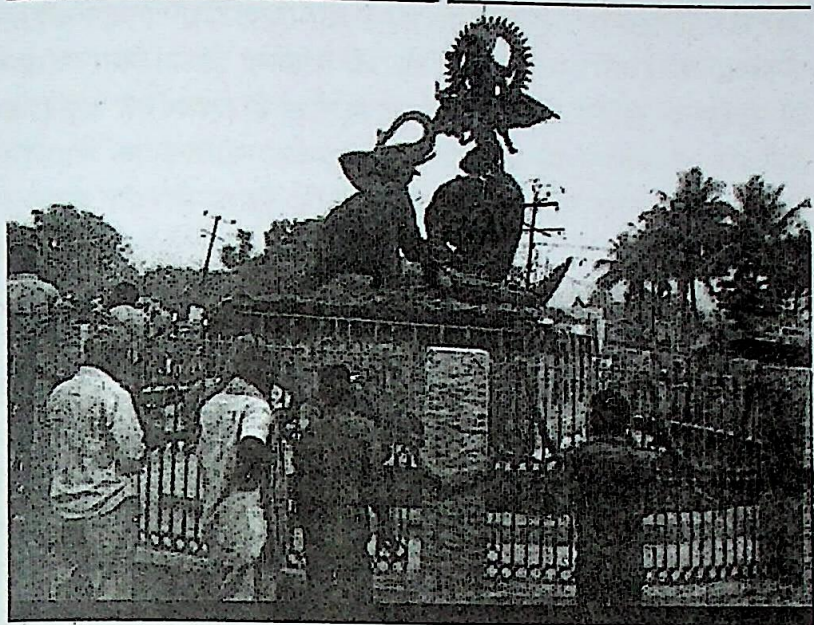


श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान का प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

वर्ष 1999 का माघ मास चिरस्मरणीय रहेगा। श्री गजेन्द्र मोक्ष श्री बाला जी वेंकटेश, श्री देवी, भू-देवी, लक्ष्मी देवी व आलवार संतों को प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही हरिहरक्षेत्र सोनपुर भारतवर्ष के अष्टोत्तरशत दिव्य देशों में शामिल हो गया। यह स्थल पहले से ही भारत के सात महाक्षेत्रों में सुख्यात है। दक्षिण और उत्तर की संस्कृति एक हुई। दक्षिण के वैष्णव संत स्वामी रामानुजाचार्य (सन् 1017-1137 ई.) सोनपुर की हर सांस में विराजमान हो गये। श्री सम्प्रदाय, रामानुज मत या विशिष्टाद्वैत सिद्धांत के प्रचार-प्रसार का यह केन्द्र बन गया। दक्षिण और उत्तर के इस महामिलन को लाखों तृषित नेत्रों ने अपनी आँखों से देखा। परितृप्त भी हुये। आध्यात्मिक दुनिया में विचरण का आनन्द भी उठाया।

गंगा एवं गंडक के प्राचीन संगम स्थल साधु गाछी सोनपुर में द्रविड़देशीय शैली पर नवनिर्मित 'श्री गजेन्द्र मोक्ष देव स्थानम् दिव्यदेश' सज-धज कर तैयार था। देवस्थानम् के राजगोपुरम् से होती हुई एक स्वर्णित आभा सर्वत्र दृश्यमान हो रही थी। युगपुरुष परम तेजस्वी वीतराग परिव्राजकाचार्य योगिराज अनन्त श्री विभूषित जगदाचार्य श्री श्री विष्वक्सेनाचार्य श्री त्रिदंडी स्वामी जी महाराज (अब ब्रह्मलीन) के शुभ संकल्प का यह दिव्यदेश प्रतिफल है जिसे उनके परम यशस्वी शिष्य जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी लक्ष्मणाचार्य जी ने अपने अथक परिश्रम से पूर्ण करा लेने में सफलता हासिल की। यूँ कहिए कि आशीर्वाद गुरु जी का और शिष्य का अहोभाग्य। स्वामी लक्ष्मणाचार्य जी ने इस पावन अभियान के क्रम में जिसे भी छुआ-वही सोना बन गया।

100:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला



गजेन्द्र मोक्ष स्मारक, गज-ग्राह चौक, सोनपुर

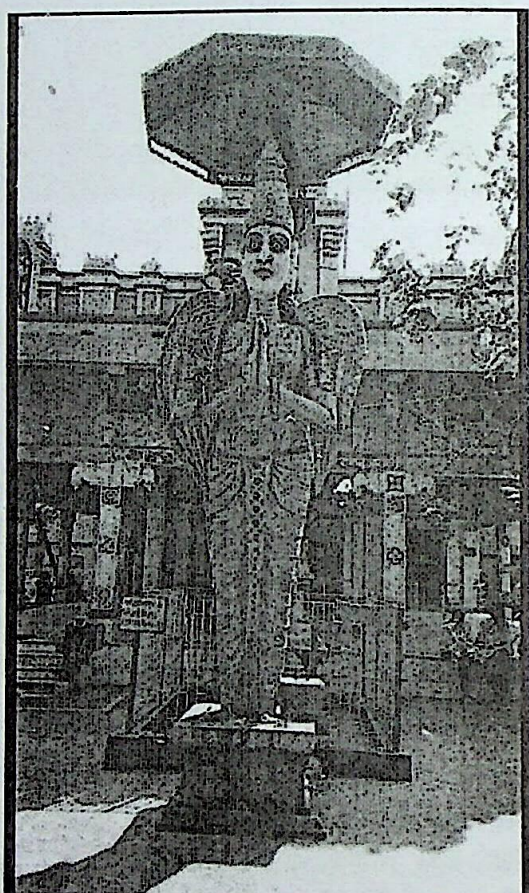
श्री लक्ष्मी नारायण यज्ञ सह श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान का प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव लगातार पाँच दिनों तक चला। माघ शुक्ल नवमी (27 जनवरी, 1999) से माघ शुक्ल पूर्णिमा (31 जनवरी 1999) तक चले इस महोत्सव को अध्यक्षता श्रीकांची प्रतिवादी भयंकर मठाधीश 1008 श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री निवासाचार्य (गादी स्वामी) जी महाराज ने की। समारोह के स्वागताध्यक्ष स्वयं स्वामी लक्ष्मणाचार्य जी थे। यज्ञानुष्ठान के लिए एक दिन पूर्व जलयात्रा का शास्त्रोचित विधान संपन्न हुआ। प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का दृश्य बड़ा ही मनोरम था। बारह की संख्या में दक्षिण भारतीय ब्राह्मण समवेत स्वर से वैदिक मंत्रोच्चार कर रहे थे। इन्हीं मंत्रोच्चार के बीच त्रिदण्डी स्वामी जी महाराज ने सर्वप्रथम देवस्थानम् प्रांगण में गुरुपीठ कांची प्रतिवादी भयंकर सिंहासनाधेश्वर श्री निवासाचार्य गादी स्वामी जी महाराज के चरणों की वन्दना की। यह क्रम चालीस मिनट तक चला।

स्त्री-शक्ति का रेला उमड़ आया था। देवी स्वरूपिनी हजारों महिलायें पवित्र जल से भरे कलश को अपने मस्तक पर धारण कर

सुशोभित हो रही थी। अपराहन एक बजे भक्ति की त्रिवेणी में आनन्द रस से सराबोर महिलाओं का यह समूह श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान की जय जयकार करते हुये मुख्य यज्ञ मंडप की परिक्रमा किया। नगर परिक्रमा में जुलूस के अग्रिम पंक्ति में चल रहे दोनों हाथी ऐश्वर्य के प्रतीक बने हुये थे। इन हाथियों के हौदे पर त्रिदण्डी स्वामी जी का एक बड़ा चित्र व श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान की उत्सव प्रतिमा विराजमान थी। सड़क के दोनों किनारे खड़े व घरों की छतों से श्रद्धालुओं द्वारा लगातार पुष्प वृष्टि की जा रही थी। हरिहरक्षेत्र सोनपुर की धरती खुशी से फूली नहीं समा रही थी।

अब आइये जरा हाजीपुर-सोनपुर के मध्य गंडक के विशाल

वक्ष-स्थल पर। यहीं पर प्रवचन पंडाल, मंच, संतों व भक्तों के विश्राम स्थल बने हुये हैं। एक ओर सर्वदा सुरक्षित शांत वातावरण में त्रिदण्डी स्वामी जी की कुटिया है। इनका प्रवचन लगातार चल रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जिस प्रकार समुद्र में 'द्वारिका' का निर्माण हुआ और कार्य सम्पन्न व श्रीकृष्ण के गमन के उपरान्त पुनः समुद्र ने उसे अपने अन्दर समेट लिया—ठीक उसी प्रकार दिव्यदेश की सोनपुर में स्थापना के निमित्त देवी नारायणी ने



गरुड़ देव की प्रतिमा

102:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

अपने बीज 'द्वीप' खड़ा कर दिया है। नदी के मध्य उभरे इस द्वीप की शोभा अनुपम थी। देश के कोने-कोने से जुटे वैष्णव भक्तों के महालिमन का यह नदी गवाह बनी। नदी पर फिर ऐसी रेत कभी नहीं उभरी। श्रद्धालुओं का कहना है कि देवास्थानम् की स्थापना व प्राण प्रतिष्ठा के लिए ही श्रीमन्नारायण ने इस 'द्वीप' का निर्माण कराया था—जिसे भगवती-नारायणी ने पूर्ण किया।

नवनिर्मित दिव्यदेश में प्रवचन पंडाल एवं त्रिदण्डी स्वामी जी की कुटिया तक पहुंचने के लिए प्रकृति प्रदत्त रेत की सड़क। इस सड़क के दोनों किनारे विविध प्रकाश की दुकानें सजी हैं। सड़कों को बाँस की बैरेकेटिंग से घेर दिया गया है। कहीं त्रिदण्डी साहित्य की बिक्री हो रही है तो कहीं भजन-माला की। सुहागिनों की मनपसन्द सिन्दुर, बिन्दी भी बिक रही है तो माली समूह फूलों की माला बिक्री कर अघाता नहीं थकता। जगह-जगह मिठाई और पूरी-जलेबी की दुकान भी है। मिट्टी के बर्तन, कुल्हड़ आदि भी बिक रहे हैं। बाँसुरी की बिक्री करने वाली जमात भी जुटी है। झांझ-करताल, ढोल-ताशे के साथ कीर्तन-भजन का दौर भी जारी है। स्वामी लक्ष्मणाचार्य जी के कुशल मार्गदर्शन में निरंतर दरिद्रनारायण भोजन (24 घंटे) प्रसाद वितरण आदि कार्य संचालित हो रहा था।

रेत पर बने प्रवचन-पंडाल स्थल पर संत-महात्माओं व जगद्गुरुओं की प्रेरणादायी वाणी सुनने के लिए आतुर-व्याकुल श्रद्धालुओं ने अपनी-अपनी जगह ले ली थी। कांची प्रतिवादी भयंकर सिंहासनाधीश्वर गादी स्वामी जी ने अपने प्रवचन के क्रम में जगद्गुरु स्वामी लक्ष्मणाचार्य जी को श्री सम्प्रदाय का अन्यतम अंग बताया। उन्होंने भगवान के अर्चावतार, परावस्था, नित्य वैकुण्ठ, व्यूहावस्था, विभवावतार आदि पर विशद प्रकाश डाला। उन्होंने श्री गजेन्द्र मोक्ष देवस्थानम् दिव्य देश पीठ की स्थापना करने वाले स्वामी लक्ष्मणाचार्य की बार-बार प्रशंसा की। काशी के जगद्गुरु स्वामी दीनबन्धु दीनानाथाचार्य जी ने जीव और जीवात्मा के बीच परस्पर सम्बन्ध पर प्रकाश डाला। श्री त्रिदण्डी स्वामी जी महाराज ने विशिष्टाद्वैत सिद्धांत पर प्रकाश डालते हुए गादी स्वामी से सम्बन्धित बातों के प्रचार-प्रसार करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि

इस यज्ञ में श्री सम्प्रदाय के 8 आचार्य उपस्थित हैं। उन्होंने प्रवचन में कहा कि 'नास्तिक दो प्रकार के होते हैं—एक वह जो कहता है कि 'नहीं ब्रह्म है।' दूसरा वह है जो कहता है कि 'हम ही ब्रह्म हैं।' देवरिया के जगद्गुरु राजनारायणाचार्य, पलामू के स्वामी गोविन्दाचार्यजी, डेहरी ऑन सोन के स्वामी राघवेन्द्राचार्य जी, अयोध्या के अनन्ताचार्य जी के अलावा स्वामी रामचन्द्राचार्य जी, पं. रामदत्त त्रिपाठी, श्री निवास तिवारी, याज्ञिक सुदर्शनाचार्य जी, स्वामी उपेन्द्राचार्य, कैलाशपति त्रिपाठी, शेषनारायणाचार्य, पं. शिवपूजन शास्त्री, रामदत्त पाठक आदि ने भी अपने प्रवचनों से जनमानस को तृप्त किया। भारत प्रसिद्ध भजन गायक पं. दीपक मिश्रा की संगीत साधना से भी लोग रू-ब-रू हुये। इससे पूर्व यज्ञ अनुष्ठान के दूसरे दिन 27 जनवरी को ही राज्य के दो पूर्व मुख्यमंत्रियों राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद व रामसुन्दर दास जी ने दिव्यदेश के नवनिर्मित राजगोपुरम्, गरूड़ स्तम्भ, जगमोहन का दर्शन किया। श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान की पूजा की। राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने नवनिर्मित सड़क एवं राजगोपुरम् (मुख्य प्रवेश द्वार) का उद्घाटन भी किया। लालू प्रसाद जी ने गादी स्वामी जी की आरती भी उतारी। दोनों ही पूर्व मुख्यमंत्रियों ने रेती पर जाकर त्रिदण्डी स्वामी से आशीर्वाद भी ग्रहण किया। राज्य के तत्कालीन नगर विकास राज्य मंत्री उदित राय महोत्सव तक लगातार एक सेवक की भूमिका में रहे। नारायण राय तो मंदिर निर्माण से लेकर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव तक लगातार एक सेवक की भूमिका में रहे।

यह तो हुई यज्ञ निर्वहन की बात पर इस महायज्ञ को पूर्ण कराने में अहम् भूमिका निभानेवाले यज्ञ समिति की चर्चा न हो तो यह एक अपराध होगा। यज्ञ समिति के अध्यक्ष जवाहर प्रसाद सिंह, सचिव सुनील कुमार सिंह (सोनपुर नगर पंचायत के प्रथम अध्यक्ष) एवं बसासन शर्मा समेत 151 सदस्यीय टीम आरम्भ से अंत तक यज्ञ के सफलापूर्वक संचालन के लिए समर्पण भाव से काम करती रही। यज्ञ समिति के त्रिदण्डी स्वामी का अभिनन्दन भी किया। और, उनकी भावभीनी विदाई भी की।

—'हरिहरक्षेत्र' पत्रिका, वर्ष-2,
अंक-1, जनवारी, 2010



104:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला



सोनपुर मेले में हुई थी किसान सभा की स्थापना

हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेले में आज से 81 वर्ष पूर्व बिहार प्रांतीय किसान सभा की स्थापना हुई थी। यह कौन जानता था कि एक दिन यही किसान सभा अखिल भारतीय स्वरूप धारण कर लेगा। आज यह अखिल भारतीय किसान सभा के नाम से देशभर में किसानों का गौरव बना हुआ है। इस किसान सभा के हित में निरंतर संघर्ष किया और अपना वाजिव हक प्राप्त करने में हर बार सफलता प्राप्त की।

मेले के दौरान ही 1929 के 17 नवम्बर को बिहार प्रांतीय किसान सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संन्यासी व किसान नेता स्वामी सहजानंद सरस्वती ने की। इसी सम्मेलन में प्रांतीय किसान सभा का गठन हुआ जिसके प्रथम प्रांतीय अध्यक्ष स्वामी जी ही हुए। इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से डॉ. श्रीकृष्ण सिंह महामंत्री पद के लिए निर्वाचित किए गये। श्री सिंह बाद में बिहार के मुख्यमंत्री भी रहे। भारत के प्रथम राष्ट्रपति रहे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, बिहार विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष रहे राम दयालु सिंह मंत्री रहे। अनुग्रह नारायण सिंह आदि कई कांग्रेसी नेता राज्य कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये।

इस सम्मेलन की पहली सफलता यही थी कि मेला में प्रांतीय किसान सभा का गठन हुआ जिसमें तत्कालीन सरकार के किसान विरोधी निर्णयों की जबरदस्त आलोचना की गयी। मेरा जीवन संघर्ष नामक अपनी पुस्तक के पृष्ठ 206 पर स्वयं स्वामी सहजानंद सरस्वती

ने लिखा है कि मेला में खासा लंबा शामियाना खड़ा था। लोगों का जमावड़ा भी अच्छा था। एक तो सभा, दूसरे मेला। फिर जमावड़े में कमी क्यों हो? इस किसान सम्मेलन में रामवृक्ष बेनीपुरी भी वक्ता के रूप में मौजूद थे। इस सम्मेलन में बिहार व्यवस्थापिका सभा द्वारा काश्तकारी बिल के नाम पर किये जाने वाले खतरनाक संशोधनों पर जमकर बहस हुई। इस बिल को किसानों के हित पर जबर्दस्त कुठाराघात करने वाला बताया गया। स्वामी जी ने काश्तकारी बिल की पोल खोली। परिणाम सामने आया कि व्यवस्थापिका सभा के सरकारी सदस्य यह बात कहते हुए उक्त तथाकथित काश्तकारी बिल को वापस ले लिया कि किसान सभा इसका विरोध कर रही है।

सन् 1935 के नवम्बर माह में मेले के दौरान हाजीपुर में संपन्न प्रांतीय किसान सम्मेलन में स्वामी जी ने खुद जमींदारी हटा देने के लिए प्रस्ताव स्वीकृत कराया। जमींदारी प्रथा सदा-सदा के लिए जलकर राख हो गयी। मात्र 5 वर्षों के के दौरान किसानों की यह सभा धड़कन बन गयी। 1926 के 11 अप्रैल को लखनऊ में भारतीय किसान कांग्रेस की स्थापना हुई जिसकी अध्यक्षता स्वामी सहजानंद सरस्वती ने की। बाद में इसका नाम बदलकर अखिल भारतीय किसान सभा कर दिया गया। किसानों को इस अखिल भारतीय प्रथम सम्मेलन में कांग्रेस अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू ने स्वयं उपस्थित होकर किसान संगठन का स्वागत और अभिनंदन किया। आंध्र के किसान नेता आचार्य एनपी रंगा संगठन के महासचिव चुने गये। स्वामी सहजानंद के अलावा आचार्य एनपी रंगा, गुजरात के किसान नेता इन्दु लाल याज्ञिक, बाबा साहेब सिंह भखना, बंकिम मुखर्जी, आचार्य नरेन्द्र देव, जय प्रकाश नारायण, पंडित यमुना कार्थी, पंडित यदुनंदन शर्मा, पंडित कार्यानंद शर्मा, मोहन लाल गौतम, इंजीनियर एमएस नम्बुदरीपाद, जेइए अहमद, अखिल भारतीय किसान सभा के संस्थापकों में से थे।



‘187 वर्ष पूर्व राजा व नवाबों ने डाला था डेरा’

187 वर्ष पूर्व 1822 के हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेले में भारत वर्ष के 50 राजा व 50 नवाबों का खेमा गड़ा था और तो और 20 हजार उमरांव एवं जमींदार भी मौजूद थे। हिन्दु समाज के अग्रणी व सजग प्रहरी माने जाने वाले 50 हजार ब्राह्मणों ने उपस्थित होकर मेले की गौरव-गरिमा में चार चांद लगाया था। तब मेला क्षेत्र के कालीघाट व हाजीपुर के कौनहारा घाट पर गंगा-गंडक नदियों का संगम हुआ करता था। इसी संगम स्थल पर कार्तिक पूर्णिमा के दिन बिहार प्रांत के हिन्दुओं का विशाल जमावड़ा हुआ और संगम के पावन जल में उन्होंने डुबकी लगायी।

यह रहस्योद्घाटन एक प्रसिद्ध बंगला पत्रिका ‘संवाद कौमुदी’ से हुआ है। 1822 में मेले की दिशा-दशा का चित्रण इस पत्रिका के पटना संवाददाता ने किया था। हाजीपुर, सोनपुर दोनों ही स्थानों पर गंगा-गंडक नदियों के संगम में लोगों ने स्नान किया था। यह मेला 28 नवम्बर को आरंभ हुआ। इस स्नान के अवसर पर साधु-संतों का महामिलन देखने लायक था। संपूर्ण गंगा-गंडक नदी के दोनों किनारे स्नानार्थियों से पटे पड़े थे। पूजा-पाठ, मंत्र-तंत्र, झाड़-फूंक का भी नजारा था। गंगा और नारायणी की जयजयकार से संपूर्ण सोनपुर एवं हाजीपुर क्षेत्र गूँज रहा था।

मेले में मनोरंजन के साधनों की भी कोई कमी नहीं थी। भला मनोरंजन न हो तो मेला ही क्या? तबके लोग भी आज की तरह

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 109

नृत्य-गीत तथा वाद्य के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दीवाने थे। यही कारण है कि तब भी हरिहर क्षेत्र सोनपुर में रंगारंग कार्यक्रम हुआ करता था और उसके अच्छे दर्शक थे। हरिहर क्षेत्र मेला के अध्यक्ष व सारण प्रमंडल के आयुक्त रहे एके विश्वास ने 'संवाद कौमुदी' में छापे गये समाचार के हवाले से यह जानकारी सार्वजनिक की थी। उन्होंने बंगला पत्रिका के हवाले से यह भी जानकारी दी थी कि अंग्रेजों के अतिरिक्त बिहार प्रांत के दुकानदार और लोग भी घोड़े, गाय, बैल, हाथी, ऊंट भी खरीद-बिक्री हेतु बड़ी संख्या में मेले में आये थे। यह मेला हरिहर क्षेत्र मेला के नाम से जाना जाता था।

मालूम हो कि बाबा हरिहर नाथ का मंदिर सोनपुर में स्थापित होने के कारण हरिहर क्षेत्र कहलाता है और इसी नाम पर हरिहर क्षेत्र मेला लगता है। संवाद कौमुदी ने यह भी लिखा है कि 1822 ई. के इस मेले में 5 लाख स्त्री-पुरुष ने शिरकत की थी। तब यह मेला सात दिनों का था। मेले में वरीय पदाधिकारियों में चार सौ अंग्रेजों ने भाग लिया था। आज यह मेला पशु मेला, कृषि मेला, धार्मिक मेला व अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। तब भी व्यवसाय होता था और अब भी होता है। उस वर्ष घोड़ा व्यापारियों की संख्या दस हजार थी जबकि सामान्य व्यापारियों की संख्या भी पांच हजार आंकी गयी थी। मेले में सर्वाधिक 50 हजार घोड़ा, 5 हजार गाय और बैल, हाथियों की संख्या भी तब दो सौ थी।

आज की तरह उस समय भी बकरी, भेड़, कुत्ता, बिल्ली, चिड़िया और भैंस की बिक्री होती थी। पांच सौ बकरी, भेड़, कुत्ता, बिल्ली भी बिक्री हेतु आए थे। रंग-बिरंगी चिड़ियों की तादाद भी 20 हजार थी।



सनातन धर्मसभा सम्मेलन का गवाह है मेला

बिहार के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सारण जिले के पूर्वी द्वार पर नारायणी जान्हवी और मही नदियों के पावन संगम क्षेत्र में लगने वाले हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेले की धार्मिक पृष्ठभूमि काफी उर्वर है। आज से 94 वर्ष पूर्व देश राजा-महाराजाओं का अभूतपूर्व एकत्रीकरण यहां हुआ जिसमें सनातन धर्म की रक्षा के साथ-साथ उसके प्रचार-प्रसार का संकल्प भी लिया गया। इस अवसर पर आयोजित धर्म सम्मेलन के सभापति महाराज दरभंगा थे। धर्मात्मा महाराज रीवा व महाराज हथुआ भी सम्मेलन के मुख्य संरक्षक थे।

धर्म की जय हो और अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो और विश्व का कल्याण हो का महामंत्र इसी हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेले में राष्ट्रव्यापी प्रसारित हुआ और आज भी जन-जन की वाणी पर बसा हुआ है। यह धर्म सम्मेलन सोनपुर के अखिल भारतवर्षीय सनातन धर्म के सभा भवन में वर्ष 1915 के कार्तिक के मेले के समय हुआ जिसमें 20 से 25 हजार लोगों ने शिरकत की थी। इसी वर्ष 27 नवंबर को प्रकाशित पाटलिपुत्र नामक अखबार में लिखा है कि धर्म सम्मेलन के सभापति महाराज दरभंगा के बगल में बायीं ओर महाराज रीवा और दाहिने ओर महाराज हथुआ विराजे। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष व्याख्यान वाचस्पति पंडित दीन दयालु शर्मा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि महाराज रीवा के शुभ आगमन से आज यहां की अपूर्व शोभा हो गयी है। जिस प्रकार हरिहरक्षेत्र में नारायणी, जान्हवी और मही का संगम है,

इसी प्रकार यहां रीवां, दरभंगा और हथुआ नरेशों का सम्मेलन हुआ है। कहना चाहिए कि यहां महाराज रीवा कृष्ण भक्त होने के कारण विष्णु रूप से, हमारे सभापति दरभंगा महाराज रामेश्वर शिव रूप से और महाराज हथुआ ब्राह्मण होने के कारण ब्रह्मा स्वरूप से एकत्र हुए हैं। आज इन त्रिदेवों का सम्मेलन यथार्थ में धर्म सम्मेलन हुआ है।

इस सम्मेलन में धर्म की जय का उद्घोष जन-जन की वाणी बना। राजा महाराजाओं का आश्रय मिलने के कारण आम जनता भी काफी खुश हुई। पाटलिपुत्र ने अपने इसी अंक में सनातन संस्कार का जिक्र करते हुए लिखा है कि सर्वप्रथम महाराज रीवां ने मेला स्थित धर्म सभा मंडप के दरवाजे पर दर्शन दिया। जनता ने बड़े प्रेम से महाराज रीवां का स्वागत और अभिनंदन किया। महाराज रीवां के सभा मंडप में प्रवेश करते हुए महाराज दरभंगा और हथुआ ने सभा मंडल के बीच अग्रसर हो महाराज की अभ्यर्थना की। ब्राह्मण भक्त महाराज रीवां ने दोनों नरेशों के पैर छू प्रणाम किया। यह दृश्य इस जमाने में भी ब्राह्मण गौरव का महात्म्य बढ़ाने वाला था। स्वामी सहजानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक ब्रह्मर्षि वंश विस्तार में इसका विस्तार से वर्णन किया है। तब से अब तक यह मेला सनातन धर्म का लगातार अलख जगाता आ रहा है। राजे-महाराजे तो अब नहीं रहे और न अब उनके वंशजों का ही यहां आना होता है परन्तु वर्षों पूर्व इन धर्मात्मा नरेशों ने धर्म की जय-जयकार की जो अलख यहां जगायी वह आज भी इसकी फिजा में गूंज रही है।



हिंदी के प्रचार-प्रसार का केन्द्र रहा है मेला

हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का प्रमुख केन्द्र रहा है। यही पर 8 और 9 नवम्बर 1919 को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन संपन्न हुआ था। सन् 1925 में सम्मेलन का विशेष अधिवेशन भी यहीं हुआ जिसमें हिन्दू-उर्दू के लिपिगत विवादों को समाप्त कर देवनागरी लिपि को ही अपनी मान्यता प्रदान कर प्रचार करने पर जोर दिया गया। राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा देवनागरी लिपि का प्रचार आन्दोलन यहां हिन्दू महासभा के प्लेटफार्म से शुरू हुआ। जगह-जगह दीवारों पर देवनागरी लिपि में हिन्दी के प्रचारात्मक दोहे मोटे-मोटे अक्षरों में लिखे गये।

यह सब हुआ सोनपुर साहित्य संपूर्ण सारण जिले में सांस्कृतिक जागरण के कारण। तब का मुजफ्फरपुर जिला वैशाली सहित साहित्यिक जागरण का केन्द्र बन चुका था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सर्वप्रथम अधिवेशन 8 और 9 नवम्बर 1919 को मेले के सूर विजय थियेट्रिकल कंपनी के दर्शक-दीर्घा में सम्पन्न हुआ था। इस सम्मेलन के प्रधानमंत्री पंडित मथुरा प्रसाद दीक्षित थे। साहित्य सम्मेलन के स्वागत कारिणी के सभापति थे मुजफ्फरपुर के म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन वैद्यनाथ प्रसाद सिंह तथा अधिवेशन के सभापति हिन्दी जगत के हास्य रस के अवतार पंडित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी। इस सम्मेलन में डा. राजेन्द्र प्रसाद (राष्ट्रपति), आचार्य बदरी नाथ वर्मा (शिक्षा मंत्री), राय बहादुर द्वारकानाथ (मुजफ्फरपुर), पांडेय जगन्नाथ प्रसाद (पटना कॉलेज), सोना सिंह

चौधरी (संपादक पाटलिपुत्र), पंडित पारसनाथ त्रिपाठी (आरा), पंडित जीवानंद शर्मा, पंडित राम दहिन मिश्र, राम दयालु सिंह आदि मौजूद थे। साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री पंडित दीक्षित के सहयोगी के रूप में रामधारी प्रसाद विशारद (मुजफ्फरपुर), राघव प्रसाद सिंह (वैनी दरभंगा), लतीफ हुसैन (ललित कुमार सिंह नटवर) तथा पीर मुहम्मद मुनिस (बेतिया, चम्पारण) थे।

साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री रहे पंडित मथुरा प्रसाद दीक्षित ने इस सम्मेलन की खासियत पर अपनी टिप्पणी की थी कि साहित्य सम्मेलन में साहित्यकारों का जैसा अप्रत्याशित जमघट मेले के सोनपुर सारण अधिवेशन के अवसर पर हुआ वैसा कभी नहीं देखा गया। सन् 1919 में ही यहां राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा देवनागरी लिपि का प्रचार आन्दोलन हिन्दू महासभा के प्लेटफार्म से शुरू हुआ। कमला दत्त पांडेय, राम स्वारथ सिंह शिक्षक, संत राम कृपाल दास आदि ने इस आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। हरिहरनाथ मंदिर के महंत तथा स्थानीय जमीन्दारों की भी गहरी आस्था इस आन्दोलन में थी। प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन के बाद साहित्यिक आंदोलन ने यहां जोर पकड़ा।



मेला में पड़ी थी बिहार को बंगाल से अलग करने की नींव

हरिहरक्षेत्र मेले में आज से 103 वर्ष पूर्व बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी का गठन हुआ था। इसके प्रथम अध्यक्ष हसन हमाम बने। इसी मौके पर बिहार को बंगाल प्रांत से अलग करने की नींव पड़ गयी। बिहार को बंगाल से अलग करने के लिए 1894 से चलाये जा रहे आंदोलन को यहीं मुकाम मिला। इसका फलाफल तुरंत दृष्टिगोचर हुआ। दिल्ली के शाही दरबार में ब्रिटिश सम्राट ने बिहार और उड़ीसा को मिलाकर एक नया प्रांत बनाने की घोषणा की। 1 अप्रैल 1912 को बिहार प्रांत का विधिवत उद्घाटन हुआ जिसकी राजधानी पटना में बनी। प्रसिद्ध इतिहासकार कौलेश्वर राय ने अपनी बिहार का इतिहास नामक पुस्तक में पृष्ठ संख्या 362 पर जिक्र किया है कि 1905 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक केन्द्रीय समिति का गठन किया और समिति ने सिफारिश की कि प्रत्येक प्रांत में एक कांग्रेस समिति का गठन होना चाहिए जो भिन्न-भिन्न जिलों का प्रतिनिधित्व करे। इसी सिफारिश के अनुसार 1908 ई. में सच्चिदानंद सिन्हा ने मौलाना मजहूरूल हक, हसन हमाम, दीप नारायण सिंह के सहयोग से बिहार के कांग्रेसियों की एक सभा सोनपुर मेले में नवाब सरफराज हुसैन खां की अध्यक्षता में बुलायी। इसी सभा में बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी का गठन हुआ। इसके प्रथम अध्यक्ष हसन इमाम बने।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि सच्चिदानंद सिन्हा और महेश नारायण ने 1894 ई. से ही बिहार को बंगाल से अलग करने के लिए

एक आंदोलन चला रखा था। सोनपुर मेले में बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के गठन के साथ ही बिहार को बंगाल प्रांत से अलग करने की नींव पड़ गयी और आंदोलन ने जोर पकड़ लिया। इतिहासकार श्री राय ने लिखा है कि 12 दिसम्बर 1911 ई. को दिल्ली के शाही दरबार में इंग्लैण्ड के सम्राट ने बिहार और उड़ीसा को मिलाकर एक नया प्रांत बनाने की घोषणा की। 1912 के 1 अप्रैल को बिहार प्रांत का विधिवत उद्घाटन हुआ जिसकी राजधानी पटना में बनी। दिसम्बर 12 में बिहार में पहली बार कांग्रेस का अधिवेशन हुआ।

मजहरूल हक स्वागत समिति के अध्यक्ष थे और सच्चिदानंद सिन्हा महासचिव। 10 जनवरी 1917 को जब भारत मंत्री मांटेग्यू और वायसराय चेम्सफोर्ड भारत आये तो उन्हें उड़ीसा व बिहार कांग्रेस कमेटी ने एक ज्ञापन दिया जिसमें स्वशासन की एक रूपरेखा तैयार की गयी थी।

फलतः 1919 ई. में गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट पारित हुआ जिसके तहत मद्रास, बंबई, बंगाल, बिहार, संयुक्त प्रांत, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, असम और वर्मा गवर्नर के अधीनस्थ प्रांत घोषित कर दिये गये। इसी प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने गांधी जी से स्वीकृति प्राप्त कर अधिनियम लागू किया।

इसमें प्रांतीय कांग्रेस समिति, भविष्य में मुफस्सिल में प्रचार कार्य का संचालन करेगी। जिला समितियां प्रांतीय समिति से आदेश मिलने पर काम करेगी तथा प्रांतीय समिति को उप समिति या संगठन समिति ने अपने-अपने क्षेत्रों के लिए आंदोलन हेतु कुछ नेताओं की नियुक्ति की।

यह सब कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में स्वीकृत असहयोग प्रस्ताव के अनुबंध के आधार पर तैयार अधिनियम के तहत हुआ। इसके बाद सोनपुर में राष्ट्रीय आंदोलन के पक्ष में जनमत तैयार हुआ जिसने राज्य स्तर पर अपनी सहभागिता दर्ज करायी। मेले में कांग्रेस संगठन की नींव ने अलग बिहार राज्य की स्थापना में अपनी भागीदारी दर्ज करा इतिहास में अपना नाम अंकित करा गया।



116:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

विभिन्न संस्कृतियों का संगम बना हरिहर क्षेत्र मेला

विश्व प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला इन दिनों देश के विभिन्न प्रांतों की विविध संस्कृतियों का मिलन भूमि होने के कारण लघु सांस्कृतिक भारत के रूप में तब्दील हो गया है। कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार तथा पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय गीत एवं नाटक प्रभाग, भारत सरकार रांची द्वारा प्रस्तुत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पंजाब का भांगड़ा, पं. बंगाल के पुरुलिया एवं रांची का छऊ, राजस्थान का कलबेलिया व चकरी नृत्य, छत्तीसगढ़ का पंडिवाणी, ईटीवी बिहार का 'ये है मेरा बिहार' भागलपुर से प्रशस्ति की प्रस्तुति मंदार मंथन व अंगिका लोक नृत्य आदि ने मेलार्थियों का जमकर न सिर्फ मनोरंजन किया बल्कि एक ही स्थान पर बैठकर विविधता में एकता का दिग्दर्शन कराया।

मेला के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के मुख्य पंडाल में 18 नवम्बर से जारी विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों की दर्शकों के मन मस्तिष्क में इस कदर छाप पड़ गयी है कि मेलावधि के 18 दिनों के भीतर दो लाख से अधिक कला मर्मज्ञों, संगीत प्रेमियों ने यहां प्रस्तुत विभिन्न कलाओं का रसास्वादन किया।

पुरुलिया की शिव शक्ति नामक संस्था ने 29-30 नवम्बर एवं एक दिसम्बर को प्रसिद्ध छऊ नृत्य प्रस्तुत किया जिनमें किरात अर्जुन, एकलव्य कथा एवं देवी महिषासुर मर्दिनी प्रमुख है। इसी तरह इन्हीं

विषयों पर रांची के कलाकारों का छऊ नृत्य भी जमा। पंजाब का सुप्रसिद्ध भांगड़ा नृत्य को जसविन्दर सिंह एंड पार्टी ने लगातार तीन दिनों तक प्रस्तुत किया। हाजीपुर, सोनपुर के केन्द्र सरकार के विभिन्न सरकारी प्रतिष्ठानों में कार्यरत पंजाबी बिरादरी के लोगों का समूह भी इसे देखने हेतु जुटा रहा। उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो पंजाब के गांव में बैठे हुए हैं। प्रशस्ति, भागलपुर की प्रस्तुति मंदार मंथन नृत्य नाटिका में दर्शकों ने देव-दानवों द्वारा मंदार मंथन, तेरहवें रत्न के रूप में विष की उत्पत्ति, देव दानव समूह का हलाहल विष के प्रभाव में शक्तिहीन व मूर्छा की स्थिति में आना, शिव द्वारा हलाहल विष ग्रहण करना, 14वें रत्न के रूप में अमृत का निकलना, असुरों द्वारा अमृत हड़पने से देवासुर संग्राम का शुभारंभ। देवताओं की रक्षानिर्मित श्री विष्णु का कोमलांगिनी मोहिनी रूप धारण कर दल से देवताओं को अमृत पिलाना और असुर राहू का छल से अमृत चख लेने से क्षुब्ध मोहिनी रूपधारी, श्री विष्णु के चक्र द्वारा राहू की गर्दन धड़ से अलग कर दिया जाना काफी मर्मस्पर्शी एवं लोमहर्षक दृश्य था। मोहिनी के रूप में ऋतु घोष ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत कर देव-दानवों को ही नहीं बल्कि दर्शकों का भी मन मोह लिया। मंदार मंथन में निभाष चन्द्र मोदी, विभाष (शिव) चन्द्र मोदी (ब्रह्मा) सुभाष चन्द्र मोदी (विष्णु), श्वेता रानी (पार्वती), देवगण, दानवगण काफी सराहे गये। प्रशस्ति की ही खेती पर आधारित अंगिका लोक नृत्य 'अबकी अगहनवा में काटबहू जो धनवां'। पछिया मारेला झकोर (समूह लोक नृत्य) आदि भी जमे। छबरा जिला बाराकोट, राजस्थान से पहुंचे 'जानकी लाल एंड पार्टी' द्वारा प्रस्तुत कलबेलिया व चकरी नृत्यों ने 2 से 5 दिसम्बर तक लगातार दर्शकों का मनोरंजन किया। इन नृत्यों को जनता, रूपवती व फूलन ने प्रस्तुत किए। ढोल पर संगत की उदय सिंह ने। 'अजी मेरो घर नहीं है भरतार', पपइया पानी बोले' दिल्ली शहर जानी मुझे बढ़िया चुनर लानी व बनजारा नृत्य में 'चमचम चमके चुंदरी' भी काफी चर्चित रहा। एक दिसम्बर को सुदीपा घोष की प्रस्तुति शास्त्रीय नृत्य 'भरत नाट्यम' में अल्लरिपु, जातिसोरभ, तिलाना आदि की प्रस्तुति की गयी जिसमें नौटु

आंगल एवं गायन पर प्रो. के रमण कुट्टी, मृदंगम पर पीएस गोपन, हारमोनियम पर आचार्य शिवांचल दास की संगत ने प्रभावित किया। वहीं छत्तीसगढ़ से आयी शांतिबाई चेलक ने अपनी वाणी में सम्पूर्ण महाभारत कथा गायन व कथा शैली प्रस्तुत कर महाभारत का सजीव दर्शन करा दिया।



कवियों व शायरों की रचनाओं में भी जीवंत है मेला

हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला कवियों एवं शायरों की रचनाओं में भी जीवंत हैं। इतिहास बोध रखने वाले कवियों की खोजी दृष्टि के कारण यह मेला उनकी रचनाओं में कलमबंद हैं।

आज से 154 वर्ष पूर्व 1856 के मेले में तत्कालीन अंग्रेजी सरकार के खिलाफ पहली लड़ाई की योजना बनी थी। इस बात का रहस्योद्घाटन हुआ है। प्रसिद्ध रणबांकुरा वीर कुंवर सिंह ने इस पहली लड़ाई के संचालन की जिम्मेवारी स्वयं वहन की थी।

प्रसिद्ध कवि आरसी प्रसाद सिंह के महाकाव्य वीरवर कुंवर सिंह में इस बात का उल्लेख विस्तारपूर्वक किया गया है। इतिहास के झरोखे से झांकते हुए उन्होंने अपने इस महाकाव्य में वीर कुंवर सिंह की संपूर्ण जीवनी वर्णन के क्रम में उनके मेला प्रवास का भी विस्तार से चित्रण किया है। उन्होंने लिखा है कि गुप्त सम्मेलन में निर्णय हुआ था कि 'फिरंगी अब सरकार नहीं यह रखनी है। बनी योजना शस्त्र क्रांति की यह सरकार उलटने की। हिन्दू-मुसलमान दोनों का विपुल शक्ति संघात हुआ। प्रथम क्रांति का विगुल बजा, संगठन सूत्र सम्पात हुआ। कुंवर सिंह ने ली सेना संचालन की जिम्मेवारी।' कवियों, गीतकारों व साहित्यकारों के इतिहास बोध व रचनाओं में मेले के स्वर्णिम इतिहास की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इन रचनाओं के माध्यम से मेले की न सिर्फ ऐतिहासिक महत्ता का परिचय मिलता है बल्कि मेले की तत्कालीन कला-संस्कृति, राजनीतिक व सामाजिक परिवेश एवं व्यवसायिक

120:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

स्थिति की भी जानकारी होती है। इस महाकाव्य से, रहस्योद्घाटन होता है कि 1857 के विद्रोह की संपूर्ण रूपरेखा 1856 ई. के मेले के ख्वाजा हसन अली के तम्बू (खेमे) में तय हुई थी। बाबू वीर कुंवर सिंह की अध्यक्षता में यहां अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रप्रेमी राजे-रजवाड़े की गुप्त बैठक हुई। रणनीति बनी। हाथी, घोड़े, अस्त्र-शस्त्र का आदान-प्रदान तथा खरीद-बिक्री भी इसी मेले में हुई। उस दिन गंगा-गंडक के संगम स्थल पर पूर्णमासी की भीड़ जमी थी। इस भीड़ के बारे में इतिहास के झरोखे से झांकते हुए महाकाव्य प्रणेता कविवर आरसी ने लिखा है कि 'लगता था कि मानव सागर उमड़ आया है। हाथी, घोड़ा, ऊंट, गाय-बैलों का जमघट पूरा था। नाटक-सर्कस, नाच-तमाशा, तंबला-तुक-तम्बूरा था। चूड़ी भी फिरोजावादी, मिर्जापुरी शिलाएं थीं। गुजराती भैंसे थी तुन्दिल, हरिया की गायें थीं। चंचल अश्व सरैया के मैदान के चक्कर लगाते थे। छोटे दुलमुल गज के दर्शन मन बहलाते थे।'

अपने महाकाव्य में कवि ने यह भी लिखा है कि उस मेले में जयपुर के जौहरियों ने भी जौहर दिखाया था। तम्बू-खेमों और शामियानों में गायन के स्वर गूंज रहे थे। बिक्री के लिए बनारस की जरी वाली साड़ी, काश्मीरी शाल-दुशाले, लखनऊ का चिकन का काम एवं ढाका के मलमल भी आये थे। क्रांतिकारी पृष्ठभूमि का जिक्र करते हुए कवि ने कहा है कि मेले में रणनीति तय होने से पूर्व गुलजारबाग पटना में भी प्रमुख क्रांतिकारी ख्वाजा हसन अली के मार्गदर्शन में एक गुप्त सम्मेलन हुआ था जिसमें मेले में एकत्रीकरण का निर्माण हुआ। यहीं पर सशस्त्र क्रांति की योजना बनी और सेना संचालन की जिम्मेवारी बाबू कुंवर सिंह ने ली।



सोनपुर मेले में 'जट-जटिन' की प्रस्तुति

विश्व प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र मेले में से दर्शक भाव-विभोर हो उठे। जनसम्पर्क पंडाल के सांस्कृतिक मंच पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान 'स्वर-संगम' (मुजफ्फरपुर) द्वारा प्रस्तुत लोक नृत्य 'जट-जटिन' को दर्शकों ने खूब सराहा।

'जट-जटिन' लोक नृत्य के मुख्य नर्तक में डॉ. अशोक कुमार 'गौतम' (जट) और कुमार अमोलीना (जटीन) की प्रस्तुति प्रभावशाली एवं सराहनीय रही।

'टिकवा जब-जब मंगली हे जटवा, टिकवा काहे न लवले हे' के बोल पर जब अमोलीना जटीन के रूप में जटवा (डा. गौतम) को उलाहना देती हुई कहती है कि 'टिकवा जब-जब मंगली हे जटीन, टिकवा काहे न पेन्हले हे' तो बरबस ही दर्शक हंस पड़ते हैं और मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं।

बिहार के लोक नृत्यों में 'डोमकच' 'पमरिया' एवं 'देवरिया' के माध्यम से भी इन कलाकारों ने अपने नृत्य अभिनय की छाप छोड़ी। खास तौर से 'भुटलिया' हास्य नाटिका के जवाब नहीं। नाटक में डॉ. गौतम एवं भोलाजी के अभिनय सराहे गये। एक गंवार के रूप में भुट-लिया का अभिनय करते हुए जब डॉ. गौतम इस बेवशी पर रोते हैं कि बारी-बारी से उसके मां-बाप, पत्नी-बच्चे मौत के मुंह में समा गये हैं और उनकी यादें आते ही भुटलिया फूट-फूट कर रोते उनके लिए विवश होता है। इस दृश्य से एक बारगी दर्शक दुःख और सुख का

महामिलन देखते हुए अपनी हंसी को ज्यादा देर नहीं रोके नहीं रख सके और हंसी का फव्वारा छूट पड़ता है।

श्रोताओं एवं दर्शकों ने कलाकार एवं संस्था के संगीत निर्देशक ओमप्रकाश सिंह, चन्द्रेश्वर सिंह, गुलाबजी, उपेन्द्रजी, पं. कुलानन्द झा, चन्द्रकान्त झा, महिला कलाकार के रूप में गायिका रीता नन्दी तथा नर्तकी संघ मित्रा और अमोलीना नन्दी के उत्कृष्ट कलाओं को मुक्त कंठ से सराहा।



पूरबी व छऊ नृत्य ने मचाया मेले में धमाल

उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद की प्रसिद्ध पूर्वी, भजन व गजल गायिका आश्रया द्विवेदी के गाए पूर्वी गीत शैली पर आधारित लोकगीतों व इलाहाबाद अदिवासी छऊ नृत्य पार्टी सोनाहातु रांची द्वारा प्रस्तुत 'छऊ' नृत्य ने हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेले के मुख्य जनसंपर्क पंडाल के अंदर धमाल मचा कर रख दिया है। कलाकारों ने दर्शक-श्रोताओं का न सिर्फ मनोरंजन किया, बल्कि लोक संस्कृति व पौराणिक आख्यानों को नृत्य नाटिका के माध्यम से प्रदर्शित कर ज्ञान की सरिता भी प्रवाहित की है।

एक से बढ़कर एक रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों के बीच उत्तर प्रदेश इलाहाबाद की गायिका आश्रया द्विवेदी ने पूर्वी व गजल गायिकी का ऐसा जादू बिखेरा कि दर्शक-श्रोताओं का दिल तड़प उठा। मन मचल गया। और लगा कि सचमुच सोनपुर हिल गया। सर्वप्रथम मिर्जापुर की प्रसिद्ध मां विध्यवासिनी की आराधना व जयकारा 'या देवी सर्वभूतेषु' व 'अरे ठनली हम इहे मनवा कर दे मईया दर्शनवा, चले के विन्ध्याचल नगरिया...' से हुई। मेला देखने बन-ठन के आयी एक गोरी के साथ मेला में घूमने के दौरान घटित घटनाओं पर बेबाक चित्रण करती हुई एक गीत 'हो गोरी बन ठनके घूमे चलली मेला' पर काफी दर्शकों की ओर से वाहवाही मिली। वहीं पूर्वी शैली में 'आरा हिले छपरा हिले सोनपुर हिलेला कि हमरी लचके जब कमरिया सारा जिला हिलेला सजन राजधानी पकड़ के आ जइयो व सरकायी लियो खटिया जाड़ा लगे' फिल्मी गीतों पर कलाकारों को दर्शकों की ओर से तालियों की

गड़गड़ाहट के साथ जबर्दस्त प्रोत्साहन मिला। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रभारी सह वैशाली के जिला जनसंपर्क अधिकारी डॉ. राकेश कुमार की सतत निगरानी में चले रहे इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान रांची के कलाकारों का छऊ नृत्य भी काफी प्रभावी बना। कलाकारों ने देवी दुर्गा व असुरों के बीच महासंग्राम का ऐसा अद्भुत दृश्य दर्शकों के सामने रखा कि ऐसा प्रतीत हुआ कि सचमुच में देवासुर संग्राम जारी है। इस मंच से सोनपुर के होमियोपैथिक चिकित्सक के पुत्र अकाश कुमार एवं संगीत संगम पटना की कलाकार निशी पांडेय का क्रमशः पुत्र एवं माता का अभिनय व भाव नृत्य काफी रोमांच भर गया। वैशाली के जादूगर आरके तिवारी का जादू का खेल भी लाजवाब रहा।

सोनपुर मेला नखास रोड में कोलगेट की प्रस्तुति 'कठपुतली नृत्य' मेला यात्रियों के लिए आकर्षक का केन्द्र बना हुआ है। राह चलते यात्री ठहर कर नृत्य का आनंद लेते नहीं थकते। वहीं दूसरी ओर हरिहर नाथ काली घाट पर भिक्षुओं का मेला लगा हुआ है। स्नानार्थी इनके करुण चीत्कारों को सुनकर अन्न व रुपये-पैसे फेंककर आगे बढ़ते हैं। यह सोचकर कि दान-पुण्य करने से उनकी मनोकामना पूर्ण होगी।



मेले में बंट रहा रामनाम का प्रसाद

हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला भक्ति की धाराओं सगुण व निर्गुण का संगम बन चुका है। भक्तों का सैलाब संत तीर्थ साधु गाछी से काली घाट और कालीघाट से बाबा हहिहरनाथ मंदिर तक उमड़ आया है। मठ-मंदिरों में भजन-कीर्तन, प्रवचन-पंडालों में उपदेशामृत व बाबा हरिहरनाथ श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान श्री बाला जी वेंकटेश की जयघोष से सम्पूर्ण वातावरण ध्वनित हो रहा है। हाथी बाजार में हाथियों को नमस्कार करते श्रद्धालुओं को देखा जा रहा है श्री गणेश की साक्षात मूर्ति समझकर उनके दर्शन करने वालों का तांता लगा हुआ है। साधु-संतों का हर पंडाल भक्तों से भरा हुआ है। संतों के हर खेमे व छावनी में सतनाम व रामनाम का प्रसाद बंट रहा है और भक्तगत अगाध श्रद्धा से उसका रसास्वादन कर रहे हैं।

श्री गजेन्द्र मोक्ष देवस्थानम् दिव्य देश में देवोत्थान एकादशी से ही श्री लक्ष्मी नारायण यज्ञ चल रहा है। श्रीजगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी लक्ष्मणाचार्य के नेतृत्व में यहां लगातार प्रवचन व भंडारा चल रहा है। गरूड़देव की विशाल प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र है। यह रामानुज सम्प्रदाय (श्री सम्प्रदाय) के वैष्णव भक्तों का प्रमुख धार्मिक केन्द्र बन चुका है। इस देवस्थानम् के राजगोपाल को देखने वालों की भीड़ जुटी हुई है। दक्षिण भारतीय शैली में निर्मित देवस्थानम् के सभी तीनों प्रकोष्ठों के समक्ष पूजा करने वालों की अप्रत्याशित भीड़ देखने को मिलती है। श्रीगजेन्द्र मोक्ष सन्निधि (प्रथम), श्री लक्ष्मी सन्निधि (द्वितीय) तथा

आल्वार सन्धि (तृतीय) में स्थापित क्रमशः बाला जी वेंकटेश (उत्तराभिमुख), पूरब महालक्ष्मी, श्री देव एवं भूदेवी व पश्चिम आल्वार संतों के श्री विग्रहों के आरती-पूजन में सैकड़ों नर-नारियों की उपस्थिति इनकी महत्ता दर्शाती है।



सोनपुर मेला में बिक रहे अट्ठारहों पुराण व वेद

हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला धार्मिक पुस्तकों की बिक्री का केन्द्र बना हुआ है। यहां अट्ठारहों पुराण और चारों वेद बिक रहे हैं। नये साल का पंचांग, कैलेंडर व डायरी की खरीदारी भी खूब हो रही है। पूजा-पाठ सामग्री की दुकानों की तादाद हरिहरनाथ मंदिर क्षेत्र में सर्वाधिक है। फूलों की माला व मोतियों के विविध रंग व आकृति वाली मालाओं की दुकानों पर खरीद-बिक्री का सिलसिला निरंतर जारी है। सर्वाधिक भीड़ दर्शन-पूजन को एकत्रित है। हरिहरनाथ मंदिर में भजन-कीर्तन चल रहा है और बज रही घंटियों की आवाज के बीच रह-रहकर जय-जयकार की गूंज भी वातावरण को झंकृत कर रही है। दे-दे राम दिला दे राम देने वाला सीताराम की भिक्षुओं की कारुणिक आवाज भी कानों को बेध रही है।

काली मंदिर, काली घाट हरिहरनाथ जाने वाली सड़क के दक्षिण कतारबद्ध भिक्षुओं की टोली देवोत्थान एकादशी से ही डेरा डाल रही है। सबके सामने मैली कुचैली चादर बिछी है और सभी भिक्षुक किसी न किसी व्याधि, दुर्घटना, घटना या जन्म से ही अपंग होने के कारण शापित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सबकी नजर काली घाट में नारायणी नदी में स्नान कर बाबा हरिहरनाथ का जलाभिषेक करने आने वाले श्रद्धालुओं पर टिकी है। दान मिलने की आस है। यही कारण है कि उनके मुख से दे-दे राम, दिला दे राम की कारुणिक पुकार श्रद्धालुओं के हृदय को बेध रही है और वे कुछ न कुछ राशि पाकेट से निकालकर चादर पर फेंक दे रहे हैं। मेला के एक पात्र भिक्षुक भी

128:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

है जिनकी गणना कार्तिक पूर्णिमा के दिन करने की परिपाटी विकसित करने की जरूरत है। बाबा हरिहरनाथ मंदिर के मुख्य द्वार का नया लुक सबको भा रहा है। बाहर हनुमान मंदिर भी आकर्षक है। निकट में राधा कृष्ण मंदिर का सौन्दर्य भी निखर रहा है। इन तीनों ही मंदिरों में नयापन का अंश दिख रहा है। मंदिर की दोनों तरफ पूजा-पाठ की सामग्री व प्रसाद की बिक्री की जा रही है। फूल-मालाओं की दुकान है। नामी चीनी का पेड़ा है पर अब खोआ का पेड़ा भारी पड़ रहा है। बाहर हरिहरनाथ मंदिर पटना की तरह शुद्ध व गारंटी वाला प्रसाद बिक्री केन्द्र है। हरिहरनाथ मंदिर पुलिस नाका से दक्षिण सड़क किनारे नामी सूथनी नगण्य है परंतु गुड़ की जलेबी की दुकानों पर खरीददारों की भीड़ कहीं ज्यादा टूट रही है।

मंदिर से उत्तर हरिहरनाथ चौक द्वार की ओर बढ़ते हैं तो दोनों ओर दृश्य मठ-मंदिर के नाम से ही समर्पित है। सड़क के पूरब करीब आधा दर्जन छोटे-बड़े शुद्ध शकाहारी होटल, चाय-बिस्कुट की दुकान है। जलेबी, पूरी, समोसा व मिठाई वहां बिक रही है। पश्चिम साईड में करीब डेढ़ दर्जन स्टालनुमा छोटी-छोटी प्रसाद व पूजा सामग्री की दुकानें कतारबद्ध सजी हैं। कुछ पूरब भी हैं। इन दुकानों में मुकुन्ददाना, बतासा, चूड़ा, नारियल, धूप, डारा, बद्धी, चुनरी आदि की बिक्री हो रही है। पीपल के ठाकुर जी, सिंहासन घंटी, शंख व माला की कई दुकानें हैं। फुटपाथ पर भी सिन्दूर, टीका-मंगटीका, मोतियों की माला, नेकलेस, चंदन व अन्य पूजा-पाठ की सामग्री बिक रही है। चूड़ी-लहठी भी बिक रही है।



सिन्दूर की दमक से चमक रहा मेला

हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला के सिन्दूर बाजार की रौनक ही अजब-गजब की है। सिन्दूर चौक व इस चौक से सिन्दूर का यह चमचम व गुलजार बाजार। ड्रोलियो नामधारीं तीन दुकान। सभी लखीसराय की कंपनी। इनमें ड्रोलिया भरमिलियन इन्डस्ट्रीज, ड्रोलिया रंग एंड सिन्दूर फैक्ट्री एवं ड्रोलिया सिन्दूर कंपनी शामिल है। सौभाग्यवती महिलाओं की पहली पसंद। पसंद भी क्यों न हो, यह सिर्फ उनके लिए शृंगार नहीं बल्कि मांगलिक चिह्न भी है। यही कारण है कि यहां दुकानों पर रंग-बिरंगे परिधानों में सजी-संवरी महिलाओं का मेला सा लग गया है। सबकी आस है खास सिन्दूर खरीदना।

क्या गांव, क्या नगर हर ओर की स्त्रियों का यहां जमघट है। माथे पर सिन्दूर की लाली शोभा बढ़ा रही है। इस मांगलिक प्रसाधन के सही ढंग से प्रयोग करने से देवियां प्रसन्न होती हैं और यहां ठीक ऐसा ही प्रतीत हो रहा है। सिन्दुर की खरीददार महिलाएं सिन्दूर खरीदने के लिए अपनी पारी का इंतजार कर रही हैं। कहीं ज्यादा भीड़ है तो कहीं कम। चंचल चितवन वाली नई नवेली दुल्हनों की बात ही मत पूछिये, उनमें सिन्दूर खरीदने के प्रति ज्यादा उमंग है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उनका बस चले तो सब खरीद लें।

सिन्दूर का यह बाजार हरिहरनाथ मंदिर चौक से मीना बाजार थाना होते हुए पश्चिम कोण पर आखिरी में अवस्थित है। यहां से सीधा पश्चिम गंवई रोड छत्रपति रोड है। मुख्यतः यह चौराहा है। चारों तरफ से महिलाओं का समूह यहां उमड़ता है। सुबह से लेकर शाम तक ज्यादा

महिलाएं खरीददारी हेतु दिखती हैं। इस सिन्दूर बाजार में सोनू द्विवेदी, सतीश बाबा की दुकान भी है।

इनका दावा है कि मेला की सबसे पुरानी विश्वसनीय दुकान उन्हीं की है। इस दुकान ने अपनी उत्तम गुणवत्ता वाली सिन्दूर के कारण बिहारी महिलाओं का दिल जीत रखा है। झोलिया रंग एंड सिन्दूर फैक्ट्री लखीसराय नाम वाली इस दुकान में दुल्हन सिन्दूर की भी बिक्री हो रही है। इस दुकान में शंख आकृति, दिल आकृति, शंकर भगवान की आकृति, मंदिर आकृति, मटकी आकृति, लक्ष्मी-गणेश आकृति वाले सिन्दूर खरीदते महिलाओं को देखा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त गिला सिन्दूर, लिक्विड सिन्दूर, मार्बल, रोशनी, रंगोली व बेल पत्र की भी बिक्री हो रही है। महिलाओं की जमात सिन्दूर खरीदने हेतु इस कदर चहलकदमी कर रही है कि उनके पैरों में पायल से जुड़े नूपुर की आवाज मेला यात्रियों का ध्यान बरबस अपनी ओर खींचे बिना नहीं रहती।



पुरातात्विक दृष्टि से समृद्ध हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला

पुरातात्विक दृष्टि से समृद्ध हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला में मेला उद्घाटन के 32 दिनों के भीतर करीब 45 लाख देसी पर्यटकों व तीर्थ यात्रियों ने परिभ्रमण किया। इसमें विदेशी पर्यटक भी शामिल हैं। इस दौरान आस्थावानों के सर देवी देवताओं के चरणों में झुके और वे मौन आशीर्वाद रुपी प्रसाद लेकर घर लौटे। बाबा हरिहरनाथ ने तो सभी सम्प्रदायों के हिंदुओं को यहां एक करके रख दिया है। यहां शैव-वैष्णवों में कोई विभेद नहीं है। दक्षिणेश्वरी काली भी यहां महाकालेश्वर शिवलिंग के साथ काली मंदिर में विराजमान होकर यही संदेश प्रसारित कर रही है कि वैष्णव, शैव व शाक्त वस्तुतः एक ही परमात्मा के पावन अंश हैं। एक दूसरे से विपरीत मत वाले देवी-देवताओं की एक साथ मनोहारी छवि देखकर भेदभाव करने वाले भक्त गण भी स्वयं लजा जाते हैं और यह संकल्प लेकर यहां से लौट रहे हैं कि पंथ व सम्प्रदायों के नाम पर हिन्दुओं को आपस में नहीं बांटेंगे। सच कहिए तो धर्म-अध्यात्म के मामले में हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेले की भूमि अध्यात्मवादियों के लिए आरंभ से ही ईश्वर भक्ति व आत्मिक परितृप्ति का स्थल रहा है। ऋषियों एवं मुनियों की तो यह साधना स्थली ही रही है। हरिहरनाथ मंदिर के पीछे मही नदी किनारे हरिहरनाथ-पहलेजा मुख्य सड़क के उत्तरी किनारे योगी बालक नाथ समेत अनगिनत साधु-संतों का समाधि स्थल इसी बात की ओर इशारा करते हैं। विदेशी सैलानी भी यहां के धार्मिक मान-बिन्दुओं व पुरातात्विक धरोहरों को अपने कैमरे में कैद किए। सचमुच प्रत्येक मामले में यह मेला अन्य मेलों की तुलना में

132:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

अजूबा है। पुरातात्विक दृष्टि से देखें तो इतिहास के विद्याधियों के लिए यह मेला क्षेत्र एक अध्ययन स्थल ही हैं। इतिहासकारों ने भी माना है कि यहां शुंगकालीन रेलिंग स्टोन (वेदि का स्तंभ) का खंडित भाग आज भी काली मंदिर के पीछे खाकी चौक ठाकुरबाड़ी में अवस्थित है और यह 2-1वीं सदी ई. पूर्व का है। यह रेलिंग स्टोन यह साबित करता है कि शुंगकाल में यह इलाका वैष्णवों का सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थल रहा है। यहीं च्यवन कुंड से प्राप्त एक वर्गफीट की सैंड स्टोन की बनी गज-ग्राह की नन्ही प्रतिमा हरिहरनाथ मंदिर में संरक्षित है और यह प्रतिमा आज भी शोध का विषय है। आपरूपी गौरीमंदिर च्यवनकुण्ड के दक्षिणी किनारे पर अवस्थित है। इस मंदिर प्रांगण में एक बड़ा और दो अति लघु मंदिर है। यहीं पर पक्षीराज गरुड़ पर असीन भगवान विष्णु की प्राचीन प्रतिमा है जो पुराविदों के मतानुसार गुप्तकालीन काले बसाल्ट पत्थर से निर्मित है। इसके बाम भाग में शिवलिंग धारण किए 6-7वीं सदी की चतुर्भुजी काली की प्रतिमा है और दायें भाग में विघ्नहर्ता श्रीगणेश की मूर्ति है। चतुर्भुजी काली जी की भ्रमवश विष्णु जी के साथ देखकर श्रीलक्ष्मी जी मानने की परम्परा चल पड़ी थी जिसे पुरातत्वविदों ने अपने सर्वेक्षण में उक्त मान्यता को खंडित किया था। पुरातत्व निदेशालय, बिहार ने इन धरोहरों को वर्ष 2000 के सोनपुर मेले की अपनी प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया था। इस मंदिर प्रांगण के मुख्य मंदिर में गौरीशंकर की काम विजय मुद्रा की मूर्ति है। स्थानीय भक्तजन इन्हें आपरूपी गौरी के नाम से पुकारते हैं। पुरातत्वविद् डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा अपने सोनपुर सर्वेक्षण के क्रम में जिसमें स्वयं मैं भी शामिल था ने बताया था कि सोनपुर की अधिकांश मूर्तियां पालकालीन 9-10वीं शताब्दी की है। निकट ही बैजलपुर में नारायणी नदी किनारे जड़भरत आश्रम में भगवान श्री विष्णु के शीर्ष भाग की प्राप्ति से कई खुलासा हुआ है और कई पुरानी मान्यताएं खंडित हुईं। विष्णु जी के मुखमंडल को भ्रमवश पहले लोग राजा रहूँगण की मूर्ति मानते थे। जिस मंदिर और उसमें स्थापित मूर्तियों के नाम पर यह विश्व प्रसिद्ध मेला लगता है—उनके पुरातात्विक महत्व को भी जानना जरूरी है। बाबा हरिहरनाथ मंदिर के गर्भगृह में अवस्थित भगवान श्रीहरि (विष्णु) की खड़ी प्रतिमा गुप्तकालीन है।

जबकि सामने स्थित हर (शिवलिंग) मोटे ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित है। काली मंदिर में एक प्रस्तर खंड है जिसे पुराविदों ने मकर तथा मछली का खंडित भाग बताया है। जिस पर कभी नदी देवी माता गंगा की मूर्ति स्थापित थी। जो कालांतर में टूट-फूट गयी। यह भी पालकालीन है। कालीघाट की सार्थकता को साबित करनेवाली दक्षिणेश्वरी काली मंदिर में काली की मूर्ति व शिव लिंग 7वीं सदी की है जबकि मंदिर बंगला आर्ट का नमूना है। इसका रंग-रोगन नए ढंग से किया गया है। राधा-कृष्ण मंदिर से प्राप्त प्राचीन क्षतिग्रस्त डोर फ्रेम 8वीं -9वीं शताब्दी की है जिस पर शिव, कमल पुष्प, एवं सूर्य आदि का चित्र अंकित है। नजदीक ही मही नदी किनारे सबलपुर में नवनिर्मित साई राम मंदिर भी मेलाधिकियों के लिए श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। तो सबलपुर बभनटोली स्थित शांति धाम संगमेश्वर शिव मंदिर व नाथ सम्प्रदाय के तीर्थ स्थल भी आकर्षण के केन्द्र हैं। हरिहरनाथ मंदिर के निकट अवस्थित लोकसेवा आश्रम तो सत्संग, सेवा व भारतीय कला-संस्कृति और शास्त्रीय नृत्य-गायन की भारत प्रसिद्ध साधनास्थली ही है। उदासीन सम्प्रदाय का यह आश्रम विष्णु दास उदासीन उर्फ मौनी बाबा के सफल संचालन में नित्य मेलाधिकियों-तीर्थयात्रियों की सेवा में लगा हुआ है। सालों भर यहां रात्रि में ठहरने वाले तीर्थयात्री कभी भूखे नहीं सोते। इसी तरह श्रीगजेन्द्रमोक्ष देवस्थानम दिव्य देश (नौलखा मंदिर) दक्षिण भारतीय स्थापत्य कला का भव्य मंदिर है। इसमें श्रीदेवी, लक्ष्मी देवी व भूदेवी के साथ भगवान श्रीगजेन्द्र मोक्ष स्वयं विराजमान हैं। गरुड़ जी की अंजलिबद्ध विशाल प्रतिमा एवं विशाल राजगोपुरम देशी-विदेशी पर्यटकों व तीर्थयात्रियों का इस बार भी आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। बाबा हरिहरनाथ मंदिर के निकट रामायण और रामलीला का मंचन ने तो ग्रामीण व शहरी दोनों तरह के मेलाधिकियों को अपनी ओर आकर्षित किया है।



पैरों में घुंघरू बंधते ही फिल्मी गीतों पर थिरक उठती है 'बिजली रानी'

हरिहर क्षेत्र मेला का अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पशु बाजार हाथियों का चिध्वाड़, गोड़ों की हनहनाहट, गाय-बैलों के रंभाने तथा रंग-बिरंगी चिड़ियों की चहचहाट के बीच शबाब पर है। घोड़ा बाजार में पूर्वी चम्पारण के तुरकोलिया थाना के बलसवां ग्रामवासी अरूण कुमार सिंह की बिजली रानी नाम की घोड़ी नृत्य-संगीत की दीवानी है तथा पैरों में घुंघरू बांध दिये जाने पर टेपरिकार्डर के फिल्मी गीतों पर वह थिरक उठती है। उसकी दौड़ की रफ्तार भी 85 किलोमीटर प्रति घंटा है। तीन वर्ष पूर्व इसी मेले से इसे 21 हजार रुपये में खरीदा गया था।

बादामी रंग-रूपवाली इस घोड़ी की फिलहाल बिक्री के लिए 35 हजार रुपये की मांग की जा रही है। मेले में बिजली रानी आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

हाथी बाजार में इस वर्ष आये 87 हाथियों में चित्र-विचित्र हाथियों ने भी अपना लोहा जमा रखा है। मेले में कम ऊंचाई वाले हाथी कुशीनगर (यूपी.) के बन्नी प्रसाद का है। यह 5 फीट 6 इंच का है जबकि सबसे छोटे हाथी की उम्र 6 वर्ष है, जो तरैया के सुरेन्द्र सिंह का है।

दोनों आंखों से अंधी मादा हाथी भी मेले का आकर्षण बनी हुई है। 6 फीट 6 इंच ऊंची तथा 40 वर्ष उम्रवाली इस हथिनी का स्वामी आई.टी.आई. रोड, जमुनाब्रिज दिल्ली-2 का मो. जहीर है। एक दांतवाला 16 वर्षीय हाथी भी लोगों को बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेने में समर्थ है। वह 8 फीट 6 इंच का है तथा उसका स्वामी मशरख थाना

के कुदरिया ग्रामवासी राजनारायण सिंह हैं। अम्बेदकर नगर, यू.पी. के रामलखन वर्मा भी पांच हाथी लेकर मेले में जमे हुए हैं। इनमें एक नर तथा चार मादा हैं। जलालपुर के सभापति राय की खूबसूरत मादा हथिनी के मस्तक पर सफेद दाग बरबस लोगों को अपनी ओर खींच रहा है। बिना दांत (मकुना) वाले चार हाथी भी मेले की शोभा बढ़ा रहे हैं।

मेला में छपरा के अर्जुन राय का घोड़ा दौड़ में भाग लेकर अपनी जीत दर्ज करा चुका है। ललन राय तथा भागीरथ राय (वैशाली) के घोड़े भी मेले के आकर्षण के कन्द्र बने हुए हैं। सरपट दौड़ना इसकी विशेषता है। इस वर्ष मेले में 2116 घोड़े आये, जिसकी संख्या 1996 में 1481 घोड़ों की तुलना में अधिक है। हाथियों की संख्या में इस वर्ष कमी आयी है। पिछले वर्ष इनकी संख्या 111 थी। इस वर्ष ऊंटों के आगमन में कमी आयी है। पिछले वर्ष इनकी संख्या 5 थी। इस वर्ष महज एक है। यह एकमात्र मादा ऊंट जलालपुर, छपरा के जगरनाथ प्रसाद राय की है। इसकी ऊंचाई 8 फीट तथा उम्र 7 वर्ष है। पिछले कई वर्षों से इस मेले में ऊंटों की खरीद-बिक्री नहीं हो पा रही है।

मेले की संस्कृति से जुड़े गाय बाजार में इस बकरियां भी मौजूद हैं। अलवर के रामेश्वर कक्कर, लक्ष्मण एवं दिल्लीचंद की बकरियां तीन से पांच लीटर दूध देती हैं।

इसके अतिरिक्त मेले में प्रशिक्षण टीम कुत्ता, पंडित मैना, लोटन कबूतर और हिरामन तोता को भी अपने ग्राहकों की तलाश है।



विदेशी मुल्कों के 64 सैलानियों ने लुत्फ उठाया सोनपुर मेले का

हरिहर क्षेत्र मेले में इस वर्ष 69 हाथी आये लेकिन 9 हाथियों की बिक्री हुई। वर्ष 97 की तुलना में इस बार हाथियों की आमद तथा बिक्री में कमी अंकित की गयी। साथ ही घोड़ा, बैल, भैंस, बकरी, भेड़, कुत्ता सहित तमाम पशु-पक्षियों का आमद में काफी गिरावट दर्ज की गयी है। वर्ष 97 से 64 हजार 508 कुल पशु-पक्षियों की तुलना में इस वर्ष 15 नवंबर तक महज 21 हजार 929 पशु-पक्षियों ने हरिहरक्षेत्र मेला को गुलजार रखने में अपनी भागीदारी दर्ज करायी। पिछले वर्ष जहां इसी अवधि में 38400 पशुओं की बिक्री दर्ज की गयी थी वहीं इस वर्ष महज 8406 पशुओं की ही बिक्री हो सकी है। इस वर्ष ब्रिटेन, फ्रांस सहित विभिन्न देशों के 64 विदेशी पर्यटकों ने भी मेले का परिभ्रमण किया।

जिला पदाधिकारी राजेश भूषण ने उपरोक्त जानकारी दी। उन्होंने इस वर्ष पशुओं के कम आने तथा कम बिक्री होने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कृषि में तकनीकी साधनों की उपयोगिता बढ़ने के कारण भी पशुओं की विशेषकर बैलों की आमद कम हो गयी है। जमीन का रेट बढ़ना भी एक कारण है।

उन्होंने बताया कि हरिहरक्षेत्र मेले के विकास के प्रयास सिर्फ प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि स्थानीय जनता की भी इसमें सक्रिय भागीदारी तथा जिम्मेदारी बनती है। उन्होंने कहा कि सिर्फ नखास, मीनाजाबार तथा लकड़ी बाजार में 28.98 लाख रुपये तथा पशु बाजार में महज 9 लाख 38 हजार रुपये किराया के रूप में स्थानीय

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 137

लोगों, ठेकेदारों को प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि किसी भी मेला को विकसित करने हेतु आम आदमी की भागीदारी जरूरी है। उन्होंने कहा कि सरकार से महज आठ लाख रुपये ही प्रशासन को मेला चलाने के लिए मिलते हैं। किराये के करीब 40 लाख रुपये से प्रशासन को कुछ भी प्राप्त नहीं होता। उन्होंने मेला क्षेत्र के ग्रामीणों का आह्वान किया कि कम से कम दिल्ली के चांदनी चौक इलाके के नागरिकों की तरह अपने घरों, दरवाजों तथा निकटवर्ती सड़कों की सफाई, रंगाई तथा मरम्मत इस तरह करें जिससे पर्यटकों तथा मेले के उक्त आकर्षण में वृद्धि हो सके।

पशुपालन विभाग के आंकड़े बताते हैं कि बीते वर्ष 97 में 26 करोड़ 84 लाख 81 हजार 247 रुपये के कुल पशु-पक्षियों की बिक्री की तुलना में इस वर्ष इसी अवधि में महज 8 करोड़ 89 लाख, 46 हजार 790 रुपये की ही पशु पक्षियों की बिक्री हो सकी है। इस वर्ष हाथी का अधिकतम मूल्य 8 लाख 55 हजार पर ही सिमटा रहा जबकि वर्ष 97 में इसकी अधिकतम बिक्री मूल्य 7 लाख रुपया दर्ज किया गया था। मेले में आये हाथियों में से सबसे ऊंचे हाथी की ऊंचाई दस फीट तीन इंच थी। यह हाथी उत्तर प्रदेश के अमीरपुर तहसील कसबा मुस्कुराके रसिक लाल का राजू नामक हाथी था।

मेले में दस फीट से अधिक ऊंचाई के कुल तीन हाथी आये थे। मेला में आये हाथियों में सबसे छोटी मादा हाथी साढ़े सत्तरह माह की जयमाला थी जो कृष्ण बिहारी वर्मा, कुशीनगर, थाना हाटा, उत्तर प्रदेश द्वारा लायी गयी थी। इस हाथी की माता जयमंती तथा मौसी चम्पा भी दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र बनी रही। सारण के जिला पदाधिकारी राजेश भूषण ने बताया कि इस दौरान 62 घोड़े, 450 गायें, 3819 बैल, 1101 भैंस, 97 बकरी और भेड़, 168 कुत्ता, 701 कुक्कुट और 2004 अन्य पशु-पक्षियों की बिक्री हुई।

मेले में प्रतिदिन औसत 75 हजार लोग परिभ्रमण कर रहे हैं जबकि प्रत्येक रविवार को यह संख्या बढ़कर डेढ़ लाख को पार कर जा रही है। पहली बार मेला प्रशासन द्वारा मेला पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसका लोकार्पण मेला समापन के दिन होगा।

—वर्ष 1998



निराली है मेले की आध्यात्मिक दुनिया

गंगा-गंडक संगम तीर्थ में लगने वाले हरिहरक्षेत्र मेला की आध्यात्मिक दुनिया निराली है। देवोत्थान एकादशी श्री गजेन्द्र मोक्ष देवस्थानम दिव्यदेश में आयोजित श्री महालक्ष्मी नारायण पंचकुंडात्मक यज्ञ के हवन व मंत्रों से निकले आदि मूल श्री मन्नारायण व बाबा हरिहरनाथ की जय-जयकार की गूंज से आरंभ इस मेले को बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना के वैदिक धर्म प्रचार से 22 नवम्बर को आखिरी विराम मिला। इस बीच नारायणी नदी के पूर्वी व पश्चिमी किनारों पर अवस्थित हाजीपुर एवं सोनपुर के घाटों व पहलेजा घाट में करीब 20 लाख श्रद्धालुओं ने देवोत्थान व कार्तिक पूर्णिमा स्नान किया। संगम स्थल सबलपुर में डूबकी लगायी। देश के कोने-कोने से पहुंचे विराट हिन्दू धर्म के विभिन्न संप्रदायों, पंथों के साधु-संत व महंतों की उपस्थिति के कारण यह क्षेत्र संत तीर्थ में तब्दील रहा वहीं निर्गुण राम व सगुण राम के उपासक वैष्णवों का भी महासंगम बना।

जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी लक्ष्मणाचार्य के नेतृत्व में दिव्य देश साधुगाछी प्रांगण में यज्ञ का समापन पूर्णिमा को हुआ। नारायणी नदी के पश्चिमी किनारे, हाजीपुर क्लब घाट पर गंडक घाटी शोध सभ्यता उन्नयन परियोजना के तत्वावधान में देवोत्थान एकादशी को नारायणी महोत्सव मनाया गया। वहीं लक्ष्मणाचार्य के मार्गदर्शन में हरिहर क्षेत्र मेला कलश यात्रा जुलूस में हजारों महिलाओं एवं पुरुषों ने हिस्सा लिया। मेला में श्री राम प्रिय साहेब की छावनी में सिन्धु मुनि साहेब के नेतृत्व में 20 नवम्बर को एक भव्य एवं आकर्षक जुलूस निकाला गया। वहीं 18 नवम्बर को मेला में ही कबीर पंथियों के संत सम्मेलन का उद्घाटन अखिल भारतीय कबीर विचार मंच के राष्ट्रीय महामंत्री साहेब रमेश दास

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 139

गोस्वामी ने किया। वहीं, मानव मोक्ष संस्थान, भगवानधाम सद्गुरु कबीर आश्रम में सरगुना दानापुर के पहले संत शरण गोस्वामी साहेब की अध्यक्षता में तीन दिवसीय संत सम्मेलन में भजन, प्रवचन, कीर्तन के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना जागृति का सिंहनाद किया गया।

छौराही संत कुटी, वैशाली, सहदेव दास साहेब की छावनी प्रवचन पंडाल में कमली कुमारी, समस्तीपुर की गीता-गवनई ने कबीर की वाणी को जीवंत करके रख दिया। वैष्णव समाज संघ, कबीर पंथी वचन वंशीय, कन्हौली परसौनिया स्थान में भी वैशाली एवं उसके आसपास के जिले के कबीर पंथी समाज की भीड़ जुटी रही। 'सद्गुरु है सतलोक में' भजन भी काफी प्रभाव छोड़ा। खगड़िया के महंत बनारसी दास, अरनिया, वैशाली के लक्ष्मी दास, वेदान्ती सेवा आश्रम, अकबरपुर पटना, महंत मोहन दास, जलालपुर नौरंगा, प्रबंधक उपेन्द्र प्रपन्नाचार्य का खेमा वैष्णव धर्मप्रचार का साक्षी रहा। श्री वैकुण्ठाचार्य सेवा आश्रम अयोध्या व स्वामी वासुदेवाचार्य सेवाश्रम, बालाजी मंदिर, लक्ष्मणघाट, अयोध्या के प्रवचन पंडालों में भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित होती रही। समस्तीपुर के रामजी दास साहेब, चपड़ा साहबाजपुर, डुमरी के प्रवचन पंडाल में 'जिसके दिल में दया का भाव नहीं राम का नाम लेने से क्या फायदा' भजन भी लोकप्रिय रहा।

—'दैनिक जागरण, पटना,

14 नवम्बर, 2002



आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व है सोनपुर मेले का

बिहार के सुख्यात अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ग्रामीण परिवेश के इस हरिहरक्षेत्र मेले का न सिर्फ आध्यात्मिक महत्व है बल्कि सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी इसका महत्व बेमिसाल है। यही कारण है कि देश के सुदूर प्रांतों से गंगा गंडक संगम तीर्थ में लगने वाले इस मेले में एक ओर जहां भक्ति का समुंदर उमड़ आया है तो दूसरी तरफ अर्थ की कामना लिए विविध क्षेत्र के कारोबारियों का महा मिलन भी अपना पूर्णस्वरूप धारण कर चुका है।

देश में वैसे तो मेले अनेक हैं परन्तु गंगा-गंडक नदियों के इस समागम क्षेत्र में अवस्थित इस मेले की अपनी अलग खूबियां व विशेषतायें हैं। इन्हीं खूबियों व खासियतों के कारण न सिर्फ बड़े पैमाने पर विविध क्षेत्र के कारोबारियों ने यहां पहुंचकर अपना डेरा डाल दिया है बल्कि अपने व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को सजाकर व संवारकर अर्थोपार्जन में जुट गये हैं। पशु व्यवसायी हों या लकड़ी फर्नीचर कारोबारी, कश्मीर के ऊनी कपड़ों के सौदागर हों या विविध राज्यों से खादी वस्त्र विक्रेताओं की मंडली, सभी अर्थ व्यवसाय में तब्दील हैं। पशुओं की दुलाई हेतु बुकिंग कर रेलवे सर्वाधिक शुद्ध मुनाफा कमाता है। टिकट आय, पार्सल आय आदि से इस दौरान करोड़ों की आय इस मेले के आर्थिक पक्ष की मजबूती को दर्शाने हेतु काफी है। मेले के इस अर्थ पक्ष का विशद विवेचन करने से पूर्व मेले के आध्यात्मिक पक्ष की ओर ध्यान देना जरूरी है। मेले में देश के सुदूर प्रांतों से लक्ष-लक्ष नर-नारियों का यहां जमावड़ा कार्तिक पूर्णिमा को हुआ। हरिहरनाथ मंदिर

जहां हरि और हर एक ही स्थान पर साथ-साथ स्थित हैं। शैव एवं वैष्णव संप्रदायों का मिलन केन्द्र एक संपूर्ण हिन्दू तीर्थ। आनन्द रामायण जहां यह स्थापित करता है कि तीर्थ यात्रा के क्रम में अपनी भार्या सीता के साथ श्री राम पुष्पक विमान से हरिहर क्षेत्र में आकर गंगा-गंडक संगम स्थल पर डुबकी लगायी थी। वहीं इस क्षेत्र की प्रसिद्धि का साक्षात कारण यह है कि हर की जटा से स्वासिनी होने के कारण गंगा हर की एवं विष्णु गंड प्रदेश से गिरे श्रम बिंदुओं से उत्पत्ति होने के कारण गंडक को हरि का प्रतीक माने जाने के कारण हरिहरक्षेत्र तीर्थ प्रसिद्ध हुआ और इसका आर्थिक पक्ष यह कि न सिर्फ राज्य सरकार, निजी वाहन संचालक बल्कि छोटी-छोटी गाड़ियां चलाकर जीवाकोर्पान करने वाले कामगारों को भी रोजी-रोटी का सहारा यह मेला बन गया है। इस मेले का आर्थिक सर्वेक्षण पहली बार सारण जिला प्रशासन ने 1998 में कराया। मेला प्रारंभ से 13 दिनों की अवधि तक कराये गये इस सर्वेक्षण ने कई छुपे तथ्यों को उजागर किया। मेला के तीन मुख्य बाजारों यथा नखास, मीना बाजार और लकड़ी बाजार में इस वर्ष 283 दुकानें लगी थीं, जिनमें बिहार राज्य के बाहर से आयी 65 दुकानें भी शामिल हैं। इन तीन बाजारों की दुकानों में उपलब्ध सामग्रियों का सर्वेक्षित मूल्य 378.81 लाख आंका गया जिसमें औसतन प्रतिदिन 9.62 लाख की बिक्री हो रही थी। इसी तरह मेला के सरकारी एवं रैयती भूमि का सर्वेक्षण किया गया था। विभिन्न रैयतों द्वारा लिया जाने वाला किराया प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। प्रशासन ने 1998 के मेले में नाप की प्रचलित मात्रा के आधार पर 3000 रुपये प्रति हाथ किराया की दर से मेला क्षेत्र की बंदोबस्ती इन रैयतों द्वारा किया जाना स्वीकार किया जबकि सरकारी भूमि में लगायी गयी सरकारी प्रदर्शनी से 4 रुपये वर्ग फीट की दर से किराया वसूला गया।



यज्ञ से ही मानव जीवन का प्रारंभ : लक्ष्मणाचार्य

हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेले के श्रीगजेन्द्र मोक्ष देवस्थानम में चल रहे श्री लक्ष्मी नारायण यज्ञ के तीसरे दिन हजारों श्रद्धालुओं ने यज्ञ स्थल की परिक्रमा की। इस मौके पर समस्त श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए श्रीगजेन्द्र मोक्ष देवस्थानम दिव्य देश पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी लक्ष्मणाचार्य ने कहा कि मानव जीवन का सबसे श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है। यज्ञ से ही मानव जीवन का प्रारंभ और यज्ञ से ही अंत होता है। मानव जीवन का प्रथम यज्ञ गर्भाधान यज्ञ है और अंतिम यज्ञ अंत्येष्टि यज्ञ।

यहां नारायणी नदी के पश्चिमी किनारे साधु गाछी में अवस्थित ख्याति प्राप्त इस मंदिर में श्रद्धालुओं का जमावड़ा हो चुका है। सभी भक्ति रस में लीन हैं। श्रीदेवी, भूदेवी, लक्ष्मी देवी के साथ-साथ भगवान श्रीगजेन्द्र मोक्ष की जय-जयकार से संपूर्ण वातावरण गूंज रहा है। प्रवचन, कीर्तन भी जारी है। सबका स्थान अलग-अलग है और हर जगह भक्तों की भीड़ है। जगद्गुरु लक्ष्मणाचार्य ने यज्ञ की महत्ता पर आगे कहा कि प्रथम यज्ञ गर्भाधान है। यहां भी गर्भ रूपी कुंड में शुक्राहृतियों से जीव जन्म लेता है और अंतिम आहुति चिता की अग्नि में होती है। स्वामी लक्ष्मणाचार्य ने कहा कि मानव अपने जीवन को यदि यज्ञमय बना ले तो जीवन में कोई पाप-ताप नहीं होगा। आपसी वैमनस्यता नहीं होगी। विश्व बंधुत्व की भावना जागृत होगी। उन्होंने कहा कि यज्ञ संगतिकरण को प्रदान करने वाला है। राग-द्वेष व विद्वेष सबको मिटाने वाला है।



हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 143

वर्षो पुरानी धर्मशाला जर्जर ऋषि च्यवन कुंड भी उपेक्षित

जी हां, यह है हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेले में देश के कोने-कोने से आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए आज से 100 वर्ष पूर्व बनायी गयी बिहार प्रांतीय सेवा सदन धर्मशाला। प्रशासनिक उपेक्षा के कारण इसका जीर्णोद्धार आज तक नहीं हो सका। च्यवनकुंड के पश्चिमी किनारे इस सेवा सदन धर्मशाला का निर्माण पटना जिले के महाराजगंज निवासी समाजसेवी बुद्धन साह ने कराया था और उसे धर्मार्थ समर्पित किया था। महाराजगंज पटना के स्वर्गीय साह द्वारा 1881 ई. में निर्मित इस धर्मशाला के हालात अब इतने खराब हो चुके हैं कि इसमें कोई नहीं ठहरना चाहता। दो वर्ष पूर्व तक इसमें सरकारी विद्यालय संचालित होते थे। दो मंजिले इस भवन की छत व सभी कमरे ध्वस्त व क्षतिग्रस्त हो चुके हैं।

आरंभ से ही तीर्थयात्रियों व पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहे च्यवनकुंड भी जीर्णोद्धार व सौन्दर्यीकरण के अभाव में उपेक्षित होकर रह गया है। मेला के 9 दिनों के भीतर लाखों तीर्थयात्रियों ने इस कुंड एवं सेवा सदन धर्मशाला को नजदीक से देखा और उसके इतिहास और पौराणिकता के संबंध में जानकारी हासिल की। इन दोनों ही स्थलों की सरकारी उपेक्षा पर चिंता जाहिर की है। इन दोनों ही स्थलों की सरकारी उपेक्षा पर चिंता जाहिर करते हुए अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की और इसके जीर्णोद्धार व सौन्दर्यीकरण के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से अपील भी की थी। सारण जिला भाजपा किसान मोर्चा के पूर्व अध्यक्ष कुमार बलराम सिंह एवं सोनपुर मंडल भाजपा के पूर्व

अध्यक्ष धनंजय सिंह का कहना है कि इस तालाब का सौन्दर्यीकरण कर विदेशी पर्यटकों को भी आकर्षित किया जा सकता है। तालाब की चारों तरफ सड़क एवं बैठने के लिए पत्थर के चबूतरे के निर्माण की भी जरूरत है।

तालाब के मध्य आयुर्वेदाचार्य महर्षि च्यवन एवं अश्विनी कुमार की प्रतिमा स्थापित करने की वर्षों की मांग आज भी अधूरी है और इस पर मेला प्रशासन द्वारा कोई कारगर कदम नहीं उठाया जा सका है। नारायणी नदी के किनारे गौरी शंकर मंदिर व सेवा समिति भवन के मध्य अवस्थित इस च्यवनकुंड के बारे में ऐसी स्थानीय मान्यता है कि ऋषि च्यवन ने इसे असाध्य रोगों के निदान के लिए निर्मित किया था। इसमें स्नान करने वाला कुष्ठ रोगी निर्मल होकर लौटता था।'

—'दैनिक जागरण', पटना,

17 नवम्बर, 2006



पशु-पक्षियों का अद्वितीय मेला

सोनपुर मेला विश्व में पशुओं के व्यापार के लिए अद्वितीय है। चिड़ियां, भेड़ बकरियों की कौन कहें यहां हाथी, ऊंट, घोड़ा, खच्चर, बैल तथा गायें भी बड़ी संख्या में मेले में लायी जाती हैं। इस मेले में सुदूर काबुल के घोड़े, उतर से लाये गये-दुंभा भेड़, पंजाब से अच्छे बैलों की जोड़ी तथा गायें बिक्री के लिए लायी जाती थीं। वर्तमान में मेला के दौरान उत्तम नस्ल के पशुओं को पुरस्कार प्रदान करने की परिपाटी है, तथा पशु दौड़ प्रतियोगिता में विजयी पशुओं को बिहार के राज्यपाल द्वारा पुरस्कार वितरण एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है। इस दौरान मेले में बड़ी संख्या में पशुओं की खरीद-बिक्री होती है।

हाथी पौराणिक गणेश आदर का पात्र तथा संपन्नता का प्रतीक माना जाता है। एक समय था जब धनी व्यक्ति अपने दरवाजे पर दुनिया को सिर्फ यह दिखाने के लिए हाथी अवश्य ही बांधता था कि उसके पास ऐसे साधन हैं जो अन्यान्य लोगों को नहीं। आज भी मेला क्षेत्र के कुछ धनी निवासी हाथी पालकर उस परम्परा को जीवित रखे हुए हैं। परन्तु आज के वैज्ञानिक माहौल में हाथी की सवारी के स्थान पर कार, जीप एवं मोटर साइकिल ने ले ली है। पर मेले में खरीद-बिक्री हेतु हाथियों का आना अब भी जारी है। नाम मात्र के ही सही, ऊंट भी आते हैं।

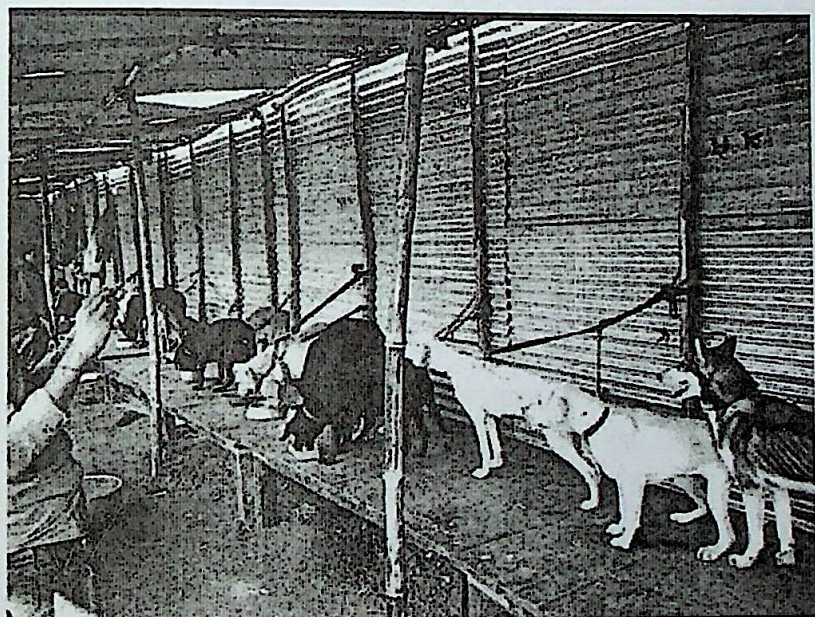
मेले में दूर-दराज से सर्वोत्तम दुधारू नस्ल की गायें, भैंस तथा कृषक के खेती उपयोग के बैलों के रंग-बिरंगे जोड़े सामंतों की शान एवं इन्द्र की सवारी का प्रतीक एरावत (हाथी), भावी कल्कि अवतार की सवारी घोड़े तथा रेगिस्तान की सवारी ऊंट भी देशी-विदेशी पर्यटकों को

146:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

आकर्षित करते हैं। अपने-अपने निर्धारित स्थानों पर पशुओं का मेला सज जाता है। चिड़ियां बाजारों में तोता, मैना, तीतर, बटेर, कबूतर, बुलबुल, बतक, गौर, चाइनिज मुर्गा, पहाड़ी सुग्गा, हंस इत्यादि तथा कुत्ता, खरगोश, काली बिल्ली, बन्दर, बनमानूस, लंगूर, विलायती चूहा, भालू, खच्चर और गदहे भी इस मेले में दिखाई पड़ते हैं। वन्य प्राणी संरक्षण कानूनों के कारण मोर वगैरह जब्ती के डर से कम आते हैं। यहां क्रय-विक्रय होने वाले पशु उत्तम नस्ल के होते हैं। एक-एक घोड़ा हजार तथा लाख रुपये तक में मिलते हैं। सबका अपना अपना रेट है।

इस मेले में अधिकाधिक पशुओं के क्रय-विक्रय, कृषि संसाधनों में वैज्ञानिक तरीके से संबंधित तरीकों की जानकारी स्थल होने के कारण ही कृषि मेला एवं पशु मेला माना जाता है। मेले में प्रतिवर्ष पशुपालन विभाग, बिहार पटना द्वारा पशुओं के नस्ल सुधार, चिकित्सा एवं रख-रखाव से संबंधित जानकारी के लिए विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं।

मेले में राज्यपाल भी ए.आर. किदवई के परिभ्रमण के दिन पशु-प्रतियोगिता का आयोजन तथा पुरस्कार वितरण कार्य होगा। इस वर्ष 20 नवम्बर को श्री किदवई द्वारा मेले का परिभ्रमण तथा पशु प्रदर्शनी



का निरीक्षण संपन्न होगा। गायों में संधिवाल, सिंघी गिरि, थरपाकर, भारती, जर्सी एवं फ्रीजियन नस्ल की होती है। मेले में भैंसों की नीली, रावी, नागपुरी, भदवारी एवं भुर्रा नस्ल प्रमुख हैं। उत्तर मध्य एवं दक्षिण बिहार की नस्लें भी पहुंचती हैं।

1993 के मेले में 100 हाथी, 2661 घोड़ा, 7 ऊंट, 4865 गाय, 48948 बैल, 3390 भैंस, 341 भेड़, बकरी, 6042 कुक्कुट जाति 3511 अन्य पशु-पक्षी तथा कुत्ता 227 आये थे। इस वर्ष 14 करोड़ 38लाख 87 हजार 950 रुपये की इन पशुओं की खरीद-बिक्री हुई थी। मेला में 28806 पशुओं का टीकाकरण किया गया था। इस वर्ष 71169 पशु-पक्षी मेला में आये, जो वर्ष 92 की तुलना में 1408 अधिक थे। जबकि वर्ष 92 में 86 हाथी, 1952 घोड़ा, 4 ऊंट, 3535 गाय, 37142 बैल, 1885 भैंस, 1571 बकरी, 173 भेड़ 6358 कुक्कुट जाति, 5742 अन्य पक्षी, 223 कुत्ता खरीद बिक्री हेतु आये। 16840 पशुओं की बिक्री हुई। इस वर्ष 34389 पशुओं का टीकाकरण किया गया।

1990 में मेले में 5 करोड़ रुपये के पशु-पक्षियों का क्रय-विक्रय हुआ। वैसे 1920 से वर्ष 50 तक सोनपुर मेले में घोड़े, टट्टू, गायें, भैंस, बैल, बाछी और हाथी काफी संख्या में पहुंचते थे। उसके बाद पशुओं की संख्या में काफी कमी होती चली जा रही है। अधिकृत सूत्रों के अनुसार वर्ष 1930-32 तक मेले में घोड़े और टट्टू की संख्या 7180, गायें 2030, भैंस 1510, बैल और बाछे 363300, हाथी 735, वर्ष 31 से 40 तक क्रमशः पशु 149 11621, 5.808, 289.78 और 1941 से 50 तक क्रमशः घोड़ा टट्टू 22,232, गायें 5604, भैंस 7305, बैल और बाछे 333000, हाथी 7042 तथा 1951 से 58 तक घोड़े और टट्टू, 3176, गायें 2607, भैंस 2764, बैल और बाछे 201044 एवं हाथी 1970 पहुंचे।

1991 के मेला उद्घाटन के दौरान मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव द्वारा पशुपालकों को व्यापक राहत देने की घोषणा के अन्तर्गत लोअर बैलहट्टा क्षेत्र की बंदोबस्ती जिला प्रशासन ने कर दी। परिणामस्वरूप दैनिक आज ने अपने वर्ष 92 के नवम्बर के अंक में मुख्यमंत्री का ध्यान उनकी घोषणा की ओर दिलाया। फलतः उस वर्ष के बैलहट्टा

148:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

जमीन की बंदोबस्ती की राशि 1 लाख 36 हजार 750 रुपये बंदोबस्तदार को वापस देना पड़ा। लोअर बैलहट्टा सरकार द्वारा देकेदारों को बंदोबस्ती नहीं करने से छपरा, सिवान, गोपालगंज एवं पटना जिले के पशुपालकों को राहत की सांस लेने का अवसर प्राप्त हुआ और लोअर बैलहट्टा क्षेत्र एक बेहतर बैल बाजार के रूप में आज मौजूद है। मही नदी किनारे सबलपुर से राहर दियारा तक इस बाजार में जो पशु बिक्रेता क्रया या बिक्रय हेतु आते हैं उन्हें नदी किनारे के कारण सुविधा रहती है। प्रशासन की तमाम घोषणाओं के बावजूद प्रत्येक वर्ष लोअर बैलहट्टा क्षेत्र में न पर्याप्त सफाई व ब्लिचिंग पाउडर का छिड़काव, न पर्याप्त सुरक्षा, संरक्षा ही दिखती है, जिससे इस पशु मेले की व्यापकता पर खतरा उत्पन्न हो सकता है।

—‘आज’, पटना,

18 नवम्बर, 1994



दोहरी भिड़ंत के बाद भगत सिंह ने हरिहर क्षेत्र केसरी का खिताब जीता

हरिहरक्षेत्र केसरी राष्ट्रीय कुश्ती दंगल के आज दूसरे और अंतिम दिन गुरु हनुमान अखाड़ा, दिल्ली के पहलवान भगत सिंह ने रेलवे गुरु विश्वम्भर अखाड़ा, दिल्ली के पहलवान योगेन्द्र को सात मिनट के अंदर 3-1 के अंतर से पराजित कर फाइनल मुकाबला जीत लिया। परन्तु दर्शकों के शोर-शराबे पर पुनः दोनों पहलवानों को अखाड़े में भिड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस बार तीन मिनट के अंदर ही भगत सिंह ने योगेन्द्र को चित कर 'हरिहर क्षेत्र केसरी' का खिताब जीत लिया। उन्हें राज्य के ग्रामीण विकास मंत्री अवध बिहारी चौधरी ने यामाहा मोटरसाईकिल पुरस्कार स्वरूप प्रदान कर सम्मानित किया। एक अन्य मुकाबले में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पहलवान मास्टर चंदगीराम की पुत्री कुमारी सोनिका कालीरमण ने वन्दना, दिल्ली को तीन मिनट के अंदर चित कर विजय हासिल की।

जिला परिषदीय डाकबंगला, सोनपुर में आयोजित फाइनल कुश्ती-दंगल का उद्घाटन नगर विकास राज्य मंत्री उदित राय ने किया तथा समारोह को राजद सांसद डॉ. हीरालाल राय एवं विधायक राज कुमार राय ने भी संबोधित किया। फाइनल कुश्ती-दंगल से पूर्व सेमीफाइनल मुकाबला मास्टर चंदगीराम के पुत्र पहलवान जगदीश काली रमण तथा योगेन्द्र दिल्ली के बीच शुरू हुआ परन्तु प्रथम तीस सेंकडे के अंदर ही घुटने में चोट लगने से जगदीश कालीचरण को कुश्ती के फाइनल मुकाबले से बाहर हो जाना पड़ा तथा योगेन्द्र को वॉक-ओवर मिला। सेमीफाइनल की दूसरी कुश्ती गुरु हनुमान अखाड़े दिल्ली के भगत सिंह तथा भीम सिंह के साथ शुरू हुई परन्तु एक अखाड़े के होने

150:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

के कारण भीम सिंह कुश्ती से बाहर हो गये तथा फाइनल मुकाबला भगत सिंह तथा योगेन्द्र के बीच हुआ।

आज महिला पहलवान में सोनिया कालीरमण के अतिरिक्त पुण्या, दिल्ली तथा राजबाला, दिल्ली के बीच भी कुश्ती हुई। महज एक मिनट के अंतराल में ही राजबाला ने पुष्पा को चित्त कर दिया। वहीं सुनिता तथा वंदना के बीच संपन्न कुश्ती-दंगल के अंकों के आधार पर सुनिता की जीत हुई। इस मौके पर सारण रेंज के डीआईजी सी.आर. कासवान, मास्टर चंदगीराम की पत्नी लालमती देवी सहित देश के दस पहलवानों को चादर भेंटकर सम्मानित किया गया। इन पहलवानों में एशिया चैम्पियन रामाश्रय पहलवान, पन्नालाल पहलवान, विश्वम्भर सिंह पहलवान, मोहन सिंह पहलवान, लाल राम पहलवान, मोहन पहलवान, करतार सिंह (आई.ए.एस.), शत्रुघ्न राय शामिल हैं। जबकि 'हरिहरक्षेत्र केसरी' के जन्मदाता सारण के डीआईजी सी.आर. कासवान तथा राजद सांसद डा. हीरालाल राय को चांदी की गदा भेंट कर सम्मानित किया गया। हरिहर क्षेत्र केसरी के विजेता भगत सिंह बीएसएफ के जवान हैं तथा तीसरी बार राष्ट्रीय दंगल का उन्होंने खिताब जीता है। पिछले वर्ष के 'हरिहरक्षेत्र केसरी' राकेश उर्फ लाला पहलवान सेमीफाइनल खेल में शामिल नहीं थे।

इसके अलावा आज क्षेत्रीय कुश्ती-दंगल का भी आयोजन हुआ जिसमें बक्सर के धर्मेन्द्र ने पटना के पंकज को महज 32 सेकेंड में चित्त कर दिया। जबकि गोरखपुर के चन्द्रशेखर ने बक्सर के मुन्ना को 45 सेकेंड में पराजित कर दिया। राघवेन्द्र, बक्सर ने राजकुमार, छपरा को 20 सेकेंड में लंगड़ी दांव मारकर चित्त कर दिया। दारोगा, बक्सर ने लल्लू, सोनपुर को हराया। दिल्ली के चिन्दू ने अवधेश, गोरखपुर को हराया। आज के मुख्य कुश्ती दंगल 'हरिहर केसरी' के फाइनल मुकाबले के रेफरी रामाश्रय पहलवान थे तथा जज मनोहर पहलवान। इस दिलचस्प मुकाबले को देखने के लिए हजारों की भीड़ अंत तक हुटी रही है।

—'आज', पटना, 12 नवम्बर, 1998



हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 151

हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला एक धार्मिक विरासत

गंगा-गंडक संगम तीर्थ पर प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर लगनेवाला हरिहरक्षेत्र का विश्वविख्यात मेला देश के अन्य भागों में लगने वाले मेले से भिन्न है। यह मेला एक तरफ पौराणिकता, ऐतिहासिकता एवं आधुनिकता का मिश्रित मिशाल है, तो दूसरी तरफ राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक धारा का ज्वलन्त प्रतीक भी। इस मेले की इन्हीं खूबियों एवं खासियतों के कारण भारत प्रसिद्ध सप्त धर्मक्षेत्रों में अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ। कुरुक्षेत्र, वाराह क्षेत्र, भृगु क्षेत्र, रेणुका क्षेत्र, पुरुषोत्तम क्षेत्र, प्रभास क्षेत्र तथा हरिहर क्षेत्र नामक सप्त धर्मक्षेत्रों को 'महाक्षेत्र' भी कहा गया है।

हरिहर क्षेत्र : जहाँ धर्म-अधर्म के बीच संघर्ष में धर्म ने जीत हासिल कर सत्य का मार्ग प्रशस्त किया वहीं हरिहर क्षेत्र में शैव और वैष्णव सम्प्रदायों के बीच व्याप्त कटुता, मतभिन्नता तथा संघर्ष में एक बूंद खून बहाये बिना परस्पर एकता का महामंत्र गूँजा था। हिन्दू धर्म की स्थापना का बीज मंत्र इसी साम्प्रदायिक सौहार्द के अन्दर आज भी स्पष्ट झलक रहा है। हिन्दू धर्म में पंथों, सम्प्रदायों का महामिलन अगर देखना है तो वह भी हरिहर क्षेत्र मेला तथा हरिहर क्षेत्र में ही देखने को मिलेगा। कबीर साहेब का निर्गुणवाद से 'मानव मोक्ष संस्थान' एक ओर जहाँ गूँज रहा है, वहीं उदासीनों का लोकसेवा आश्रम सेवा, सत्संग तथा संगीत का अनुपम उदाहरण है।

गंडक नदी किनारे साधु गाछी में श्री श्री 1008 मद्देद मार्ग

152:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

प्रतिष्ठप्रपन्नाचार्य विविध विरूदावली विभूषित श्री मद्विष्णुसेनाचार्य श्री त्रिदण्डी स्वामी जी महाराज के दिव्य मंगलानुशासन से 'श्री गजेन्द्र मोक्ष देव स्थान' का निर्माण भी हरिहरक्षेत्र मेले का कीर्तिस्तंभ है। श्री गजेन्द्र मोक्ष देवस्थान के अध्यक्ष स्वामी लक्ष्मणाचार्य ने बताया कि यह पूर्णतः दक्षिण भारतीय पद्धति से बन रहा है। भारतवर्ष में इसका स्थान 117वां है। इसके अतिरिक्त नाथ पंथियों के समाधि स्थलों से इस क्षेत्र की महिमा का निरंतर उद्घोष हो रहा है—मौन वाणी से। मेला में स्वामी दयानंद की वेद वाणी आर्यसमाज के मुख से वातावरण को वैदिक दुनियाँ का साहचर्य प्रदान करती है। गुरु नानक देव की वाणी भी यहां गुंजती रहती है।

ऋषि-मुनियों की साधना-स्थली होने के कारण हरिहर क्षेत्र संत-तीर्थ भी है। पुलहाश्रम-जड़भरत आश्रम, च्यवन सरोवर, चिड़ैयामठ, संत बाबा रामलखन दास का आश्रम, गोरखाई नाथ का आश्रम आदि हरिहर क्षेत्र तीर्थ यात्रियों के लिए पावन स्थल है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन तथा तीन दिन बाद तक साधुगाछी क्षेत्र में देश के विभिन्न सम्प्रदायों का भारी जमावड़ा, सत्संग, प्रवचन जारी रहता है। इस दौरान जड़भरत आश्रम, बैजलपुर से गंगा-गंडक संगम स्थल सबलपुर दियारा तक 'सत्यं शिवं, सुन्दरम्' का उद्घोष क्षेत्र की महत्ता सिद्ध कर देता है। डेढ़ सौ साल पूर्व गंगा गंडक संगम स्थल हाजीपुर एवं सोनपुर के मध्य कौनहारा एवं काली घाटों के पास था और उससे भी पूर्व समुद्रगुप्त के राज्यारोहण के समय यह संगम स्थल दिघवारा में मलखाचक तथा आमी ग्रामों के बीच कहीं था—वहाँ से हटकर सोनपुर चला आया, ऐसा कहा जाता है।

गजोद्धार क्षेत्र के रूप में हरिहर क्षेत्र को लोक मान्यता प्राप्त है। कौनहारा घाट, हाजीपुर, कालीघाट, सोनपुर, हरिहरनाथ, सोनपुर, गजेन्द्र मोक्ष स्मारक, सोनपुर में स्थापित प्रतिमाओं, च्यवन सरोवर से निकली गजेन्द्र मोक्ष प्रतिमा तथा गौरी शंकर मंदिर प्रांगण में स्थित 'विष्णु वाहन गरूड़' मंदिर इस क्षेत्र के गजेन्द्र-ग्रह युद्ध स्थल होने का ज्वलंत प्रतीक है। यही कारण है कि यहाँ हाथियों का विशाल मेला लगता है। भगवान दास वैष्णव के घर पर बैठक की थी। निकट ही भवानी-महेश्वर मंदिर

में एक अद्भुत तथा दुर्लभ शिवलिंग स्थापित है। जो एक मुखी है, और तांत्रिक उद्देश्य के लिए बनी मूर्तिशिल्प का विशिष्ट उदाहरण है। निकट ही भगवान श्री राम का एक ऊँचे टीले पर चरण चिह्न भी है। नेपाली मंदिर भी कौनहारा घाट की शोभा है।

आनन्द रामायण में हरिहर क्षेत्र तथा गंगा-गंडक संगम तीर्थ में भगवान राम तथा पारशक्ति श्री सीता द्वारा पुष्पक-विमान से तीर्थयात्रा का उल्लेख मिलता है। सरकारी दस्तावेजों के अनुसार बाबा हरिहरनाथ महादेव का मंदिर सोनपुर स्थित अकबरपुर मौजे में मही नदी के किनारे अवस्थित है। इस मंदिर के अन्दर भगवान श्री हरि (विष्णु) तथा हर (शिव) की क्रमशः खड़ी प्रतिमा तथा शिवलिंग एक जगह स्थापित है। ठीक सामने पूरब मंदिर से बाहर हनुमान जी का मंदिर स्थित है। मूर्ति संगमरमर की और सुन्दर है। सटे दक्षिण राधा-कृष्ण मंदिर भी है। लोक सेवा आश्रम के ठीक पीछे है बाबा हरिहरनाथ मंदिर से सटे पश्चिम बाबा विशालनाथ महादेव का मन्दिर। दो समाधि स्थल भी हैं। इस मन्दिर के पश्चिम नाथ पंथी बाबा बालानाथ की समाधि है। एक विशाल शिवलिंग भी है। जिस पर सर्प उत्कीर्ण है। इन्हें बाला नाथ महादेव के नाम से जाना जाता है। यहीं पर दुर्लभ शिव-पार्वती मंदिर भी है।

ठीक हाजीपुर के भवानी महेश्वर मन्दिर की तरह इस शिव लिंग में भी पार्वती जी की मुखाकृति उद्भूत है। चिड़ैयामठ में भगवान शंकर एवं पार्वती की मूर्ति भी हरिहर क्षेत्र मेला तीर्थ यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र है। सबलपुर में नाथ सम्प्रदाय के गोरखनाथ की समाधि गुफा भी है। कालीघाट, सोनपुर में महाकाली की प्रतिमा कलकत्ते की काली जी की याद करा देती है। खाकी चौक मंदिर का स्तंभ ऐतिहासिक शोध का विषय है तो गौरी-शंकर मंदिर में भगवान शंकर-पार्वती की 'काम मुद्रा' की मूर्ति तांत्रिकों, शैवों, शाक्तों एवं वैष्णवों की पावन पूजा-स्थल है।

वाराह पुराण के अनुसार गंगा-गंडक संगम तीर्थ के निकट स्थित हरिहर क्षेत्र में भगवान श्री विष्णु नदी वृषभ के नेतृत्व में गौओं को हांककर लाये थे। इसलिए यहां गायों का प्रसिद्ध मेला लगता है। बैल,

भैंस, बकरा, घोड़ा, कुक्कूट, कुत्ता, गदहा, चिड़ियाँ एवं हाथी के बाजार भी हरिहर क्षेत्र मेला में अपने-अपने निर्धारित स्थानों पर लगते हैं। यूँ कहिए कि यह एक पशु मेला नहीं बल्कि पशुधन सम्बद्धन संस्कृति का केन्द्र है। गंगा-गंडक संगम क्षेत्र का एक नाम 'देवाट' भी है, क्योंकि यहां देवता लोग अटन करते हैं। इस संगम का एक नाम हंसतीर्थ भी है, जहां दो कौए परस्पर उड़ते हुए संगम के जल में गिर गए थे और दोनों ने हंस का रूप धारण कर लिया था। 'नारदीय महापुराण' के अनुसार इस संगम क्षेत्र का नाम गांडीव-तीर्थ भी है। महाभारत में वर्णित तीस अग्निगर्भा नदियों में तीन गंगा, गंडकी और मही यही एक जगह संगम करती है। हालांकि वर्तमान में मही नदी का जल स्रोत सूख चुका है। यहां से थोड़ी दूर हटकर सोन एवं पुनपुन भी प्रवाहित होती दिखाई पड़ती है।

बाबा हरिहरनाथ महादेव के नाम पर सोनपुर में लगनेवाले हरिहर क्षेत्र मेले का ऐतिहासिक विस्तार पहलेजा घाट से गंडक की धारा से हाजीपुर सोनपुर को एक दूसरे से विभाजित कर दिया। परिणामस्वरूप मेला अपने आधार स्थल सोनपुर स्थित बाबा हरिहरनाथ मंदिर एवं उसके आस-पास के क्षेत्रों तक संकीर्ण हो गया। पहलेजाघाट में गंगा नदी के किनारे स्नानघाट तथा सबलपुर गंगा-गंडक संगम स्थलों पर तो देवोत्थान से कार्तिक पूर्णिमा तक ही स्नान का मेला रहता है। कालान्तर में गंडक नदी से सोनपुर-हाजीपुर विभाजित होने के बाद मुस्लिम शासकों ने हरिहर क्षेत्र मेला हाजीपुर क्षेत्र में लगाने का प्रयास किया। अन्दर किला, बागमतली, बागमूसा, हथिसारगंज, घुड़दौड़ पोखर नाम इनके प्रतीक हैं। परन्तु, शासकों का प्रयास सफल नहीं हुआ और मेला का आधार स्थल गंडक पार सोनपुर में स्थित होने के कारण मेला यहीं लगता रहा। हालांकि, हरिहर क्षेत्र मेला का प्रभाव हाजीपुर में लगनेवाले चार दिवसीय कार्तिक पूर्णिमा मेला में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। कौनहारा घाट, बुटन घाट, कौशल्य घाट, सीढ़ी घाट, हजुरी मठ घाट, महेश्वर घाट, उचांगल घाट, (क्लब घाट), कदम घाट, पुल-घाट तथा बाला दास घाट जीवंत स्नान घाट हैं। वाराह पुराण में भगवान शंकर ने कहा है कि 'गंडकी तीर्थ

में स्नान करके जो मेरे लिंग का अर्चन करता है, वह सम्यक प्रकार से योगफल प्राप्त करता है—

“स्नात्वाडत्र गंडकीतीर्थे मम लिंगानि योऽर्चयेत्।

तस्य योगफलं सम्यग् भविष्यति न संशयः॥”

इस प्रकार उपर्युक्त कथ्यों तथा तथ्यों के आधार पर यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि हरिहर क्षेत्र एक धार्मिक विरासत के रूप में कालजयी स्थान प्राप्त किये हुये है।

—‘हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला-1998’, पत्रिका।



विविधा

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 157



शर्म नहीं सरकार को

जैन तीर्थंकर महावीर की जन्म भूमि क्षत्रिय कुण्डग्रामी (बसुकुण्ड) आज अपनी बदहाली पर आठ-आठ आंसू बहा रहा है। बिहार सरकार के द्वारा लगातार उपेक्षा के कारण वैशाली एवं मुजफ्फरपुर जिला प्रशासन ने महावीर जन्मभूमि स्मारक शिलान्यास स्थल की ओर अब ताक-झांक करना तक बंद कर दिया है जिसके कारण बसुकुण्ड आज भी विकास की रोशनी से कोसो दूर है।

वैशाली गढ़ से वैशाली अशोक स्तंभ कोल्हुआ जानेवाली मुख्य एन.एच. सड़क से एक दूसरी सड़क फूटकर अभुचौक होते हुए महावीर स्वामी की जन्मभूमि बासुकुण्ड की ओर जाती है। इस सड़क की संकीर्णता को देखने से ही पता चल जाता है कि बिहार सरकार महावीर स्वामी की जन्मभूमि के प्रति उपेक्षा का भाव रखे हुए है। सड़क कई एक जगह क्षतिग्रस्त भी है, सड़क के चौड़ीकरण, पक्कीकरण एवं सौन्दर्यीकरण का मामला भी खटाई में पड़ा हुआ है।

जन्मभूमि-स्थल की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि इस पवित्र स्थल के निकट पर्यटकों के रख-रखाव और विश्राम की कोई व्यवस्था नहीं है। मुजफ्फरपुर जिला प्रशासन की तरफ से जलपान की एक दुकान तक की व्यवस्था नहीं की जा सकी है। स्थल का रख-रखाव भी बेहद दोषपूर्ण है। पर्यटकों के लिए इस स्थल पर शुद्ध पेयजल की व्यवस्था तक नदारद है। वर्तमान में जन्मभूमि क्षेत्र का सम्पूर्ण इलाका पारू विधानसभा क्षेत्र का भू-भाग है, जहां के विधायक मिथिलेश राय हैं। प्रत्येक वर्ष भगवान महावीर के जन्म कल्याण के दिवस पर होने वाले 'वैशाली महोत्सव' पर पर्यटन विभाग द्वारा भगवान

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 159

महावीर जन्मभूमि प्रशासनिक स्तर पर एक फूल के लिए तरस जाता है।

स्मारक-परिसर का संपूर्ण इलाका बकरियों का चारागाह बना हुआ है। स्मारक-स्थल पर पशु-मल की भरमार है। स्मारक-शिलापट्ट छावनी विहीन है। धूल-धूप एवं बरसात ने शिला पट्ट की चमक छीन ली है।

इस स्थल की चारों तरफ विरानगी छायी हुई है। शिला पट्ट को चतुर्दिक लोहे की जाली और जंजीरों से जकड़कर कभी सुरक्षित रखने के लिए घेरा गया था जिसे चोरों ने अपने काम का समझ कर हड़प लिया। शिलान्यास पट्ट के दक्षिणी एवं पश्चिमी भू-भाग का घेरा व जाली चोरी चली गयी। शिलान्यास-स्थल के निकट पहुंचने वाली ईट-सोलिंग सड़क की भी दुर्दशा देखने लायक है।

भगवान महावीर स्मारक भवन शिलान्यास स्थल पर 1956 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने स्मारक-भवन की नींव डाली थी। शिलान्यास के 43 वर्ष बाद भी बिहार सरकार अथवा पर्यटन विभाग द्वारा उक्त स्थल पर क्षेत्र की महिमा को स्थापित करने वाला एक स्मारक-भवन का निर्माण आज तक नहीं हो सका है। ध्यान रहे कि उक्त स्थल पर महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापना के साथ-साथ उनके जीवन-प्रसंगों के सचित्र वर्णन एवं उपदेशों के अंदर से सुसज्जित स्मारक का निर्माण करना था। तत्कालीन केन्द्र सरकार ने इस स्मारक निर्माण योजना के लिए पांच लाख रुपये की राशि भी स्वीकृति की थी। सरकार ने इस स्थल पर ग्रंथालय, खेल-मैदान एवं अन्य संबंधित व्यवस्थाओं की पूर्ति का भी वायदा किया था। वह वायदा आज तक पूरा नहीं किया जा सकता है।

लेकिन, जैन तीर्थंकर की जन्मभूमि स्मारक निर्माण के लिए स्थानीय निवासियों के योगदान को बिसराया नहीं जा सकता। इस संबंध में इब्राहिमपुर बसुकुण्ड निवासी एवं आरपीएस कॉलेज, जैतपुर, मुजफ्फरपुर के व्याख्याता योगेन्द्र सिंह ने बसुकुण्ड में ही स्पष्ट शब्दों में बताया कि इस क्षेत्र की उपेक्षा से बसुकुण्डवासी राज्य सरकार एवं पर्यटन विभाग से काफी नाराज हैं। उन्होंने बताया कि वैशाली और मुजफ्फरपुर की सीमा रेखा पर अवस्थित यह स्थान विश्व के तमाम जैन समुदाय के

लोगों का तीर्थस्थल है। जन्मभूमि पर उनके स्मारक-भवन निर्माण हेतु बसुकुण्ड एवं इब्राहिमपुर बसुकुण्ड के किसानों ने आज से 43 वर्ष पूर्व 52 कट्ठा, 2 धुर जमीन दान में दी थी। इनमें खुद योगेन्द्र सिंह के पितामह नथुनी सिंह ने 8 कट्ठा, महेन्द्र सिंह ने 5 कट्ठा 5 धुर, महावीर सिंह 10 कट्ठा जमीन दान स्वरूप प्रदान की थी, आज स्थिति यह है कि जमीन दाताओं का जिस 'नेम-प्लेट' पर नाम खुदा हुआ है, वह भी मिट चुका है।

इस क्षेत्र की सड़कों की दुर्दशा पर इब्राहिमपुर बसुकुण्ड निवासी मुसाफिर महतो का कहना है कि जन्म भूमि स्मारक शिलान्यास स्थल से सरैया जानेवाली मुख्य सड़क फिलहाल क्षतिगस्त है, उसका पुनः पक्कीकरण जरूरी है जबकि अबु चौक से शिलान्यास स्थल तक सड़क चौड़ीकरण एवं पक्कीकरण की आवश्यकता है।

—'प्रभात खबर', पटना,

14 दिसंबर, 2000



वाल्मीकि रामायण में भी है वैशाली का वर्णन

श्री वाल्मीकि रचित आर्ष रामायण आदि काव्य में वैशाली के प्राचीन इतिहास एवं उसकी महत्ता का वर्णन मिलता है। देश व विदेश के विद्वानों ने भी वैशाली की स्थापना पर प्रकाश डाला है। रामायण में कहा गया है कि पूर्वकाल में महाराज इक्ष्वाकु के एक परम धर्मात्मा पुत्र थे, जो विशाल नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका जन्म अलम्बुषा के गर्भ से हुआ था। उन्होंने इस स्थान पर विशाला नाम की पूरी बसायी थी। इससे पूर्व इस स्थान का नाम 'कुशप्लव' था, जहाँ देवराज इन्द्र ने दैत्यमाता दिति की परिचर्या की थी।

दिति के तपोवन के नाम से सुख्यात इसी 'कुशप्लव' में विशालपुरी की स्थापना हुई। आर्ष रामायण आदिकाव्य के बाल काण्ड में सैंतालीसवें सर्ग में मिथिला गमन के समय वैशाली के इतिहास के संबंध में जानने की इच्छा व्यक्त करने पर काकुत्स्थ भगवान श्री राम से गुरु विश्वामित्र ने कहा 'एष देशः स काकुत्स्थ महेन्द्राध्यषिपः पुरा। दिति यत्र तपः सिद्धामेवं परिवचार सः'। अर्थात् काकूत्थ! यही वह देश है, जहां पूर्वकाल में रहकर देवराज इन्द्र ने तपः सिद्ध दिति की परिचर्या की थी।

इसी वैशाली में जब इसका नाम 'कुशप्लव' था 'मारुत' नाम से प्रसिद्ध उनचास मस्तों की उत्पत्ति हुई थी। रामायण के अनुसार देवताओं और दैत्यों द्वारा क्षीर-समुद्र मंथन से अमृत की उत्पत्ति और उसकी प्राप्ति के लिए हुए देवासुर-संग्राम में इन्द्र व अन्य देवताओं की संयुक्त शक्ति द्वारा जब दैत्यों का संहार कर दिया गया तब दैत्यों की

माता दिति दुखी हुयी। उन्होंने अपने पति मरीचिनन्दन ऋषि कश्यप जी से इन्द्रहन्ता पुत्र की प्राप्ति के उद्देश्य से तप के लिये आज्ञा लेकर इसी 'कुशप्लव' नामक वन में तप करना शुरू किया।

अपनी मौसी दिति द्वारा इन्द्रहन्ता पुत्र की प्राप्ति के लिये तप करते देखकर देवराज इन्द्र ने 'कुशप्लव' में रहकर तपस्यारत दिति की परिचर्या की। इन्द्र ने परिचर्या के द्वारा ही एक दिन उन्हें अपवित्र अवस्था में पाकर उनके गर्भ के सात टुकड़े कर डाले। दिति के अनुनय पर इन्द्र ने टुकड़ों में विभक्त दिति के गर्भस्थ बालक को सात मरुदगणों के स्थानों का पालन करने वाले देवताओं की श्रेणी में शामिल कर लिया। इन्द्र की कृपा से जगत में इन्हें 'मारुत' नाम से प्रसिद्धि मिली। सात-सात के गण होने के कारण इनकी कुल संख्या उनचास हुई और सभी 'मरूत' कहलाये। इसकी राजधानी उसी के नाम पर स्थापित वैशाली नगरी में हुई और राज्य का नाम भी यही पड़ा। एफ.ई. पार्जियार नामक एक विदेशी विद्वान ने विचार से विदेह के पश्चिमी भाग के इस राज्य का संस्थापक मनुवैवस्वत का पुत्र नाभानेदिष्ट था और इस वंश में कुल तैंतीस राजाओं ने राज किया जिन में 'विशाल' चौबीसवां राजा था। ऐसा माना जाता है कि विदेह में जनक वंश के अन्तिम राजा 'कराल जनक' के समय में उसके अत्याचारों के कारण जब क्रांति हुई, तब वैशाली में गणतंत्र की स्थापना हुई। स्थापना की यह तिथि लगभग 725 ई.पू. है। यह वैशाली गणतंत्र अपने गणतंत्रीय संविधान के लिए आज विश्व प्रसिद्ध है।

—'दैनिक जागरण', पटना,

12 मई, 2000



कलात्मक दृष्टि से विलक्षण है नेपाली छावनी शिव मंदिर

नेपाल-भारत के बीच सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है हाजीपुर स्थित नेपाली छावनी शिव मंदिर। हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेला तीर्थ यात्रियों का दल इस शिव मंदिर का दर्शन किये बिना नहीं लौट रहा। मंदिर की अद्भुत काष्ठ कला तीर्थ यात्रियों को आकृष्ट कर रहा है। रविवार को सैकड़ों की संख्या में नेपाली हिन्दु तीर्थ यात्रियों ने मंदिर की कलाकृतियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया और बाबा भोले नाथ के समक्ष मस्तक टेका।

नारायणी नदी के पूर्वी तट पर कौनहारा घाट स्थित है और इसी के किनारे पुरातत्व निदेशालय बिहार द्वारा संरक्षित यह पुरातात्विक धरोहर स्थित है। इस धरोहर की अद्भुत काष्ठ कला संपूर्ण भारत वर्ष में अद्वितीय है। नेपाल राज्य के भक्तपुर के तत्कालीन सूबेदार काजी हीरा लाल ने 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस मंदिर का निर्माण कराया था। कहते हैं कि तत्कालीन नेपाल के राणा के निर्देशन में पशुपति नाथ मंदिर के पुजारियों ने स्वयं आकर मंदिर के अंदर शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा की थी। गंडक घाटी सभ्यता उन्नयन परियोजना के महासचिव तेज प्रताप चौहान के अनुसार नेपाल की प्राचीन पैगोडा शैली में निर्मित इस मंदिर की राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान है।

यह मंदिर दो मंजिला है। निचले तल पर दोहरी दीवारों से घिरा गर्भ गृह है। जिसमें उपरोक्त शिव-लिंग प्रतिष्ठित है। गर्भ गृह के चारों तरफ बरामदा है, काष्ठ निर्मित प्रवेश द्वार है जिस पर गणेश, लक्ष्मी आदि के साथ-साथ पुष्प, पेड़ आदि की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। सूक्ष्म कलाकृतियां भी इन पर उत्कीर्ण हैं। गर्भ गृह की चारों तरफ ऊंची चहरदीवारी है। पूर्वाभिमुख प्रवेश द्वार है। ऊपरी तल में भी चारों ओर

164:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

एक-एक द्वार है जो लकड़ी का बना हुआ है। दोनों तलों के शीर्ष स्थान भाग से लगे हुए तिरछे छज्जे हैं जिनकी चौड़ाई क्रमशः 5.6 फीट और 7.5 फीट है। निचले तल का छज्जा 16 और ऊपरी तल का छज्जा 12 काष्ठ स्तंभों पर अवलंबित है। प्रत्येक स्तंभ पद देवी-देवताओं की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। मंदिर के सबसे ऊपरी भाग में धातु निर्मित कमल-पुष्प उलटकर रखा गया है जो भगवान भोले नाथ का प्रतीक है। मंदिर की अद्भुत काष्ठ कला संपूर्ण भारत वर्ष में अद्वितीय है। उल्लेखनीय है कि इस कला का प्रादुर्भाव मौर्य काल में हुआ था जिसका पूर्ण विकसित रूप नेपाल के पाटन और मटगांव के मंदिरों में देखा जा सकता है।

नेपाली मंदिर भटगांव के पांच पैगोडा मंदिर के ही समरूप हैं। छज्जों के नीचे लगी शहतीरों पर देवी-देवताओं की मूर्तियां के साथ-साथ मिथुन मूर्तियों को भी प्रदर्शित किया गया है। इन मिथुन मूर्तियों को उत्कीर्ण करने की शैली मध्य भारत में स्थित खुजराहों और उड़ीसा के कोणार्क मंदिर के मूर्ति शिल्प के समकक्ष है। इन मिथुन आकृतियों में कामसूत्र में वर्णित आसनों में से कुछ आसन अत्यंत ही सहज भाव से कबेर शाल के शहतीरों पर अंकित किये गये हैं। इनमें से एक विशेष उल्लेखनीय दृश्यांकन कामकेली में एक नारी का अपने शिशु को स्तन कराने का प्रसंग है जो कलात्मक एवं भावनात्मक दृष्टिकोण से विलक्षण एवं अप्रतिम है। काष्ठ स्तंभों पर उत्कीर्ण कलाकृतियों को दीमक ने भोजन बनाना शुरू कर दिया है। समय रहते अगर इसका रासायनिक उपचार पुरातत्व विभाग की देखरेख में आरंभ नहीं हुआ तो यह दुर्लभ कृति नष्ट हो जायेगी। यहां घटी चोरी की दो घटनाओं के बाद इसकी सुरक्षा संरक्षा के प्रति विभागीय जिम्मेवारी बढ़ गयी है। और इसके लिए विशेष सतर्कता की जरूरत महसूस की जा रही है।

—‘दैनिक जागरण’, पटना,

20 नवम्बर, 2006



वैशाली की अभिषेक पुष्करिणी का रहा है विस्मयकारी इतिहास

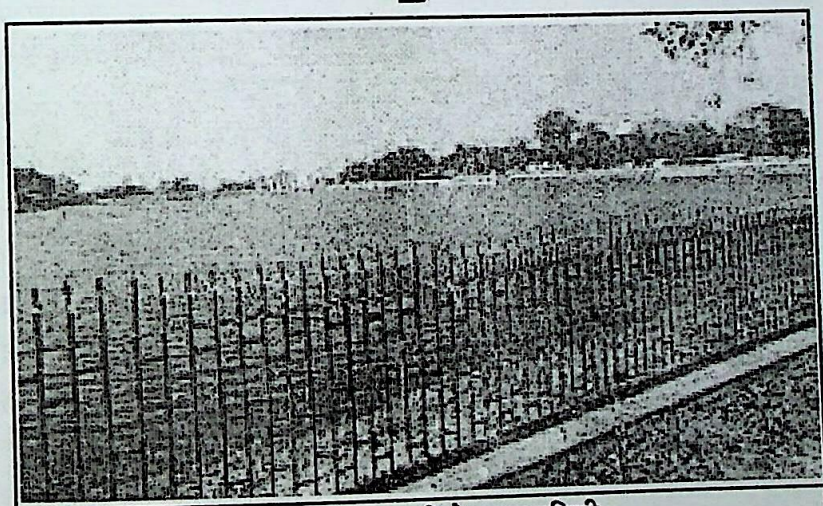
वैशाली गढ़ स्थित प्राचीन लिच्छवियों द्वारा स्थापित व निर्मित मंगल अभिषेक पुष्करिणी का विस्मयकारी इतिहास है। यह कभी लिच्छवियों के स्वाभिमान का प्रतीक हुआ करती थी। लोहे या तांबे के सख्त झिल्लीदार आवरणों से ढंकी रहने वाली इस पुष्करिणी की चारों तरफ तब बज्जियों की सेना की चुनी हुई टुकड़ियां सदा नंगी तलवार लिए पहरा दिया करती थी। यही वह पुष्करिणी है जहां लिच्छविगण संस्था के सदस्यों ने अंगुली में जल लेकर गणतंत्र रक्षा का महासंकल्प लिए जाने की परिपाटी विकसित की थी।

यह आज पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है परन्तु आवरण विहीन है। इतिहास बताता है कि वैशाली के सिंह सेनापति सहित 999 लिच्छवी गण संस्था के सदस्यों के शरीर की सुगंध इस पुष्करिणी में व्याप्त है। आचार्य चतुरसेन ने अपने प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपाख्यान वैशाली की नगर वधू में कहा है कि यही वह स्थल था जहां वैशाली जनपद के धिक्कृत कानून को शपथ द्वारा अम्बपाली ने अंगीकार किया था। इस पुष्करिणी में डुबकी लगाने का सौभाग्य किसी गैर लिच्छवी को प्राप्त नहीं हो सका। 1957-58 ई. में डा. ए.एस. अल्तेकर ने काशी प्रसाद जायसवाल रिसर्च इंस्टीट्यूट की ओर से खरोना पोखर या अभिषेक पुष्करिणी की खुदाई करायी थी। इस उत्खनन से यह जानकारी मिली कि इस पुष्करिणी की चारों तरफ ईंट की दीवार थी। इस पुष्करिणी के संदर्भ में इतिहासकारों ने लिखा है कि छोटी होने पर भी यह पुष्करिणी बड़ी स्वच्छ और सुंदर थी। उसके चारों तरफ घाट बने थे। जल में नाना वर्ण के कमल खिले हुए थे। बरसात में पानी बदल दिया जाता था। शाम

166:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

के वक्त पुष्करिणी में मछलियों की क्रीड़ा और कमल वन का सौंदर्य देखने के लिए बहुत से नर-नारी उसके तट पर जमा होते थे। जब कोई अभिषेक होता था तब पुष्करिणी के इर्दगिर्द तोरण वंदनवार लगाकर उसे सजाया जाता था। घाटों को भी सजाया जाता था। अभिषेक के दिन सारी वैशाली सजाई जाती थी। अपने शोधपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास सिंह सेनापति में महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है कि स्वयं सिंह कहता है कि यह अभिषेक पुष्करिणी उसके लिच्छवी पूर्वजों की प्राचीन पुष्करिणी है, जो उसी वक्त तैयार की गयी जबकि पहिले पहल वैशाली की बस्ती बसायी गयी थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग, कनिंघम, प्रो. अल्तेकर, डा. वासुदेव नारायण आदि ने इस पुष्करिणी को लिच्छवियों की मंगल अभिषेक पुष्करिणी के रूप में चिन्हित किया। डॉ. जगदीश चंद्र माथुर ने वैशाली में विद्वत गोष्ठी करके यहां प्रतिवर्ष भगवान महावीर के जन्म दिन पर वैशाली महोत्सव आरंभ किया। इसी परंपरा के तहत आज भी पुष्करिणी के जल से मंचासिक्त करने के बाद ही वैशाली महोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ होता है। सच कहिये तो इस पुष्करिणी का वृहत इतिहास है। वैशाली के सभी दर्शनीय एवं अधिकांश पुरातात्विक धरोहर इसी पुष्करिणी के इर्दगिर्द हैं।

—‘दैनिक जागरण’, पटना, 29 मार्च, 2010

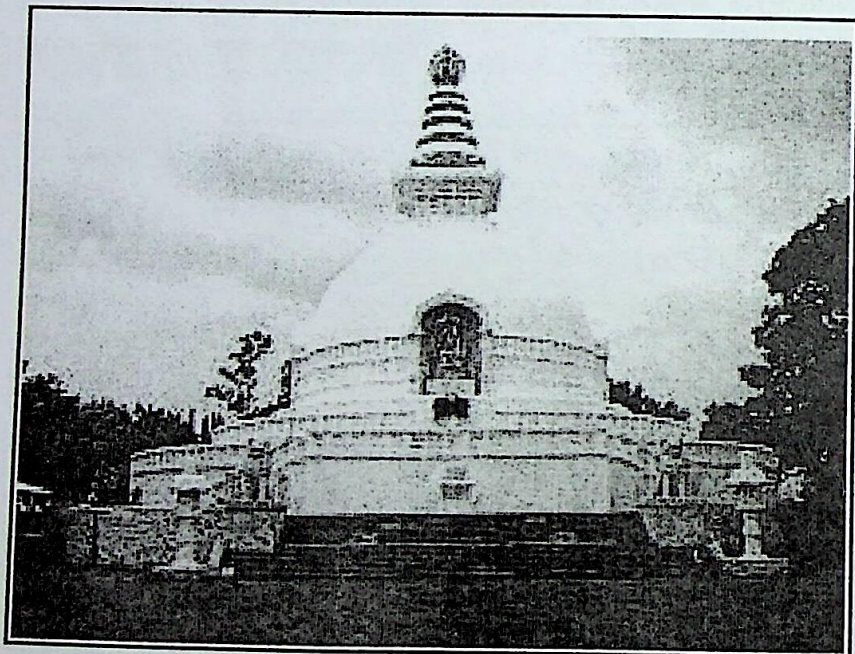


वैशाली स्थित अभिषेक पुष्करिणी

अमन का संदेश देता वैशाली का स्तूप

विश्व में फैले आतंकवाद से त्रस्त मानवता को निजात दिलाने के लिए संसार के अमन पसंद आम आवाम की बेचैनी के बीच जापान व भारत के बौद्ध उपासकों के सहयोग से निर्मित विश्व शांति स्तूप, वैशाली वर्तमान में 'बुद्ध' के रूप में विश्व को शांति का उपदेश देता आज भी आकर्षण का केन्द्र कना हुआ है। शांति यात्रा के इसी क्रम में जापानी बौद्ध भिक्षुओं ने बुद्ध की कर्मस्थली वैशाली का भी परिभ्रमण किया है।

द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम चरण में जापान के 'हिरोसिमा'



168:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

और 'नागासाकी' शहरों पर अमेरिका द्वारा हुए परमाणु विध्वंस की घटना से आतंकित मानवता को भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति से बचाने हेतु जापान के बौद्धभिक्षु निहिंदात्सु फूजीई गुरुजी ने समग्र विश्व में शांति स्तूपों का निर्माण कार्य का शुभारंभ किया था। वैशाली का विश्व शांति स्तूप उसी शृंखला की एक कड़ी है।

वैशाली स्थित शांति स्तूप का निर्माण भारत और जापान के उपासकों की सहायता से निम्पोजान म्योहोजी एवं बुद्ध बिहार सोसायटी ने संयुक्त रूप से किया है। करीब डेढ़ करोड़ की लागत से निर्मित इस स्तूप का शिलान्यास बिहार के तत्कालीन राज्यपाल ए.आर. किदवई के ने 20 अक्टूबर 1983 को किया था। इसकी नींव का निर्माण पटना के पाइलिंग इंजीनियर लिमिटेड द्वारा हुआ। अप्रैल 90 में इसका निर्माण कार्य शुरू हुआ और अक्टूबर 96 में जाकर शांति का प्रतीक यह स्तूप बनकर तैयार हो गया।

वर्ष 96 के 23 अप्रैल को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने वैशाली की इस विश्व शांति का अनावरण किया। गौतम बुद्ध के अवशेषों को स्तूप के नींव एवं कंगूरे पर सुशोभित किया गया है। स्तूप में स्थापित चारों बुद्ध मूर्ति तथा कोटा का निर्माण पूरी के सुदर्शन साहू (पद्मश्री) ने किया जो फाइवर से निर्मित तथा जो सोने से पालिश (गोल्ड प्लेटेड) की हुई है। शेर, प्रकाश स्तंभ तथा धर्म चक्रों का निर्माण पटना के लक्ष्मी पंडित ने किया।

यहां स्थित स्तूप की तकनीकी जानकारी (डाटा) जापान के डीएस ओहोका द्वारा किया गया जिसके अनुसार स्तूप की कुल लंबाई 38 मीटर (125 फीट), आधार का व्यास 36 मीटर (118 फीट) गुम्बद का व्यास 20 मीटर (65 फीट) है। इस विश्व शांति स्तूप की अहमियत आज संपूर्ण संसार को महसूस हो रहा है तभी तो दुनियां को आतंक की आग में झुलझाने वाले पाकिस्तान ने तक्षशिला बौद्ध स्तूप पहुंचे छह देशों के बौद्ध भिक्षुओं की सुरक्षा के न सिर्फ पर्याप्त साधन मुहैया कराये बल्कि भारत और पाकिस्तान के बीच व्याप्त तनाव को कम करने के उनके अभियान को सफल बनाने में बाधा बोर्डर तक साथ भी दिया।

जापनी बौद्ध संगठन के भिक्षु निप्पोजन म्योहोजी के नेतृत्व में बौद्ध भिक्षुओं के एक प्रतिनिधि मंडल ने 23 अक्टूबर को राजद संसदीय दल के नेता व वैशाली के सांसद डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह के साथ शांति स्तूप सहित ऐतिहासिक वैशाली गढ़ क्षेत्र का अवलोकन किया और बुद्धिस्ट सर्किट से जुड़े वैशाली के विकास कार्यों पर विचार विमर्श किया। वैशाली से लौटकर आये राजद नेता अवधेश सिंह ने कहा कि बुद्ध की कर्मभूमि आकर बौद्ध भिक्षुओं ने अपने आपको काफी गौरवान्वित महसूस किया।

—‘दैनिक जागरण’, पटना,

12 नवम्बर, 2002



महात्मा गांधी ने रेलवे ओवरब्रिज पर ही की थी सभा

छिहत्तर साल पहले महात्मा गांधी ने हाजीपुर रेलवे स्टेशन के पुराने ओवरब्रिज पर ऐतिहासिक सभा की थी। यह ओवरब्रिज आज भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र है। हालांकि इस बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है। दरअसल यहां बापू से जुड़ी कोई निशानी नहीं है। न तो ओवरब्रिज का नामकरण और न ही यहां उनकी कोई प्रतिमा।

1934 में गांधी जब पटना आये तो इसी दौरान उनका आगमन हाजीपुर रेलवे स्टेशन पर हुआ था। तब पुराने ओवरब्रिज पर उनकी अध्यक्षता में आयोजित सभा में बड़ी संख्या में रेलकर्मों एवं मजदूरों ने शिरकत की थी। इस सभा की दुर्लभ तस्वीर धरोहर की तरह संजोये वयोवृद्ध पत्रकार एवं गंडक घाटी सभ्यता शोध उन्नयन परियोजना के महासचिव तेज प्रताप चोहान बताते हैं—'सभा में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भी गांधी के एक सिपाही के रूप में उपस्थित थे। बाद में गांधी जी ने यंग इंडिया हाजीपुर की इस बैठक के संबंध में टिप्पणी करते हुए ब्यूटीफूल हाजीपुर लिखा था और हाजीपुर स्टेशन के कर्मचारियों द्वारा भूकंप पीड़ितों के सहायतार्थ प्रदत्त धनराशि एवं सुविधाओं के लिए उनको धन्यवाद ज्ञापित किया था।'

गांधी जी 14 मार्च 1934 को महेन्द्रू घाट (पटना) से स्टीमर द्वारा पहलेजा (सोनपुर) और वहां से ट्रेन से हाजीपुर पहुंचे थे। श्री चौहान के अनुसार हाजीपुर से मुंगेर जाने वाली ट्रेन के खुलने में 40 मिनट समय शेष था। दीपनारायण सिंह और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपनी सूझबूझ से इन 40 मिनटों के सदुपयोग की योजना नायी थी और इसी के तहत तुरंत रेलवे के ऊपरी पुल पर ही एक सभा का आयोजन कर

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 171

दिया गया। सभास्थल के ठीक पूरब दक्षिण कोण पर गांधी आश्रम अवस्थित है। 7 दिसम्बर 1920 को गांधी जी ने इस आश्रम एवं गांधी विद्यालय का शिलान्यास किया था। आश्रम में गांधी सहित अनेक शहीद स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमाएं स्थापित हो चुकी हैं।

—‘दैनिक जागरण’, पटना,
31 मार्च, 2010



एक जिद व जुनून खींच लाया बापू को

महात्मा गांधी के अनन्य सहयोगी रहे शुभई ग्राम निवासी क्रांतिकारी पंडित जयनंदन झा ने ऐतिहासिक गांधी आश्रम और इसमें राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की। स्वयं गांधी जी ने श्री झा को 'देश का प्रथम संत्याग्रही' कहकर सम्मानित किया था। यह आश्रम स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में क्रांतिकारियों की शरण-स्थली रहा। आश्रम, पोहियार के राष्ट्रीय विचारधारा वाले जमींदार चंद्रदीप नारायण सिंह की जिद और क्रांतिकारी पंडित जयनंदन झा के जुनून का मिश्रित प्रतिफल है। जिद और जुनून के इसी प्रबल प्रवाह ने महात्मा गांधी को हाजीपुर खींच लाया और उन्होंने अपने हाथों से इसका शिलान्यास किया।

तारीख थी 1920 का सात दिसम्बर। देश की दुर्दशा तथा पराधीनता की पीड़ा ने श्री झा को असहज कर दिया था। उन्होंने अपने कुछ सहयोगी शिक्षकों के साथ जीएचई हाईस्कूल (हाजीपुर) के शिक्षक पद की नौकरी छोड़ दी। असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। गांधीवादी राह का अनुशरण किया। गिरफ्तार हुए। जेल गये। उनका मुकदमा डा. राजेन्द्र प्रसाद ने गांधी जी की सलाह पर लड़ा। श्री झा रिहा हुए। विद्यालय से बाहर हुए शिक्षक एवं छात्रों के भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए श्री झा ने एक नये विद्यालय को खोलने की योजना बनायी। महात्मा गांधी ने ऐसे शिक्षकों व छात्रों के लिए राष्ट्रीय विद्यालय खोलकर उन्हें पठन-पाठन में लगाने का आह्वान किया। प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक मनमोहन ने 'वैशालिक' में लिखा है—'गांधी के आह्वान का असर झा जी पर हुआ। उन्होंने पोहियार के जमींदार चंद्रदीप नारायण सिंह से आश्रम की स्थापना

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 173

हेतु भूमि की याचना की। श्री सिंह ने श्री झा के समक्ष शर्त रखी थी कि आश्रम की स्थापना के लिए जमीन तभी देंगे, जब स्वयं आश्रम का शिलान्यास करने महात्मा गांधी आयेंगे।' राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हुई। तब से अब तक यह आश्रम अनेकानेक ऐतिहासिक, राजनीतिक व सामाजिक परिवर्तनों का गवाह रहा है।

आज यहां संग्रहालय, सभागार, पुस्तकालय व उन्नत उद्यान भी है, जिसे और भी संवारने की जरूरत है। गांधी आश्रम न्यास समिति के प्रतिनिधि के तौर पर तेज प्रताप चौहान बताते हैं कि गांधी आश्रम भित्तिहरवा आश्रम से भी पुराना है। पं. मोती लाल नेहरू, आचार्य कृपलानी, संपूर्णानंद, राम मनोहर लोहिया, पं. जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि ने भी इस आश्रम में आकर तत्कालीन राजसत्ता के खिलाफ कार्यवाहियों में भाग लिया था। शहीद बैकुंठ शुक्ल, योगेन्द्र शुक्ल, किशोरी प्रसन्न सिंह, चंद्रमा सिंह, बसावन सिंह, विन्देश्वरी प्रसाद वर्मा, रामदयालु सिंह, गुलाब चंद्र गुप्ता, शहीद रामवृक्ष ब्रह्मचारी, रामदेवी सिंह, सीता सिंह, सुनीती देवी, सरस्वती देवी, कृष्णा देवी, शारदा देवी आदि का तो यह क्रांतिकारी कार्यस्थल ही था। आश्रम का 7 दिसम्बर से गहरा ताल्लुक है। 1983 के 7 दिसम्बर को बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री दीपनारायण सिंह के निधन का गवाह भी गांधी आश्रम बना। 7 दिसम्बर को ही राज्यपाल डा. जाकिर हुसैन ने गांधी स्मारक पुस्तकालय का शिलान्यास किया था।

—'दैनिक जागरण', मुजफ्फरपुर,

04 अप्रैल, 2010



बिहार का अद्वितीय पर्व सूर्य षष्ठी व्रत

सूर्योपासना के साथ छठ-पूजा का अद्भुत समन्वय। यही है सूर्य षष्ठी व्रत। बिहारी आध्यात्मवादियों द्वारा देश को दिया गया एक अनूठा सांस्कृतिक रिसर्च। पूर्णतः आरोग्यवर्द्धक है यह चार दिवसीय पर्व। छुआछूत, भेद-भाव रहित चैतन्य दाता पर्व। पौराणिक काल से आज तक इसकी महत्ता एक समान बरकरार है। एक आदि देव हैं तो दूसरी मूल प्रकृति के छोटे अंश से उत्पन्न देवी षष्ठी। भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने के लिए देवी शक्तियों का अटूट मिलन।

जन्म के छोटे दिन नवजात शिशु और उसकी माता को प्रातःकालीन सूर्य की आनंददायिनी रश्मियों से स्नान की परिपाटी है। जच्चा-बच्चा को प्राकृतिक ऊर्जा की जरूरत के मुताबिक प्राप्ति। वैसे तो सम्पूर्णतः चराचर जगत ही होता है सूर्य की प्रत्येक गतिविधियों से प्रभावित व लाभान्वित। भला, इससे कोई कैसे इंकार कर सकता है। सूर्य से प्राप्त होने वाली यह ऊर्जा तनिक भी हानिकारक नहीं होती। चंचल चितवन वाले बाल अरूण भी नवजात बालक-बालिकाओं को जब निहारते हैं तो उसमें भी अपनी शक्ति का अंश भर देते हैं। यह शक्ति बाह्य एवं आंतरिक शत्रुओं से बालक को सुरक्षित रखता है और उसकी माता को निरोग।

अस्ताचलगामी सूर्य सत्य की अभिव्यक्ति है। इसकी सतरंगी किरणें साक्षात् 'आयुर्वेद' है। इनको पढ़ लिया तो जानो कि सम्पूर्ण औषधियों के सृजन एवं संहार से इनकी भूमिका अहम् है। सूर्य को अर्ध्य देती छठ व्रती महिलाओं को संध्याकालीन सूर्य की किरणें उनके

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 175

शरीर को पुष्ट करती है। काया को कंचन करती है। दृढ़ इच्छाशक्ति से परिपूर्ण करती है। चिरंतन सत्य का ज्ञान कराता यह अस्ताचलगामी सूर्य होने वाले बिहान का शुभ संदेश भी दे जाता है। 'अस्त' का भी अभिनन्दन यह बिहारी संस्कृति को अनुपम देन नहीं तो और क्या है? सृष्टि-चक्र की सुरक्षा का अद्वितीय शोध है। इसकी व्यापकता का क्या ठिकाना? हम 'उदय' का भी स्वागत करते हैं, सृष्टि उद्भव का प्रतीक मान कर। रात और दिन, जन्म-मृत्यु, सुख-दुख सब कुछ इसी में छिपा है जिसे हजारों लाखों साल पहले ही हमने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से जान लिया है।

पवित्रता में बेमिशाल है यह महापर्व। चार दिवसीय इस पर्व का शुभारंभ 'नहाय खाय' से होता है। पवित्रता और सावधानी इस पर्व की पहचान है। पर्व में प्रयोग आने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तुओं का व्रती 'अछूता' नाम से संबोधित करता है। कोई अपवित्र हाथ उसे छू न ले—इसका सदा ध्यान रखा जाता है। वर्तन एक 'अमनिया' रहता है। देवी षष्ठी का ही प्यार का नाम 'छठी मईया' है। चूल्हा, जलावन, गेहूं, सहित सम्पूर्ण सामग्री पवित्र। मिलावट के लिए कोई जगह नहीं। इस कारण यह पर्व हमें मिलावट विहीन जिंदगी जीने की भी प्रेरणा देता है। दूसरे दिन का पर्व 'खरना' कहा जाता है। चूल्हा पर खीर और रोटी बनती है। आराध्य को समर्पित करने के उपरांत व्रती स्वयं प्रसाद ग्रहण करते हैं और परिजनों एवं इष्ट मित्रों को भी खिलाते हैं। अन्न-जल त्याग व्रत यहीं से आरंभ हो जाता है।

कार्तिक शुक्ल षष्ठी की प्रातःकालीन बेला काफी उपयोगी है। पूजा में प्रयोग आनेवाले प्रसाद बनने आरंभ हो जाते हैं। गुड़ और गेहूं के आटे का मधुर मिश्रण गूंथ कर तैयार किया जाता है और फिर बननी शुरू हो जाती है 'ठकुआ'। इसे 'घी' या सरसों तेल से तला जाता है। देवी को सामर्थ्यानुसार केला, सेब, नारियल, संतरा, गागल, ईख, मुसम्बी, अनार, शकरकंद, मिश्रीकंद, सुथनी, आदी, मूली, नींबू, अरुई आदि ऋतु फल सहित मटर साही का चावल, हरी हल्दी, शरीफा, चकोतरा, अमरूद के साथ-साथ पान, फूल, सुपारी, आलता का पत्ता आदि भी चढ़ाया जाता है। आम की लकड़ी की खरीददारी की जाती है। प्रसाद

रखने के लिए सूप या पुपुली और दउरा या बांस की टोकरी पवित्र मानी जाती है। विचित्र पर्व है यह—कोई बंदिश नहीं। तालाब, नदी, सरोवर हो तो अच्छा और अगर घर के आँगन में ही पूजा करना है तो भी अच्छा।

संध्याकालीन अर्घ्य देने का समय हो या उदयाचल सूर्य को आराधना का, सम्पूर्ण पूजा क्षेत्र धूप-दीप व अगरबती की सुगंध से सुवासित हो उठता है। 'ॐ भास्कराय नमः' के साथ साथ छठी मईया के गीतों से माहौल पवित्र हो जाता है। व्रतियों की टोली में रंग-बिरंगे परिधानों से सजी-संवरी नवयुवतियों, नवविवाहितों एवं किशोरियों को देखती ही बनता है। सबके चेहरे पर एक सा पवित्र भाव। पटाखे भी छूटते हैं तो फुलझड़ियाँ भी नयनाभिराम दृश्य उपस्थित करती हैं। मन्नत मानने वाली महिलाएं घर से 'कोसी' भी भरती हैं। छठ पूजा स्थल पर भी कोसी भरा जाता है। सूर्यास्त से पूर्व सांध्यकालीन अर्घ्य की ही तरह व्रती महिलाएं पानी में जा खड़ी हो जाती हैं और उगते सूर्य को अर्घ्य प्रदान कर अपने व्रत की सफलता के लिए कृत-कृत होती हैं। अर्घ्य देने के बाद पूजा-स्थलों पर प्रसाद का वितरण होता है और तब व्रती घर लौटकर 'पारन' की विधि सम्पन्न करती हैं और इसी के साथ महा अनुष्ठान की समाप्ति हो जाती है।

—'हरिहर क्षेत्र' पत्रिका,
वर्ष-1, अंक-9, अक्टूबर, 2009



लोकमाता सप्तमातृ के सात स्वरूप

‘सात बहिनियाँ देवी मइया, मइया भैरोनाथ’ अर्थात् सात बहन देवी और उनका प्यारा दुलारा भैरो। यहीं सप्त मातृका, सप्त भगिनी हैं। माता आद्या शक्ति के सात स्वरूप। ग्राम से बाहर इसका स्थान है। स्थान के अन्दर मृत्तिका पिण्ड के रूप में प्रतिष्ठित। इन सात माताओं की शक्ति अपरम्पार है। मानव, महामानव, पशु-पक्षी हो या अन्यान्य जीव सभी नतमस्तक। हरिहर क्षेत्र की गंडक घाटी सभ्यता हो या प्राचीन सिंधु घाटी या वैदिक सभ्यता ‘मातृ’ की सत्ता व उनकी पूजा-उपासना हर जगह प्रधान। प्राचीन सुमेर, असीरिया, बबेलोनिया, यूनान, रोम भी ‘मातृ-पूजा’ से अछूता नहीं रहा। भारत तो मातृ-शक्ति का आराधक देश ही है। जिसने अपने राज्य-राष्ट्र को ‘भारत-माता’ के रूप में प्रथम नमन किया।

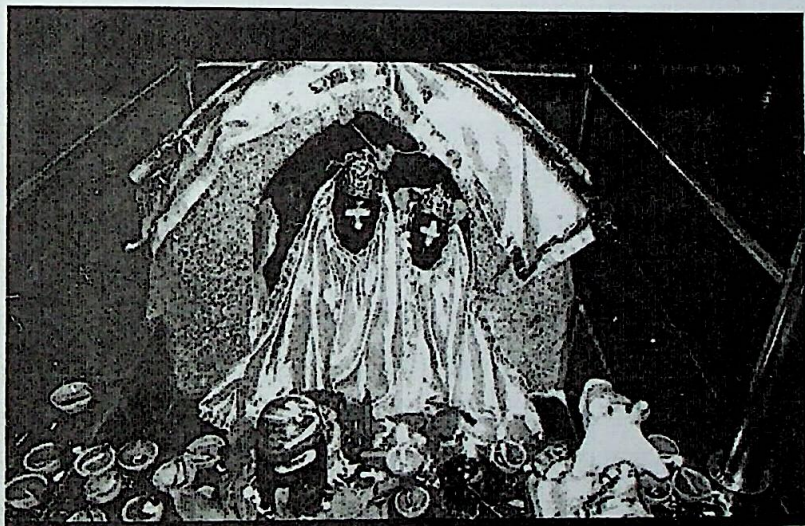
फारस से यूनान के निकट ईजियर सागर तक की प्राचीन सांस्कृति की सूक्ष्म विवेचना करने पर सार यही निकलता है कि यहाँ के प्राचीन निवासी ‘मातृ-पूजक’ थे। मुंगेर, बेबीलोनिया, असीरिया में देवी इस्तर, चीन में प्रकृति, पृथ्वी, यूनान में कला की देवी ‘एथेना’ स्वर्ग की देवी ‘हंस’, प्रेम और सौन्दर्य की देवी ‘एफ्रोडाइट’, रोम में स्त्रियों की संरक्षिका ‘जूनो’, ज्ञान की देवी ‘मिनर्वा’ आदि किसी न किसी रूप में मातृ उपासना से जुड़ी रहीं। वैदिक आर्यों में ‘प्रकृति-पूजा’ तो प्रचलित थी ही। साथ ही, वे श्री-देवी, भू-देवी, अदिति, उषा, सावित्री, इन्द्राणी की भी मातृ-भाव से पूजा करते चले आ रहे हैं। प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों की ग्राम देवी-देवताओं के रूप में भिन्न नामों से पूजा-अर्चना का विधान भी प्रचलित है जो माता की व्यापक सत्ता की

178:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

ओर ध्यान केन्द्रित कर रही है।

इतिहासकारों की मानें तो 'मातृ-सत्तात्मक समाज' भारतीय द्रविड़ और प्राक् आर्यसभ्यता की विशेषता थी और इस क्षेत्र से प्राप्त अवशेषों के आधार पर ऐसा अनुमान किया जाता है कि सौन्धव समाज मातृ प्रधान था। इन माताओं का देश-काल भेद से नाम व स्वरूप का अन्तर तो स्पष्ट झलकता है परन्तु कार्यों की साम्यता इनकी एकरूपता को उजागर करती है। मिट्टी की पिंडी के रूप में या प्रस्तर प्रतिमा के रूप में देवी हों—उनकी पूजा मातृ भाव से ही की जाती है। सप्त मातृकाओं में देवी माता शीतला का स्थान सर्वोपरि है। रोग मुक्ति की महान देवी मानी जाती है। इनकी बहनें भी रोग निवारक देवी हैं। नीम वृक्ष की डाली इनका झूला, माली परिवार इनका जन्मजात भक्त। आज की भाषा में कहें तो तापजनित कष्टकारक व्याधि चेचक को निर्मूल कर बीमार तन को शीतल करने वाली सात बहन शीतला माता है। इन सात बहनों को भवानी माता, महारानी माई, देवी माई, भगवती माई आदि सामूहिक नामों से भी पुकारा जाता है।

हर गाँव के बाहर भगवती और ब्रह्म का स्थान है। निकट ही भैरों नाथ की पिण्डी है। इन्हें भैरो बाबा भी कहा जाता है। ये सभी गाँव



आपरूपी गौरीशंकर मंदिर, सोनपुर

और नगर को आकस्मिक विपत्तियों से बचाते हैं। इन सात बहन देवियों में शीतला माई, बड़की माई, कलहकारिणी माई, बाइसी माई, पनसाहा माई, कोदआ माई, जगतारिणी माई है। इन्हीं का दूसरा क्रम है शीतला माई, कोदई माई, विधिन माई, रूधिर माई, बामती माई, मालत माई, सिरकटी माई। तृतीय क्रम में शीतला माई, फूलमती माई दीर्घवारिणी या डीहवारनी माई, सजनी माई, अंगारमती माई, महारानी विधिन, फुलमंती मइया शामिल हैं। चौथा क्रम भी लोक प्रसिद्ध है जिनमें महीमयो माई, कराति माई, काली माई, श्री-देवी, भू-देवी और लक्ष्मी देवी शामिल हैं। इन देवियों की मिट्टी की पिण्डी और प्रतिमा दोनों ही स्वरूपों से पूजा होती है। बज्जिका लोक-साहित्य हो या मिथिलांचल की लोकदेवी परम्परा सप्त मातृकाओं का स्थान सर्वोच्च है। मुनीश, बज्जिका लोक-साहित्य, पृ. 9 के अनुसार बज्जिकांचल की सप्त मातृकाओं में बुढ़िया मैया, जगतारन मैया, फुलमाता मैया, डीहवारनी शामिल हैं। वहीं लोकायत और लोक देवता डॉ. राम प्रवेश सिंह, मुजफ्फरपुर, 1986, पृ. 26 के अनुसार काली, भवानी, बामती, विधिन, कौमारी, ज्येष्ठा (बुढ़िया) तथा कनिष्ठा (शीतला) बज्जिकांचल की सप्त मातृका हैं।

मिथिलांचल की सप्त मातृकाओं की भी कई श्रेणी हैं। थारू लोकगीत, डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', विराट नगर, 1968, पृ. 38 में काली बन्नी (वाक् देवी), काली गौरैया (गौरैया वीर की आराध्या), काली लुकेस्मरी (लोकेश्वरी, बौद्ध जगत की), बघेस्सरी (वागेश्वरी), जलेस्सरी (जलेश्वरी, नदी मातृकाएं), तथा धनेस्सरी (धनेश्वरी, लक्ष्मी) की चर्चा मिथिलांचल की सप्त मातृकाओं में की गयी है। लोरिकाइत : एक अध्ययन, राजेश्वर झा, मिथिला मिहिर (पटना), 18 अगस्त, 1974 के अनुसार मिथिलांचल की सप्त मातृकाओं में ब्रह्ममाणी, चामुण्डा, नरसिंही, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी एवं वाराही शामिल हैं। हिमाचल प्रदेश की सप्त भंगिनी मंदिर तथा नर्मदा तटीय ओंकारेश्वर के निकट का सप्त मातृका मन्दिर में भी उपरोक्त देवियों का निवास है। उपरोक्त सप्त मातृकाओं की पूजा अपने-अपने क्षेत्र में शादी-विवाह आदि अवसरों पर सबसे पहले होती हैं। ऋग्वेद, 1/164/3 में सप्त भगिनी का वर्णन इस प्रकार है—सप्त स्वसाहो अभिसाहो अभिसंनवन्ते'। सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता

180:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

जॉन मार्शल मातृका पूजन को आर्येत्तर संस्कृति की देन मानते हैं।

भोजपुरी अंचल में शीतला देवी को अश्वारोही एवं मिथिलांचल में गर्दभवाहिनी कहा गया है। इनके हाथ में बाँसुरी तथा तीतर है। इनका प्रिय रंग लाल है। शीतला समेत सात बहनों की पूजा तो हर दिन होती है परन्तु आषाढ़-सावन माह में उनकी मुख्य पूजा भक्त (भगत) द्वारा सम्पादित की जाती हैं। देवी भगत की देह पर आती हैं। देवास में देवी का निरंतर गायन चलता रहता है। भगत खौलते दूध में हाथ डालकर प्रसाद स्वरूप तप्त दूध का छिड़काव भक्तों पर करता है। हवन से सम्पूर्ण वायुमण्डल सुगंधित हो उठता है। वैसे, हर जाति व वर्ग की अपनी-अपनी कुल देवी व आराध्या है, जिन पर अलग से लिखा जा सकता है। सप्त मातृका के सात स्वरूपों की अलग से विवेचना की जा सकती हैं जो सम्बन्धित आलेख में सम्भव नहीं है। बावजूद, कतिपय लोकप्रसिद्ध कुल देवियों का नाम उल्लेख भर कर रहा हूँ जिनमें बन्नी परमेश्वरी या बन्दी देवी, कालरात्रि या कराति देवी, महीमयी देवी या अम्बिका भवानी, नकटी देवी या महिषासुरमर्दिनी, अन्नपूर्णा, देवी शैलेश, कामख्या, विन्ध्याचल, चमर देवी, छिन्नमस्ता आदि शामिल हैं।

—‘हरिहर क्षेत्र’ पत्रिका,
वर्ष-1, अंक-6, अक्टूबर, 2009



गंगा-गंडक संगम तीर्थ की महिमा अपरम्पार

गंगा-गंडक तीर्थ की महिमा अपरम्पार है। वाराह पुराण (145/144) इस तीर्थ को पुण्यत्तम क्षेत्र के रूप में बखान करते हुए कहता है कि—

“आदौ सा गंडकी भागीरथ्या च सेगता।

तस्य तीर्थस्य महिमा ज्ञायते न सुरैरपि॥”

इसी संगम तीर्थ के नाम पर भारत प्रसिद्ध हरिहरनाथ क्षेत्र मेला सोनपुर में लगता आ रहा है। व्योम में व्याप्त रहने के कारण हिमालय पुत्री गंगा को ‘हर-जटाजूट-वासिनी’ कहा जाता है। ‘हर’ का एक नाम ‘व्योमकेश’ भी है। इसलिये, गंगा नदी को ‘हर’ का प्रतीक मानकर पूजा-अर्चना करने की शास्त्र-सम्मत मान्यता जगत् विख्यात है।

जबकि विष्णु (हरि) के गंड-प्रदेश से गिरे श्रम-बिंदुओं से गंडकी की उत्पत्ति होने अथवा भगवान नारायण (हरि) द्वारा पतिव्रता तुलसी को शाप देने के फलस्वरूप तुलसी ने नारायणी नदी के रूप में उत्पत्ति होने से भी गंडकी ‘हरि’ का प्रतीक मानी जाती है। बाबा हरिहरनाथ मंदिर स्थापना, हरिहरक्षेत्र तीर्थ तथा हरिहरक्षेत्र मेला की आध्यात्मिक प्रसिद्धि का साक्षात् प्रमाण इतिहासकारों के पास इससे बढ़कर दूसरा कोई नहीं है।

वर्तमान गंगा-गंडक संगम तीर्थ क्षेत्र में ही सोनपुर व हाजीपुर के तमाम गंगा-गंडक घाटों की अवस्थिति है। परन्तु, संगम का मूल स्थान सबलपुर (सोनपुर) ही है। इस कारण सबलपुर संगम स्थान की अपनी अलग महिमा है, जो प्रतिवर्ष श्रावण व कार्तिक मास में देश के विभिन्न भागों से आकर श्रद्धालु स्नान करते हैं। हालांकि, संगम-तीर्थ के मूल स्थान पर स्नान अज्ञानता के कारण सभी लोग नहीं कर पाते और

182:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

नारायणी में ही कालीघाट (सोनपुर) एवं कौनहाराघाट (हाजीपुर) स्नान कर वापस लौट जाते हैं।

नारदीय पुराण ने गंगा-स्थल को तीन भागों में विभक्त कर इसे गंगा-गर्भ, गंगा-तीर और गंगा-क्षेत्र के रूप में वर्णित किया है। भाद्रपद की कृष्ण चतुर्दशी को गंगा नदी का जल जहां तक पहुँचता है, उसे गंगा-गर्भ कहा जाता है। या, यह कहिए कि वर्षा ऋतु में जहां तक गंगा की बाढ़ चली जाती है, वहां तक गंगा-गर्भ कहलाता है। इस गंगा-गर्भ की सीमा से 150 हाथ तक की दूरी तक के भूमि-भाग को गंगा-तट कहा गया है। और इस तट-प्रदेश से दो कोस की दूरी तक की भूमि भाग को गंगा क्षेत्र माना जाता है।

वर्तमान में सोनपुर (सारण) और हाजीपुर (वैशाली) के क्रमशः कालीघाट व कौनहारा घाट से दक्षिण यह गंगा-गंडक संगम तीर्थस्थल सबलपुर पूर्वी पंचायत अन्तर्गत टोले कंकड़ा-चहारम के निकट अवस्थित है। हरिहरक्षेत्र मेला के अवसर पर सबलपुर संगम तीर्थ में भी पुलिस का एक थाना स्थापित होता है। बिहार की नदियां, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण में स्व. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' ने लिखा है, और बिहार हिन्दी ग्रन्थ के पृष्ठ 190 पर संगम स्थल सबलपुर का वर्णन मिलता है। इसमें लिखा है कि 'हाजीपुर से गंडक नदी अग्निकोण में स्वल्पाधिक पूर्व की ओर झुकती हुई बहती है। वस्तुतः गंगा-गंडक संगम क्षेत्र तो हाजीपुर के बाद ही आरंभ होता है, जो पाटलिपुत्र नगर के सामने पड़ता है। गंडकी की इस संगम-धारा के पास सारण जिले का अंतिम गांव 'सबलपुर' है। पिछले डेढ़ सौ वर्षों से वर्तमान स्थल पर ही संगम स्थल स्थित है।

स्व. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' ने इसी सर्वेक्षण पुस्तक में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि 'गंडक का प्राचीन संगम स्थान 'दिघवारा' के पास था। गंडक वहाँ बुद्धकाल में महीनदी के नाम से गंगा में संगम करती थी। देश के अनेक भागों में पवित्र नदियों के संगम-स्थलों का मेला लगने की प्राचीन परम्परा है। इस कारण हरिहरक्षेत्र मेला का विस्तार व विकास संगम-स्थल के गांव तक हो, इसका भी प्रयास होना चाहिये। पाटलिपुत्र की तरफ से संगम स्नानार्थी रानीघाट व अण्टाघाट,

पटना से नौका द्वारा सबलपुर सुखदेवघाट उतरते हैं, और वहां से पैदल संगम स्थल पर पहुँच कर स्नान करने के बाद संगम के जल से बाबा हरिहर नाथ का जलाभिषेक करते हैं। इसी तरह सोनपुर की तरफ से संगम-स्थल पहुँचने के दो सरल व सुगम रास्ते हैं। एक, पूर्वमध्य रेलवे के सोनपुर मंडल कार्यालय व मंडल चिकित्सालय के मध्य से राहर दियारा-नजरमीरा होते हुए सबलपुर पछेयारी पंचायत होते हुए पहुँचती है तो दूसरा, बाबा हरिहरनाथ मंदिर व कालीघाट के मध्य से होते हुए दक्षिण तरफ यह सड़क सबलपुर पूर्वी पंचायत के संगम-स्थल तक ले जाती है। वस्तुतः संगम स्थल का सही आध्यात्मिक अनुष्ठान वही पूर्ण कर पाता है जो संगम-स्थान का सच्चा मर्मज्ञ है।

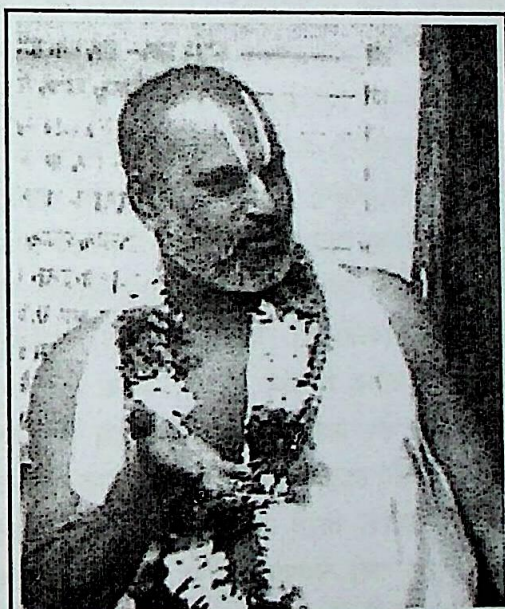
—‘सोनपुर मेला-2003’, पत्रिका।



आगम ग्रंथों में मिलता है दिव्यदेशों के निर्माण का वर्णन

भगवान श्री विष्णु के अवतार स्थलों तथा संनिधान स्थलों को दिव्य देश के नाम से संबोधित किया जाता है। दिव्यदेशों की गणना नित्य विभूति से आरंभ होती है और उन स्थलों तक पहुंचती है, जहां भगवान के दिव्य अर्चा-विग्रह विराजमान हो। भगवान प्रकट हुआ करते हैं व्यूह, विभव, अथवा अर्चा रूप में। तीनों ही प्रकारों में नित्य विभूति का स्थिर-साहचर्य रहता है। आलवार संतों की दिव्य सुक्तियों के अनुशीलन करने पर 108 दिव्यांशों की चर्चा मिलती है। वैसे दिव्यदेशों की संख्या अधिक हो सकती है परन्तु उनकी गणना 108 के अन्तर्गत ही मानी जाती है। इस कारण हरिहरक्षेत्र सोनपुर में प्राचीन गंगा-गंडक संगम स्थल पर स्थित श्री गजेन्द्र मोक्ष देवस्थानम् दिव्य देश गणना के क्रम में 108वें स्थान पर है।

तीर्थांक (30वें



जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी लक्ष्मणाचार्य

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 185

वर्ष का विशेषांक) गीता प्रेस, गोरखपुर के 'अष्टोरशत-दिव्य देश' प्रकरण में आचार्य पीठाधिपति स्वामी श्रीराघवाचार्य जी कहते हैं कि 'दिव्यदेश' के निर्माण का वर्णन आगम ग्रन्थों में मिलता है। दिव्यदेश के निर्माण का कार्य प्रवेश-बलि से आरंभ होता है। इसके बाद वास्तुहोम होता है और कर्षण आदि कर्म होते हैं। फिर क्रमशः भूगर्भन्यास, प्रथमेष्टिका-स्थापन, प्रासाद-गर्भन्यास, अधिष्ठान-कल्पना, मूर्धेष्टिका-विधान, कलश स्थापन आदि कर्म होते हैं। 'योगिराज अनन्त श्री विभूषित जगदाचार्य श्री विष्नेकसेनाचार्य श्री त्रिदण्डी स्वामी जी महाराज के मंगलानुशासन में इस दिव्य देश का निर्माण जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी लक्ष्मणाचार्य जी द्वारा संपन्न हुआ। खास बात यह रही कि स्वयं श्री कांची प्रतिवादी भयंकर मठाधीश 1008 श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री निवासाचार्य (गादी स्वामी) ने दिव्य देश स्थापना समारोह की अध्यक्षता की। इससे हरिहरक्षेत्र सोनपुर की प्रतिष्ठा में वृद्धि और प्रगति हुई।

देवस्थानम् की दृष्टि से सच मानिये तो हरिहरक्षेत्र सोनपुर उत्तर भारत के तिरूपति के रूप में सुख्यात हो चुका है। भौतिक दृष्टि से श्रीगजेन्द्र मोक्ष देवस्थानम् को दो भागों में विभाजित किया गया है। एक प्रासाद और दूसरा विमान। भूमि से छतपर्यन्त भाग को प्रासाद और उसके ऊपर के भाग को विमान कहते हैं। इस प्रकार यहां निर्मित दिव्यदेश में क्रमशः उपपीठ, उसके ऊपर अधिष्ठान, उसके ऊपर उपानह, उसके ऊपर पाद, उसके ऊपर प्रस्तर, उसके ऊपर ग्रीवा और सबसे ऊपर शिखा है। यह एक तलवाले दिव्यदेश का वर्णन है, जो यहां पर वर्तमान है। जैसे-तैसे तल की संख्या बढ़ती जायेगी, वैसे ही इसके अंगों में भी वृद्धि हो सकती है। ग्यारह तल तक इसमें वृद्धि हो सकती है। प्रासाद के भीतर केन्द्र में गर्भ गृह है, उसके आगे अर्धमण्डप तथा मण्डप भी बना हुआ है। कहना न होगा कि इस दिव्यदेश निर्माण में ब्रह्माण्ड की कल्पना की जाती है तथा इसके केन्द्र में वैकुण्ठलोक की।

प्रवेश करते ही सर्वप्रथम नजर पड़ती है देवस्थानम् के सुन्दर राजगोपुरम् पर। वैष्णव मूर्तियों से सुशोभित यह राजगोमुख दर्शकों को रामांचित किये बिना नहीं रहता। उत्तराभिमुख राजगोपुरम् से अन्दर प्रवेश करने पर प्रथम दृष्टि करबद्ध व विशाल गरूड़ देव की मूर्ति पर पड़ती

है। उनके दर्शन मात्र से सम्पूर्ण थकावट, चिन्ता कोसों दूर भाग जाती है। मन पवित्र हो उठता है। आत्मा को शांति मिल जाती है। बलि पीठ का भी अपना आकर्षण है। इस स्थान की बाईं ओर से प्रशस्त जगमोहन पर चढ़ने की सीढ़ी है, जिसके दोनों तरफ गजमूर्तियां सुशोभित हैं। श्री गजेन्द्रमोक्ष भगवान सन्निधि के दक्षिण पार्श्व में श्री बैकुण्ठमोक्ष भगवान सन्निधि के दक्षिण पार्श्व में श्री बैकुण्ठवल्ली लक्ष्मी जी की सन्निधि है। जिसमें श्री देवी एवं श्रीभू-देवी का भी विग्रह स्थापित हैं। भगवान श्री गजेन्द्र मोक्ष के वामपार्श्व में स्थित सन्निधि में स्वामी रामानुजाचार्य, वरवर मुनि, शठकोप स्वामी एवं विष्णुचित्त स्वामी का भव्य स्वर्णम विग्रह स्थापित है। उत्सव विग्रह के रूप में भगवान की अतिमोहनी प्रतिमा है। आरती के समय भगवान को शिविकारूढ़ कराकर उत्सव किया जाता है। जगमोहन में ही दक्षिणाभिमुख प्रभु के सामने बद्धाञ्जलि मुद्रा में स्थित गरूड़देव के दर्शन होते हैं। लक्ष्मी सन्निधि और आलवर संतों की सन्निधि के मध्य श्री गजेन्द्र मोक्ष भगवान श्री बालाजी वेंकटेश का प्रधान विग्रह स्थित है। द्वार पर जय-विजय नामक दो अवतारों की प्रतिमायें काले पत्थरों से निर्मित दृष्टिगोचर होती है।

राजगोपुरम में प्रवेश करते ही दाहिने तरफ जगद्गुरु लक्ष्मणाचार्य की बैठका के ऊपर 'यतिराज भवन' स्थित है। जगमोहन से पूर्व दिशा की ओर श्री गजेन्द्र मोक्ष 'वृद्धाश्रम' अवस्थित है जिसमें 16 कमरे हैं। इसी तरह 111 फीट लम्बा तथा 28 फीट चौड़ा 'गोशाला' भी आकर्षण का केन्द्र है। वहीं, 5 हजार स्क्वायर फीट में 'कल्याण-मंडपम्' का निर्माण किया गया है जो अपने आप में अनूठा है। और, पूर्व जाने पर श्री गजेन्द्र मोक्ष घाट अवस्थित है।

—'हरिहरक्षेत्र' पत्रिका, वर्ष-2, अंक-1,
जनवरी, 2010



सप्त धर्म क्षेत्रों में एक है हरिहरक्षेत्र

हरिहरक्षेत्र सोनपुर की भारत वर्ष के सप्त धर्मक्षेत्रों में गणना होती है। गीता प्रेस से प्रकाशित तीर्थांक विशेषांक समेत विभिन्न पुस्तकों में कुरुक्षेत्र, वराह क्षेत्र, पुरुषोत्तम क्षेत्र, भृगु क्षेत्र, रेणुका क्षेत्र के साथ-साथ हरिहरक्षेत्र का भी नाम उल्लेख किया गया है। कहीं-कहीं हरि क्षेत्र का भी उल्लेख है।

जब देश और दुनिया आतंकवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद व तमाम तरह के भ्रष्ट आचरण से आक्रांत और त्राहिमाम कर रहा है और मानवता शर्मसार हो रही है वैसे में बिहार की राजधानी पटना से सटे गंगा और मही नदियों के उत्तरी किनारे सोनपुर में अवस्थित बाबा हरिहरनाथ मंदिर राष्ट्रीय एकता व अखंडता के साथ-साथ विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश दे रहा है। कहना न होगा कि अपने लक्ष्य साधन में यह मंदिर शत-प्रतिशत सफल साबित हुआ है। यह एक ऐसा अनूठा मंदिर है, जिसमें आराधना करने वालों को कभी भी कुरीतियों का दंश झेलना नहीं पड़ा। इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता है कि कभी भी बूत या बूतपरस्तों के सामने न झुकने वाले मस्तकों को भी यहाँ झुकते देखा गया है। इस मंदिर और इसमें स्थापित मूर्तियों की अपनी विशेषता है। देश में वैसे तो विष्णु और शिव की संयुक्त मूर्ति तो कई हैं पर शेष छत्रधारी श्रीहरि की गोद में सामने शिवलिंग की उपस्थिति अलौकिक है। मंदिर के गर्भ गृह में श्रीहरि (विष्णु) और हर

188:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

(शिव) की स्थापना के सम्बंध में अनेक तर्क विकसित हैं। पर प्रमाण मौजूद नहीं है। ध्यान से देखा जाए तो ऐसे दृश्य हमारे सामने प्रमाण के रूप में मौजूद हैं जिससे हरिहरनाथ की एक साथ स्थापना को बल मिलता है। इन दृश्यों अथवा प्रमाणों से इस निर्णय पर पहुँचा जा सकता है कि हरिहर स्थापना का उद्देश्य धार्मिक, साम्प्रदायिक, पांथिक व सामाजिक एकता को मजबूत करना रहा है। यह सब राष्ट्र की एकता व अखंडता के लिए जरूरी था।

जब उत्तर और दक्षिण भारत साम्प्रदायिक मतभेदों के मकड़जाल में उलझ गया था-तब यहीं गंगा-गंडक की मिलन भूमि पर हरि और हर के अनुयायियों ने महासम्मेलन आयोजित कर परस्पर एकता का शंखनाद कर यही संदेश देने का काम किया कि वास्तव में हरि और हर उस एक ही परमात्मा के अलग-अलग स्वरूप हैं। सनातन हिन्दू धर्म के मूल स्वरूप हैं। इसी से मिलता-जुलता एक प्रमाण यह भी है कि हरिहरनाथ मंदिर की अवस्थिति गंगा-गंडक क्षेत्र में है। गंडकी का नारायणी नामकरण इस कारण हुआ कि भगवान श्रीविष्णु शालिग्राम पत्थर के रूप में निवास करते हैं और गर्भ निवास करने के कारण ही गंडकी नारायणी कही गई। और तब से हरि की प्रतीक बन गई। विष्णु से गंडकी की उत्पत्ति के अनेक कारण पुराणों में भरे पड़े हैं जिससे उनसे उनका जुड़ा होना पता चलता है। इसी तरह व्योम में व्याप्त रहने के कारण हिमालय पुत्री गंगा को 'हर जटाजुटवासिनी' कहा गया है। हर का एक नाम व्योमकेश भी है। जिनकी जटा में गंगा का निवास रहा है। इस कारण यहाँ गंगा हर के प्रतीक के रूप में जानी जाती हैं। और नारायणी और गंगा यहीं संगम करती हैं। हरि और हर की स्थापना का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी हो सकता है। संगम पर अवस्थिति होने के कारण हरिहरक्षेत्र और हरिहरनाथ मंदिर और उसमें स्थापित हरि और हर की महत्ता और भी बढ़ जाती है। सावन व भादो माह में गंगा और गंडक के संगम का जल जब उफनाता है तो बाबा हरिहरनाथ सड़क तक आकर उनका दर्शन कर वापस लौट जाता है।

गंगा-गंडक की इस मिलन भूमि में इस समय बाबा भोले कांवरियों का मेला लगा हुआ है। संगम के पावन जल में डुबकी और उसी जल से अभिषेक इस तथ्य को रेखांकित करता है कि हरिहरनाथ का सृष्टि के उद्भव और विकास में शिव लिंग और जल का बहुत बड़ा योगदान है। यही शिव तत्त्व जीवन दर्शन है। यह क्षेत्र शिव लिंगों और पर्याप्त भू-जल से आच्छादित है। भक्ति-भाव से जब हम मंदिर के गर्भगृह में नजर डालते हैं तो खूबसूरत नजारा देखने को मिलता है।

इस क्षेत्र की प्रसिद्धि की चर्चा आनन्द रामायण के यात्रा-काण्ड में मिलता है, जिसमें स्पष्ट लिखा है कि भगवान श्रीराम परिवार सहित यात्रा के क्रम में हरिहरक्षेत्र व गंगा-गंडक संगम क्षेत्र में ठहरे थे। देश के कोने-कोने से भक्ति भावना के साथ आने वाले तीर्थयात्रियों को बाबा हरिहरनाथ मन्दिर में आकर मानसिक शांति मिलती है। श्रावण और कार्तिक माह में तो यह मन्दिर हरिहर भक्तों के महासमागम का प्रत्यक्ष गवाह बन जाता है। इस मन्दिर के सटे इर्द-गिर्द हरि और हर की तमाम विभूतियों के दर्शन भी होते हैं। उनकी तमाम शक्तियों की उपस्थिति भी बाबा हरिहरनाथ के भक्तों पर आशीर्वाद बरसाती है। शिव शक्ति के रूप में दक्षिणेश्वरी काली अपने महाकालेश्वर शिव के साथ एक ही मंडप में कालीघाट पर विराजमान हैं तो आपरूपी गौरीशंकर मन्दिर में भगवान श्रीहरि गरुड़ पर सवार हैं और उनके साथ अगल-बगल में श्रीगणेश और हाथ में शिवलिंग धारण किए हुए देवी काली हरिहर भक्तों पर कृपा बरसा रही हैं। निकट ही शिव-पार्वती की अद्भुत व एक दूसरे में समाहित मूर्ति जग को सम्मोहित कर रही है। हरिहरनाथ मन्दिर समूह के मन्दिरों की शृंखला में अग्निगर्भा मही नदी किनारे शिव लिंगोद्भूत काली मूर्ति और चिरैया मठ स्थित बाबा विशालनाथ महादेव को कैसे याद नहीं किया जाए। इस लिंगोद्भूत उमा-महेश्वर मन्दिर पर दिशाओं के रक्षक देवताओं के चित्र उत्कीर्ण हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी हरिहरक्षेत्र सोनपुर के रक्षक देवता या दिकपाल हैं। यहाँ बाबा हरिहरनाथ का दर्शन-पूजन करने से पूर्व भक्तों का समूह हनुमान जी और राधा-कृष्ण जी का दर्शन करने का लाभ जरूर उठाता है। हरिहरक्षेत्र के ही पृष्ठभूमि के बैजलपुर के

190:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

जड़भरत स्थान के विष्णु शीर्ष और सबलपुर बभनटोली के शान्तिधाम स्थित संगमेश्वर महादेव का दर्शन-पूजन करने से भी लोग नहीं अघा रहे। यूं कहिए कि बाबा हरिहरनाथ मन्दिर की शोभा में इन मठ-मन्दिरों का उसी तरह स्थान है, जिस तरह शिव मस्तक पर चाँद का।

दैनिक आज(पटना),
13 अगस्त, 2018



साक्षात्कार

13

धर्म और उसकी आचरण-संहिता एक रामजन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष रामचन्द्र दास से बातचीत

1949 में श्रीरामजन्मभूमि की मुक्ति के लिए न्यायालय में मुकदमा दायर कर मुक्ति अभियान को इन्होंने संतों से मार्गदर्शन दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। पिछले दिनों महंत जी बिहार प्रदेश में अपनी जन्मभूमि सोनपुर अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत बरियारपुर-सिंहिलपुर आये। गोपालपुर-महदल्लीचक में 21 फरवरी से 28 फरवरी तक होनेवाले श्री महाविष्णु यज्ञ स्थल का मुआयना करने। वहाँ पर 'आज' प्रतिनिधि अवध किशोर शर्मा से उनकी लंबी बातचीत हुई। महंत जी देश की वर्तमान दशा एवं दिशा से चिंतित नजर आये और कहा कि नेहरु के स्थान पर पटेल प्रधानमंत्री बनते तो देश की यह दुर्दशा नहीं होती। उनकी नजर में जब विभाजित जर्मनी एक हो सकता है तो क्या अंग्रेजों की कूटनीति से अलग और खण्ड-खण्ड हुआ भारत एक क्यों नहीं हो सकता। प्रस्तुत है उनसे भेंट-वार्ता के अंश।

श्रीरामजन्मभूमि पर मंदिर निर्माण कार्य कब से आरंभ होगा?

मंदिर तो बना दिया है। पूजा-पाठ जारी है। श्रीराम मंदिर के निर्माण से जुड़े अभियंताओं का कहना है कि पत्थर तराशी के कार्य में तीन वर्ष या उससे कुछ अधिक समय लग सकता है। तराशी का कार्य संपन्न होते ही मंदिर भव्य आकार ग्रहण कर लेगा। मंदिर के 140 खंभे तैयार हैं। एक खंभा बनाने में तीन माह का समय लग रहा है। कार्यशाला मेरी जमीन पर है। पाँच मकान तथा भूमि दान में दे दी है। अखिल भारतीय दिगम्बर अखाड़ा (अनि) के अध्यक्ष होने के नाते अखाड़ों की तरफ से बिना चंदा के 1 करोड़ 1 लाख 1 हजार रुपये देने को कहा है। 9 करोड़ मूलधन है। जिसकी सूद से पत्थरों की तराशी का कार्य

192:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

चल रहा है। कार्य पूर्ण होते ही गाजे-बाजे एवं डंके की चोट पर मंदिर को भव्य रूप देंगे।

आरोप है कि आप न्यायालय को नहीं मानते?

न्यायालय को नहीं मानता यह बात निराधार है। सन 1949 से अब तक मैं श्रीराम जन्मभूमि मंदिर मुकदमें का वादी रहा हूँ। यही सबसे बड़ा प्रमाण है कि न्यायालय की इज्जत करता हूँ। जिन्होंने देश को कुर्सी के लिए तोड़ने का काम किया तथा कानून तथा कानून की धज्जियां उड़ायी वे ही मुझपर आरोप लगा रहे हैं कि मैं न्यायालय को नहीं मानता। मुल्लों के कहने पर शाहबानों मामले में कांग्रेस के ही युवा प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने उच्चतम न्यायालय के आदेश को संविधान बदलकर रद्द कर दिया। अगर कांग्रेस उच्चतम न्यायालय का निर्णय टुकराये तो अच्छी, और हम टुकरा दें तो अपराधी। यदि स्वतंत्रता के बाद सरदार पटेल व डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने महमूद गजनवी द्वारा तोड़े गये सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण कराया तो एक को लौहपुरुष कहा गया तो दूसरे को देशरत्न। वहीं कल्याण सिंह ने उत्तरप्रदेश में कार सेवकों पर गोली नहीं चलवायी तो उन्हें एक दिन की सजा और दो हजार रुपया जुर्माना की सजा हुई। लालकृष्ण आडवाणी ने मंदिर पर कार सेवा की तो साम्प्रदायिक हो गये। एक देश में दो कानून बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

अटल बिहारी बाजपेयी सरकार की मंदिर नीति अस्पष्ट क्यों है?

‘ कहने के लिए ही केंद्र और उत्तरप्रदेश में भाजपा की सरकार है। उसे अपना बहुमत नहीं है। दोनों ही जगह भाजपा की सरकारें बैसाखियों के सहारे टिकी है। इसलिए, विपरीत विचारधारा वाले अपने राजनीतिक सहयोगी दलों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर उसे चलना पड़ रहा है। अटल जी ने भी पिछले दिनों कहा है कि वार्ता के बल पर मंदिर मसला हल करेंगे। यह एक शुभ सूचना है। इससे पूर्व अटल बिहारी बाजपेयी को छोड़कर जितने भी कांग्रेसी या उससे ही निकले गैर भाजपाई प्रधानमंत्री हुए उन्होंने मंदिर निर्माण के मामले में मुझे बुलाकर बातचीत की। मंदिर निर्माण का आश्वासन दिया, परन्तु किसी ने मंदिर

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 193

नहीं बनाया। संतों सहित देश के करोड़ों हिन्दु धर्मावलम्बियों के साथ धोखा किया। परिणाम सामने है वे या तो हार गये या राजनीति की मार से मर खप गये। जहाँ तक बाजपेयी की बात है उनके हृदय में राम नाम कूट-कूट कर भरा है। परन्तु वे उसी तरह व्यक्त नहीं करते जिस प्रकार पतिव्रता नारी अपने पति से अगाध प्रेम तो करती है पर अपने होठों से उनका नाम उच्चारण नहीं करती। देश के संतों की अटल बिहारी बाजपेयी एवं भाजपा के प्रति आस्था है।

अगर न्यायालय का निर्णय पक्ष में नहीं हुआ?

न्यायालय के अभी तक के निर्णय हमारे पक्ष में ही रहे हैं। इसलिए उस पर अविश्वास का सवाल ही नहीं है। वैसे, न्यायालय के धर्म सम्मत निर्णय को ही मानूंगा। न्यायालय अथवा किसी सरकार के बल पर मन्दिर, मस्जिद या गिरजाघर नहीं बनाये जाते। न्यायालय यह कैसे निर्णय देगा कि रामजी यहीं जन्मे थे और हजरत बल में जो बाल है वह मोहम्मद साहब का बाल है। वस्तुतः यह आस्था का प्रश्न है। अयोध्या कहाँ है यह हमारे वेद, उपनिषद, धर्मग्रंथ तय करेंगे। मक्का कहाँ है यह कुरान बतायेगा। मुस्लिम आक्रमणकारियों ने बहुत मंदिरों को भूमिदोज किया। परन्तु हम आज मुसलमानों से न जामा मस्जिद और न ही अजमेर शरीफ का दरगाह मांग रहे हैं। हम तो उनसे सिर्फ तीन अयोध्या, काशी एवं मथुरा की मांग कर रहे हैं। अगर वे अलग मस्जिद बनाते हैं तो कारसेवा के लिए तैयार हूँ। बशर्ते पुनः बाबरी मस्जिद का निर्माण न हो; बाबर आक्रमणकारी था, जबकि राम इस देश के राष्ट्र पुरुष। रामजन्मभूमि आंदोलन विशुद्ध राष्ट्रीयता का प्रश्न है। जिस तरह श्री रामलला की मूर्तियां प्रकट हुईं। भूमि समतलीकरण हुआ। पुलिस पहरों में राम लला का दर्शन-पूजन जारी है। इसी तरह भव्य मंदिर भी बन जायेगा।

मंदिर निर्माण प्रकरण से मुसलमान भयभीत हैं?

मुसलमानों को मुसलमानों से खतरा है, हिंदुओं से नहीं। मोहम्मद साहब के बनायी मस्जिदों को इराक में ढाह दिया गया-तब कहीं मुस्लिम जगत में उत्पात नहीं मचा। एक आक्रमणकारी द्वारा रामजन्म मन्दिर तोड़कर बनाया गया बाबरी मस्जिद को जब हमारे प्रचंड हिन्दू शक्ति ने ढाह दिया तो इसमें भयभीत होने का सवाल ही नहीं है।

194:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

वस्तुतः मस्जिद नहीं बल्कि मुसलमानों की 'महज जिद' है। हिन्दू तो कभी साम्प्रदायिक रहा ही नहीं। यह एक विचारधारा है। राष्ट्रीय एकता को जोड़नेवाली शक्ति है। अनेकता में एकता ही हिन्दू राष्ट्र की विशेषता है। उपासना के प्रश्न पर मुसलमानों से कोई मतभेद नहीं। इस देश में रहनेवाला सिक्ख, एक सिक्खपंथी हिन्दू है। मुसलमान मोहम्मदपंथी हिन्दू है। जैन जैनपंथी हिन्दू, ईसाई हिन्दू एवं बौद्ध बौद्ध पंथी हिन्दू हैं, पर मुसलमानों और ईसाइयों से यह अवश्य कहना चाहूंगा कि उपासना पद्धति आपकी जो भी हो पर आपकी इस देश के प्रति भावना एक हो। हिंदुओं का उदगम स्थल भारत भूमि है। मुसलमान मक्का को उदगम स्थान मानता है। ईसाई इसको अपनी भूमि नहीं मानता। जहाँ मुसलमान बहुमत में होता जाता है वहाँ द्विराष्ट्रवाद का सिद्धांत उपजने लगता है। जहाँ दो घर मुसलमान हैं और सौ घर हिन्दू वहाँ वे निर्विघ्न अजान देते हैं, त्योहार मनाते हैं, परन्तु जहाँ सौ घर मुसलमान और हिन्दू अल्पसंख्यक हैं वहाँ दशहरा का जुलूस भी निर्विघ्न नहीं निकल पाता। यह सब इस देश की सभ्यता-संस्कृति के प्रति उनके अलगाव का सूचक है।

संविधान धर्मनिरपेक्षता की वकालत करता है। फिर धर्म के प्रति इतना दुराग्रह क्यों?

पंथ निरपेक्षता ही भारतीय संविधान की विशेषता है। धर्म एक है। इसकी आचरण-सहिता एक है। धर्म अपने प्रति, अपने परिवार, समाज, ग्राम, जिला, प्रदेश, देश, विश्व एवं विश्व शांति के प्रति कर्तव्य निभाने का नाम ही धर्म है। पुरानी एवं नयी का समन्वय भी धर्म है। धर्म का काम जोड़ना है तोड़ना नहीं। विश्व कल्याण ही धर्म का उद्देश्य है। विश्व कल्याण की ही दृष्टि से सोनपुर प्रखंड के पश्चिमाखंड में नयागांव थाना अंतर्गत गोपालपुर-महदल्ली चक, पूर्व एलसीटी घाट पर गंगा नदी के पावन तट पर दिनांक 22 फरवरी 99 से 28 फरवरी 99 तक विशाल वसंतीय श्री महाविष्णु यज्ञ का आयोजन उनकी देख-रेख में होने जा रहा है। इस यज्ञ में पंडित श्री धरणीधर द्विवेदी (वेदाचार्य), युग तुलसी श्री रामभद्राचार्य जी महाराज, चित्रकूट, साध्वी सुश्री ऋतम्भरा, चंडीगढ़, साध्वी उमा श्री भारती, केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार, श्री अशोक सिंघल, कार्यकारी अध्यक्ष, (विश्व हिंदू परिषद), मानस कोकिल श्री

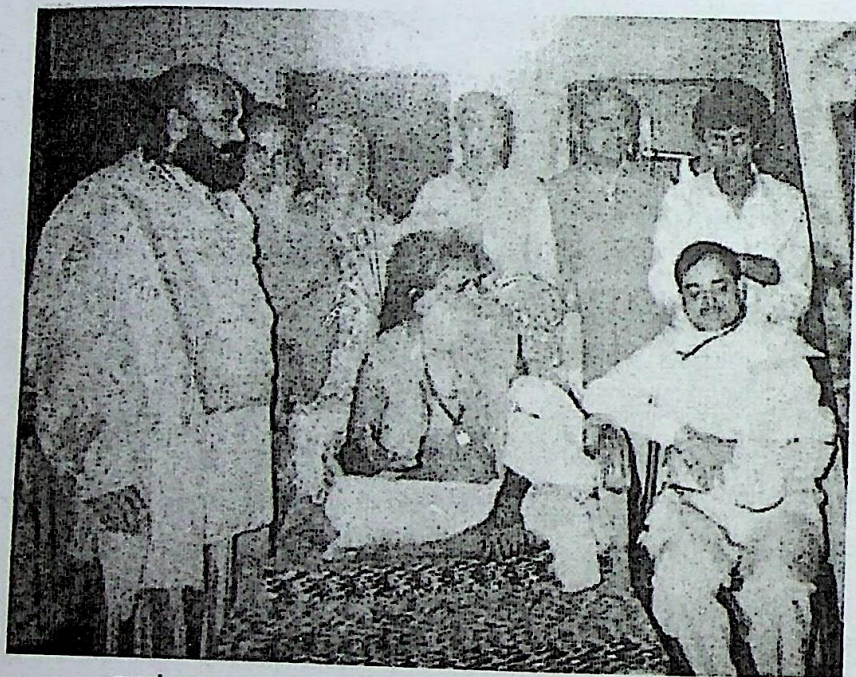
हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 195

रामदास जी महाराज, अयोध्या, श्री सदानन्द सरस्वती 'वेदांती जी' बनारस, आचार्य किशोर कुणाल, के.औ.सु. बल, पटना सहित भारत के कई विद्वान, संत-महात्माओं का प्रवचन-सत्संग होना तय है। यज्ञ अनादि काल से भारत की प्राचीन परंपरा रही है। यज्ञ की महिमा वेदों, उपनिषदों में वर्णित है। गोपालपुर-महदल्ली चक्र में उनका 61 वाँ यज्ञ है। उन्होंने देश में 108 यज्ञ कराने की प्रतिज्ञा की है।

देश की वर्तमान दुर्दशा का दायित्व किस पर है?

नेहरु के स्थान पर सरदार पटेल प्रधानमंत्री बनते तो देश की जो आज दुर्दशा है वह नहीं होती। अगर भाजपा मन्दिर के नाम पर राजनीति कर रही है तो मुलायम, लालू, वी.पी, मुस्लिम वोट की राजनीति नहीं कर रहे हैं। वस्तुतः जरूरी है आज भारत की एकता व अखंडता की। विभाजित जर्मनी एक हो सकता है तो क्या अंग्रेजों की कूटनीति से विभाजित हुआ भारत पुनः एक क्यों नहीं हो सकता।

—'आज'(पटना), 21 जनवरी, 1999



परमहंस रामचन्द्र दास आचार्य किशोर कुणाल, दुर्गेश शर्मा एवं अन्य

196:: हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला

अध्यात्म-ज्योतिष

14

थावे में विराज रहीं कामख्या का सिंहासिनी स्वरूप

‘या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः’ इस देवी सूक्त पाठ से ‘मां सिंहासिनी भवानी, थावे वाली’ का दरबार गूँज रहा है। एक ओर भजन-कीर्तन से माता का यशोगान अपने चर्मोत्कर्ष पर है तो दूसरी तरफ दर्शन मात्र की एक झलक के लिए भक्तों की अप्रत्याशित भीड़ उमड़ रही है। भक्तों के हाथ में प्रसाद भी है और आशीर्वाद के रूप में हाथ पर बंधा लाल-पीला कपड़ा और ललाट पर चंदन की झलक। धन्य है यह धरती जहां भक्त की पुकार पर माता को कामरूप ‘असम’ से आना पड़ा। परन्तु भक्त रहषु का शिरोच्छेदन कर ‘हस्त’ स्वरूप में प्रकट हुई। सिंहासन पर विराजमान होकर चरो राजा मनन सिंह सेन को भक्त रहषु के साथ ही परमपद प्रदान किया।

बिहार के गोपालगंज जिला मुख्यालय से महज 6 किलोमीटर दक्षिण की ओर गोपालगंज-सीवान मुख्य पथ के किनारे थावे जंगल में माता सिंहासिनी भवानी का प्रसिद्ध मंदिर अवस्थित है। स्वयं कामख्या पीठ की देवी कामख्या ने यहां अवतरित होकर जन-जन को यहां के आततायी राजा मनन सिंह के आतंक से मुक्ति दिलायी थी और मनन को मुक्ति प्रदान कर रहषु के साथ उन्हें भी सदा सर्वदा के लिए अमर कर दिया। असम के नील पर्वत पर अवस्थित कामख्या पीठ की गणना भारत वर्ष के 51 शक्ति पीठों में की जाती है। कहीं-कहीं यह संख्या 52 भी है। इसी कामख्या पीठ की आदि शक्ति कामख्या के परम भक्त थे गोविन्द नामक चर्मकार शिल्पी। देवी के रहस्यों का बोध होने के कारण ही उनका ‘रहषु’ नामकरण जगत् प्रसिद्ध हुआ। देवी के दूसरे

हरिहर क्षेत्र तीर्थ एवं मेला :: 197

भक्त यहां के चरो राजा मनन सिंह थे जिनका मानना था कि उनके जैसा दूसरा देवी भक्त और कोई है ही नहीं। निष्काम और सकाम भक्तों की अजब कहानी। रहषु को भगवती की उपासना की चाह और माता के चरणों में सम्पूर्ण समर्पण का भाव। वहीं राजा मनन सिंह को राज सत्ता और देवी भक्त होने और कहलाने का घमंड।

दैव-योग देखिये-आ ही गयी परीक्षा की घड़ी। मनन के राज में पड़ा घोर अकाल। जन-मानस में मच गया हाहाकार। अकाल से ग्रसित किसानों व नागरिकों को राजा से जब कोई सहायता नहीं मिली तो उसने देवी के परमभक्त रहषु स्वामी से इस घोर अकाल से मुक्ति के लिए याचना की। तब देवी शक्ति से रहषु ने चूहे द्वारा अगल-बगल के जंगली कतार (झुर) नामक घास को कटवाकर ढेर लंगवा दिया। जंगली बाघों को बुलाया। बाघों के गले में सांप रुप रस्सी का फंदा फंसाया। और 'झुर' की दौनी करवाया। यह देख सभी आश्चर्यचकित रह गये कि कतार के घासों की दौनी से चावल प्राप्त हो रहा है। उसी चावल के भात से देवी मां को भोग लगा और अकाल पीड़ित जनता की क्षुधा शांत हुई। जब यह खबर राजा को लगी तो उसने रहषु को बुलाकर देवी दर्शन कराने का हठ किया। राजा के हठ में रहषु को अनिष्ट होने का आभास हुआ। नहीं मानने पर उसने कहा 'महाराज मैं मां दुर्गा का दर्शन तो करा दूंगा, पर उसके बाद न तो आप जीवित रहेंगे। न आपका कुल और न ही आपका यह राजपाट ही सुरक्षित रहेगा।'

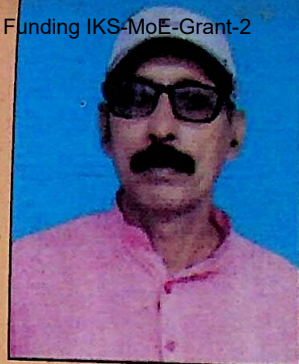
भक्ति की चरम पराकाष्ठा और मुक्ति का संयोग देखिए कि राजा मनन किसी भी परिस्थिति को सहन करने के लिए तैयार बैठे थे। एक ही चाह थी कि हर स्थिति में देवी दर्शन करें। परिणाम चाहे जो हो। उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं। आखिरकार भक्त रहषु ने समाधिस्थ होकर माता कामख्या का आह्वान किया। देखते ही देखते रहषु स्वामी का शिरोच्छेद कर कंगनयुक्त मां कामख्या देवी का हाथ बाहर निकल आया। राजा मनन के मन की इच्छा पूर्ण हुई। माता का साक्षात् दर्शन हुआ पर माता के इस भीषण स्वरूप का दर्शन करते ही उनके प्राण पखेरु उड़ गये। ठीक उसी वक्त भयंकर तूफान व आंधी-पानी आया जिसमें राजमहल ताश क पत्तों की तरह बिखर गया। रहषु स्वामी के सिर

से उदभूत देवी कामख्या राजा के सिंहासन पर जा बैठी। सिंहासन पर बैठने के कारण ही उनका नाम 'सिंहासिनी देवी' पड़ा।

अभी भी ध्वंस के अवशेष देखे जा सकते हैं। वर्ष 1804 में हुसैनपुर परौली (हथुआ राज) के महाराज चक्रधर शाही ने थावे में सिंहासिनी देवी का मंदिर का निर्माण तथा उनकी काली प्रस्तर की तीन फीट लंबी प्रतिमा स्थापित की। इस प्रतिमा की साम्यता विंध्याचल एवं कलकत्ता (काली कोट) की देवी मूर्तियों से की जाती है। लघु आकार का यह मंदिर पूर्व मुख का है किंतु इसका प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। मन्दिर के गर्भ गृह में मां सिंहासिनी विराजमान हैं। निकट ही समाधि स्थल पर रहषु स्वामी का मंदिर है। इस मंदिर में सांप से बंधे सात बाघों की दौनी करती प्रस्तर प्रतिमा भी आकर्षण का केंद्र है।

थावे के सिंहासिनी माता मंदिर के पुजारी सुरेश पांडेय का कहना है कि मां की पूरी भक्ति के साथ पूजा-अर्चना के साथ महाप्रसाद का वितरण किया जाता है। एक और गौर करने वाली बात यह है थावे की दुर्गा माता की कहानी कामरूप की देवी कामख्या की प्रसिद्ध कहानी से मिलती-जुलती प्रतीत होती है। चरो राजा मनन की तरह ही कामरूप प्रदेश के राजा नर नारायण ने कामख्या देवी मन्दिर के पुजारी व साधक 'केंदुकलाई' पर दबाव डालकर देवी को दिखाने के लिए दबाव डाला था। तब ब्राह्मण पुजारी 'केंदुकलाई' ने राजा को आरती करते समय मन्दिर की खिड़की की छेद से ताकने के लिए कहा। भगवती इससे क्रुद्ध हुई और साधक भक्त केंदुकलाई का शिरोच्छेद कर दिया तथा राजा को शाप दिया कि कोच राजवंश का कोई भी पुरुष कामख्या में आकर दर्शन करना तो दूर रहा, नीलांचल की ओर दृष्टिपात भी नहीं कर सकेगा। दृष्टिपात करने से ही उसका सिर कट जायेगा।





अवध किशोर शर्मा

जन्म : 15 नवंबर, 1964

जन्म स्थान : ग्राम-सबलपुर बभनटोली, पो.-
सोनपुर, जिला-सारण (उ. बिहार)।

शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिन्दी), एल.एल.बी.।

प्रारंभ में : आर्यावर्त, आज और दैनिक जागरण में लंबे समय तक संवाद प्रेषण। हिन्दुस्तान हिन्दी दैनिक, प्रभात खबर, अनुगामिनी और अन्य कई पत्र-पत्रिकाओं में दर्जनों ऐतिहासिक, धार्मिक व आध्यात्मिक आलेख प्रकाशित। हरिहर क्षेत्र मासिक पत्रिका से भी जुड़े रहे।

बाद में : लालू प्रसाद उच्च विद्यालय, सबलपुर, सोनपुर और बसावन शर्मा प्राथमिक विद्यालय, सबलपुर कुम्हरटोली में अध्यापन कार्य।

सम्मान : रामकृष्ण द्वारिका महाविद्यालय, लोहियानगर, पटना द्वारा 1983 के स्वतंत्रता दिवस समारोह में स्वरचित कविता 'सोया था शांत से' की उत्कृष्ट प्रस्तुति पर तत्कालीन प्राचार्य बी.डी. साह द्वारा सम्मानित।
सोनपुर की प्रथम एस.डी.ओ. उषा रानी सिंह एवं बाद के एस.डी.ओ. नंदजी राम द्वारा स्वतंत्रता दिवस समारोह में निष्पक्ष व मर्यादित पत्रकारिता के लिए पुरस्कृत।

संप्रति : राजकीय उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, सतई, हथुआ, गोपालगंज में सहायक शिक्षक।

मोबाइल : 9572529372



अभिधा प्रकाशन

E-mail : abhidhapublication@gmail.com